04 - सड़कों को मौत नहीं, जीवन का रास्ता बनाएं

05 - अधर्म के अंत और अटूट विश्वास का शंखनाद है नृसिंह अवतार

A Daily News Magazine

इंदौर

गुरुवार, 30 अप्रैल, 2026

06 - जन परिषद के उपाध्यक्ष एवं वरिष्ठ एडवोकेट अन्नी भैया...

07 - कलेक्टर ने लंबित आवेदनों की गहन समीक्षा की

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 207, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

प्रसंगवश

ईरान युद्ध ने भारत के लिए भावी जंग का खाका पेश कर दिया है

ले.जन. एच.एस. पनाग (रिटा.)

ईरान के खिलाफ अमेरिका-इजरायल की जंग में पिछले करीब एक महीने से रणनीतिक गतिरोध जैसी स्थिति बनी हुई है। इसमें एक-दूसरे को धमकियां देना, जबरन नाकाबंदी करना, और 11-12 अप्रैल को हुई अधूरी वार्ता शामिल हैं। इस युद्ध से भारत के लिए सबक क्या हैं?

रणनीतिक स्तर परः भारत, चीन और पाकिस्तान परमाणु हथियारों से लैस देश हैं और वे पूर्ण पैमाने वाले पारंपरिक युद्ध में निर्णायक हार या अपनी जमीन गंवाने के कारण अपने वजूद पर होने वाले खतरे से सुरक्षित हैं। इसलिए राष्ट्रहित का तकाजा यह होता है कि युद्ध को परमाणु युद्ध से नीचे के स्तर तक ही सीमित रखा जाए। पारंपरिक युद्ध के मामले में अपनी बढ़त रखने के कारण भारत पाकिस्तान के खिलाफ आक्रामक रुख के बूते उसे खौफ में रखता है।

चीन की श्रेष्ठता के कारण भारत उसके मामले में रक्षात्मक रुख रखता है या हतोत्साहित करने की रणनीति अपनाता है। चीन की सैन्य क्षमता अमेरिकी सैन्य क्षमता से उन्नीस ही है। भारत और पाकिस्तान मझोले और उच्च स्तर की टेक्नोलॉजी के मिश्रण पर आधारित सेना रखते हैं, जिसमें भारत ने बढ़त बना रखी है। ईरान का अनुभव चीन को भारत के खिलाफ और भारत को पाकिस्तान के खिलाफ अमेरिकी शैली के हवाई/मिसाइल/ड्रोन हमलों की मुहिम चलाने को प्रेरित कर सकता है ताकि वे अपने कमजोर प्रतिद्वंद्वी पर अपनी मनमानी चला सकें।

पाकिस्तान ऑपरेशनों की विषम रणनीति अपना सकता है ताकि हवाई हमले को पचा सके, जवाबी कार्रवाई करने के मकसद से बाकी बची पर्याप्त क्षमता को सुरक्षित रख सके; और आर्थिक ठिकानों को निशाना बनाकर, समुद्री मार्गों को बंद करके और अंदरूनी इलाकों में ड्रोन हमलों के लिए भाड़े के साधनों का इस्तेमाल करके युद्ध को तेज कर सके। जमीनी ऑपरेशन भी सीमित स्तर पर किया जा सकता है। विषम रणनीति का लाभ यह होता है कि लड़ाई को लंबा खींचकर परमाणु युद्ध के कगार के नीचे तक लाया जा सकता है। चीन के साथ सैन्य शक्ति में अंतर के मद्देनजर भारत को विषम रणनीति अपनानी चाहिए।

एक ज्यादा ताकतवर देश का पहले से ही वर्चस्व, और इसके साथ एक कमजोर देश द्वारा विषम प्रतिरोध– यह दोहरापन ही भविष्य में इस उपमहादेश में भावी युद्धों का स्वरूप रहेगा। भारत के लिए सैन्य चुनौती प्रतिद्वंद्वी में खौफ पैदा करने के लिए उसकी ऑपरेशन संबंधी पारंपरिक/विषम रणनीति को परास्त करने की होगी।

उच्चस्तरीय और विषम टेक्नोलॉजी का मेलः अत्याधुनिक वेपन सिस्टम के साथ समस्या यह है कि हर पहलू को समेटने की कोशिश में उनका न केवल मुख्य वेपन सिस्टम बल्कि नष्ट होने वाली मिसाइल आदि भी बेहद महंगी हो जाती हैं। भारत की काफी असरदार 'ब्रह्मोस' मिसाइल की लागत अमेरिकी 'टॉमहाक' मिसाइलों की लागत से लगभग दोगुनी ज्यादा है। जरूरत थोड़ी सस्ती, कम आधुनिक मिसाइलों की है, जिन्हें एक साथ बड़ी संख्या में दाग कर दुश्मन के एअर डिफेंस को परास्त किया जा सके। ईरान की जो 10 फीसदी मिसाइलें कारगर रहीं, उन्होंने बेहद महंगे एयर डिफेंस संचारतंत्र और कमांड-व-कंट्रोल सिस्टम को भारी नुकसान पहुंचाया। ईरान के 20-50 हजार डॉलर वाले 'शाहिद' ड्रोनों ने केवल लक्ष्यों को नष्ट किया बल्कि लागत में भारी अंतर के बूते इंटरसेप्टर मिसाइल का संकट पैदा कर दिया। ये ड्रोन 2 हजार किमी तक जाकर मार कर सकते हैं और जल्दी ही इंटरकॉटिनेंटल हो सकते हैं।

भारत को उच्च स्तर की टेक्नोलॉजी आधारित ऐसा वेपन सिस्टम चाहिए, जिससे कम समय में 'सदमा और दहशत' फैलाकर सैन्य लक्ष्य हासिल किया जा सके, और विषम टेक्नोलॉजी आधारित कम लागत वाली ऐसा सिस्टम चाहिए, जिसकी मदद से ज्यादा ताकतवर दुश्मन को लंबे युद्ध में हरा सकें। यानी सभी सिस्टम्स के बेहतर तालमेल का इस्तेमाल हो, और यह सब देसी ही हो।

अप्रत्यक्ष युद्धः ज्यादा ताकतवर दुश्मन से लड़ने का सबसे प्रभावी तरीका 'अप्रत्यक्ष युद्ध' ही हो सकता है। कमांड एवं कंट्रोल, रक्षा व्यवस्था, और साजोसामान सबको भूमिगत कर दिया जाए। 'टनेल डिफेंस' (सुरंग) सबसे व्यावहारिक समाधान है। यहां तक कि महत्वपूर्ण सिस्टम्स का उत्पादन करने वाले रक्षा उद्योगों को भी भूमिगत किया जाए। ईरान के पास आज बची हुई ताकत बीते वर्षों में 'टनेल डिफेंस' के विकास की वजह से ही है।

भारतीय सेना की भौतिक सुरक्षा इस युग के लिए प्रासंगिक नहीं है। यहां तक कि विमानों के बेहद मजबूत शेल्टर और बंकर भी जमीन के ऊपर बने हुए हैं। जो बड़े हवाई, मिसाइल या ड्रोन हमलों में टिक नहीं सकते। अमेरिकी सेना को भी ईरान के मिसाइल एवं ड्रोन हमलों के मद्देनजर अपने असुरक्षित अड्डों को खाली करना पड़ा। भारत को भूमिगत युद्ध का सिद्धांत तुरंत बनाने और अपनाने की जरूरत है। ऐसे युद्ध के लिए पहाड़ सबसे माकूल हैं। बस इच्छाशक्ति चाहिए।

मिसाइल व ड्रोन सेनाः रणनीति और ऑपरेशन के लिहाज से मिसाइलों और ड्रोनों की तैनाती के लिए एक अलग सेना का गठन बेहद जरूरी हो गया है। क्योंकि ये आज हवाई तथा जमीनी लक्ष्यों का पता लगाने, उन पर हमला करने और इलेक्ट्रोनिक/साइबर युद्ध करने के बहुद्देशीय प्लेटफॉर्म बन गए हैं। वह दिन दूर नहीं जब ईरानी टेक्नोलॉजी पाकिस्तान को मिल जाएगी। रणनीति तथा ऑपरेशन से जुड़े लक्ष्यों को कम लागत वाली और अंतरिक्ष आधारित 'आइएसआर' एवं गाइडेंस व्यवस्था से जुड़ी मिसाइलों और ड्रोनों से प्रभावी रूप से निशाना बनाने के लिए एक अलग संगठन चाहिए। सामरिक स्तर की तैनाती मौजूदा संगठनों की जा सकती है।

मल्टी डोमेन ऑपरेशंसः मल्टी डोमेन ऑपरेशंस (एमडीओ) के तहत, दुश्मन को कई तरह से प्रभावित करने के लिए जमीन, समुद्र, हवा, अंतरिक्ष, साइबर, तथा सूचना के डोमेनों में सैन्य क्षमताओं का एक साथ इस्तेमाल किया जाता है। कमांड के सभी स्तरों पर कमांड एवं कंट्रोल तथा वेपन प्लेटफॉर्मों को जवाबी कार्रवाई करने के लिए एक ही सूचना तक उनकी एक साथ पहुंच होनी चाहिए। इस क्षमता के बिना 21वीं सदी का युद्ध नहीं लड़ा जा सकता।

परिवर्तन जरूरीः विडंबना यह है कि एकीकृत डिफेंस स्टाफ ने 'डिफेंस फोर्सेस विजन 2047 : अ रोडमैप फॉर फ्यूचर-रेडी इंडियन मिलिटरी' तैयार किया है। लेकिन इसमें औपचारिक नेशनल सिक्यूरिटी विजन, नेशनल सिक्यूरिटी स्ट्रेटेजी, नेशनल डिफेंस पॉलिसी और इसके लिए अनुमानित वित्तीय व्यवस्था का कोई ख्याल नहीं रखा गया है। इसलिए सेना में चरणबद्ध परिवर्तन सुस्त गति से ही आएगा। यूक्रेन और ईरान युद्धों ने 21वीं सदी के युद्ध का खाका पेश कर दिया है। अब समय गंवाने की कोई गुंजाइश नहीं है। सरकार को 'सेना में परिवर्तन की इमरजेंसी' की घोषणा कर देनी चाहिए।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

शरद की सुबह

सृजन
सत्य नहीं
केवल सपना
रह गया है

सृजन
विनाश की पैशाचिक
बाहों में
जकड़ा हुआ है

सृजन का मुकुट
धराशाई
हो गया है

सृजन
सिंहासनटठट के पैरों तले
कुचला जा रहा है

सृजन
हाहाकार के घेरे में
घिरा हुआ है।

-दुर्गाप्रसाद झाला .

बंगाल -असम में एनडीए , केरल में कांग्रेस तो तमिलनाडु में डीएमके

एग्जिट पोल 2026

नई दिल्ली (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के लिए एग्जिट पोल के नतीजे सामने आ गए हैं। चुनाव के परिणाम 4 मई को आएंगे। पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के लिए दो चरणों में मतदान संपन्न हो चुका है। दो चरणों में हुए मतदान में पहले चरण में 16 जिलों की 152 सीटों पर रिकॉर्ड 92.88 फीसदी मतदान हुआ। दूसरे चरण में 7 जिलों की 142 सीटों पर भी रिकॉर्ड मतदान हुआ है। अब तक आए 6 एग्जिट पोल में से 5 एग्जिट पोल में बीजेपी को पूर्ण बहुमत मिलता हुआ दिख रहा है तो वहीं सिर्फ एक एग्जिट पोल में टीएमसी को बढ़त है।

छह सर्वे में भाजपा को बहुमत, दो में तृणमूल की वापसी का दावा- पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के एग्जिट पोल के नतीजे बेहद दिलचस्प और चौंकाने वाले हैं। सामने आए आठ प्रमुख सर्वे में से छह में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पूर्ण बहुमत के साथ राज्य में अपनी पहली सरकार बनाती दिख रही है।

पांचों सर्वे में एनडीए को स्पष्ट बहुमत

बंगाल में जहां पांच एग्जिट पोल्स में भाजपा आगे है, वहीं पुदुचेरी के सभी पांच प्रमुख सर्वे में एनडीए भारी बहुमत के साथ सरकार बनाता दिख रहा है। 'प्रजा पोल' और 'कामाख्या एनालिटिक्स' के अनुमानों के अनुसार तो एनडीए 20 से ज्यादा सीटें जीत सकता है। इन रुझानों से एकदम साफ है कि पुदुचेरी की जनता ने सत्ता की चाबी एक बार फिर एनडीए गठबंधन को सौंपने का मन बना लिया है, जबकि कांग्रेस गठबंधन बहुमत के आंकड़े से काफी पीछे छूट गया है।

तमिलनाडु में द्रमुक को भारी बढ़त

एग्जिट पोल के आंकड़ों के आधार पर, तमिलनाडु विधानसभा चुनाव 2026 में द्रमुक गठबंधन को भारी बढ़त मिलती दिख रही है। सभी चार एजेंसियों के अनुमानों में द्रमुक को सबसे अधिक सीटें मिलने की संभावना जताई गई है।

- मैट्रिज- इस एजेंसी के अनुसार, सत्ताधारी द्रमुक गठबंधन को 122 से 132 सीटें मिल सकती हैं। एनडीए 87 से 100 सीटों के साथ दूसरे स्थान पर रह सकता है।
- पीपल्स पल्स- इस सर्वे में द्रमुक गठबंधन को 125 से 145 सीटें मिलने का अनुमान जताया गया है। एनडीए को 65 से 80 सीटें मिल सकती हैं। टीवीके को यहां सबसे ज्यादा 18 से 24 सीटें मिलने की संभावना है।
- चाणक्य स्ट्रैटजी- इसके मुताबिक, द्रमुक+ को 145 से 160 सीटों के साथ बड़ी जीत मिल सकती है। एनडीए को 50 से 65 सीटों तक ही सीमित रहना पड़ सकता है।
- प्रजा पोल- इसके अनुसार, द्रमुक+ 148 से 168 सीटें जीतकर सबसे आगे रह सकता है। एनडीए को 61 से 81 सीटें मिलने की उम्मीद है।

पश्चिम बंगाल

एजेंसी	तृणमूल+	भाजपा	अन्य
मैट्रिज	125-140	146-161	6-10
पोल डायरी	99-127	142-171	5-9
चाणक्य स्ट्रैटजीज	130-140	150-160	6-10
प्रजा पोल	85-110	178-208	0-0
पीपल्स पल्स	177-187	95-110	1-4
पी- मारक्यू	118-138	150-175	2-6
जनमत पोल्स	195-205	80-90	4-9
जेवीसी	131-152	138-159	2-4

पुदुचेरी

एजेंसी	एनडीए	कांग्रेस+	टीवीके+	अन्य
पीपल्स पल्स	16-19	10-12	0-0	1-2
एक्सिस माय इंडिया	16-20	6-8	-	3-7
प्रजा पोल	19-25	6-10	0-0	0-0
कामाख्या एनालिटिक्स	17-24	4-7	1-2	0-1
जेवीसी	15-17	11-13	1-2	0-1

दूसरे दौर में बंगाल में शाम 5 बजे तक 90 प्रतिशत वोटिंग

टीएमसी-भाजपा कार्यकर्ताओं में हिंसा

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में सेकेंड फेज की 142 सीटों पर वोटिंग खत्म हो गई है। शाम 5 बजे तक 89.99 प्रतिशत वोटिंग हुई। यह आकंड़ा और बढ़ सकता है। वोटिंग के दौरान कई जगहों पर हिंसा, झड़प, लाठीचार्ज और ईवीएमसे छेड़छाड़ की घटनाएं सामने आईं।नॉर्थ 24 परगना के अरविंद रैली में टीएमसी और भाजपा कार्यकर्ताओं में हिंसक झड़प हुई। दोनों पार्टियों के कार्यकर्ताओं ने एक-दूसरे को दौड़ा-दौड़ाकर मुक्के, लाठियों से हमले किए। भारी संख्या में सुरक्षाबलों की मौजूदगी के बावजूद हालात बेकाबू दिखे। सीएम ममता ने सीआरपीएफ पर टीएमसी समर्थकों और वोटरों से मारपीट का आरोप लगाया। ममता ने कहा कि सीआरपीएफ ने हमारे कई लोगों को गिरफ्तार किया है। वोटरों और सेंट्रल ऑब्सर्वर लोगों को मार रहे हैं।

सामाजिक सुरक्षा पेंशन इस विश्वास का अंतरण है कि सरकार हर घड़ी जरूरतमंदों के साथ है : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

जरूरतमंदों को सम्मान और पारदर्शिता के साथ सहायता देना ही हमारा संकल्प

मुख्यमंत्री ने किया 33.45 लाख से अधिक हितग्राहियों को 200 करोड़ रुपये से अधिक पेंशन राशि का अंतरण

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि राज्य सरकार द्वारा समाज के सभी निर्धन, निराश्रित, वृद्धजनों, कल्याणी, परित्यक्ता, अविवाहिता एवं दिव्यांगजनों के कल्याण एवं आर्थिक सहायता के लिए विभिन्न प्रकार की पेंशन योजनाएं संचालित की जा रही है। उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा दी जाने वाली यह सामाजिक सुरक्षा पेंशन राशि सिर्फ आर्थिक सहायता नहीं, यह सरकार के उस विश्वास का अंतरण है, जो इस बात का प्रतीक है कि सरकार हर परिस्थिति में हर घड़ी जरूरतमंदों के साथ खड़ी है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बुधवार को मंत्रालय से समग्र पेंशन योजना के तहत प्रदेश के 33 लाख 45 हजार 231 हितग्राहियों के बैंक खातों में मार्च पेड अप्रैल की 200 करोड़ 71 लाख रुपये की पेंशन राशि सिंगल क्लिक से अंतरित की।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में राज्य सरकार समाज के सभी वर्गों के कल्याण के लिए प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। केन्द्र सरकार की ओर से सभी पात्र लाभार्थियों को प्रतिमाह पेंशन योजनाओं का लाभ मिल रहा है। यह हमारे लिए एक सामाजिक उत्तरदायित्व है। उन्होंने कहा कि सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजनाओं के अंतर्गत दी जा रही यह पेंशन राशि उनके जीवनयापन में सहारा बनने के साथ-साथ उन्हें आत्मसम्मान के साथ जीवन जीने की प्रेरणा भी देती है।

इस अवसर पर उप-मुख्यमंत्री श्री जगदीश देवड़ा, सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण मंत्री श्री नारायण सिंह कुशवाहा, आयुक्त निःशक्तजन कल्याण सहित अन्य विभागीय अधिकारी उपस्थित थे। प्रदेश के सभी कमिश्नर्स-कलेक्टर्स एवं पेंशन हितग्राहियों ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए इस कार्यक्रम में सहभागिता की।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने हितग्राहियों को वर्चुअली संबोधित करते हुए कहा कि सरकार का संकल्प है कि अंतिम पंक्ति में खड़े समाज के हर व्यक्ति तक सहायता समय पर, सम्मान के साथ और पारदर्शी तरीके से पहुंचे, जिससे कोई भी नागरिक अपने आपको असहाय महसूस न करे। सरकार हर परिस्थिति में आपके साथ खड़ी है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य सरकार जरूरतमंदों के हित में पूरी संवेदनशीलता और जवाबदेही के साथ कार्य कर रही है। हम यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि समाज के कमजोर वर्गों को नियमित रूप से आर्थिक सहायता मिले और कोई भी जरूरतमंद व्यक्ति इस सहायता से वंचित न रहे। उन्होंने बताया कि राज्य सरकार ने वर्तमान वित्त वर्ष 2026-27 के बजट में सामाजिक सुरक्षा से संबंधित योजनाओं के लिए 2 हजार 857 करोड़ रुपये का प्रावधान रखा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन से प्रदेश के लाखों लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव आ रहा है और उन्हें आर्थिक सुरक्षा का आधार भी मिल रहा है।

'हीरो हो', 10 बजे के बाद गमछा झाड़कर आए कर्मचारी को रीवा कलेक्टर ने करा दी परेड

बाकी सब गर्दन झुकाए खड़े रहे

रीवा (नप्र)। 10.10 बजे ऑफिस पहुंचे कर्मचारियों को रीवा कलेक्टर ने ऑफिस के बाहर ही स्टैंडअप मोड में खड़ा करा दिया। साथ ही सभी को जमकर खरीखोटी सुनाई है। कलेक्टर नरेंद्र सूर्यवंशी के तेवर को देखते हुए कर्मचारियों ने गर्दन झुका लिए थे। उन्होंने सभी को हिदायत दी है कि ऑफिस एक दम राइट टाइम आया करें।

10 बजे तक नहीं पहुंचे ऑफिस- दरअसल, रीवा कलेक्टर नरेंद्र सूर्यवंशी की छवि कड़क अधिकारी के रूप में है। वह हाल ही में बैतूल से रीवा आए हैं। बुधवार को सुबह 10 बजकर 10 मिनट पर वह ऑफिस का निरीक्षण करने पहुंचे। निरीक्षण के दौरान पाया कि अधिकांश दफ्तरों में कर्मचारी नहीं हैं। इसके बाद कलेक्टर ने ऑफिस के मेनगेट पर आकर खड़े हो गए। उन्होंने देखा कि कर्मचारियों की आवाजाही 10 बजे के बाद हो रही है।

गेट पर ही कर्मचारियों को खड़ा करवा दिया- कलेक्टर नरेंद्र सूर्यवंशी ने देखा कि लेट आने वाले कर्मचारियों की संख्या दर्जनों में हैं। सबको उन्होंने एक लाइन खड़ा करवाकर हड़काना शुरू कर दिया। साथ ही जमकर फटकार लगाई।

सुबह सवेरे

इंदौर ■ गुरुवार, 30 अप्रैल 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

ब्रह्मोस खरीदने भारत आ रहे वियतनाम के राष्ट्रपति

● 5,800 करोड़ की डील! मित्र रूस ने भी कहा 'हां'

नई दिल्ली (एजेंसी)। वियतनाम के राष्ट्रपति तो लाम अगले हफ्ते भारत यात्रा पर आ सकते हैं। उनकी इस यात्रा का मकसद भारत के साथ सामरिक और सैन्य साझेदारी को और आगे बढ़ाना है। लेकिन, उनकी इस यात्रा का सबसे बड़ा लक्ष्य करीब 5,800 करोड़ (700 मिलियन डॉलर) की ब्रह्मोस मिसाइल की प्रस्तावित डील है। इस मामले की जानकारी रखने वालों के हवाले से यह बातें सामने आई हैं। वियतनाम के राष्ट्रपति तो लाम की भारत यात्रा के दौरान वह ब्रह्मोस मिसाइल खरीदने के अलावा भी कई और तरह के हथियार और रक्षा उपकरणों को खरीदने की बात को आगे बढ़ा सकते हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार प्रस्तावित डील में ब्रह्मोस के एंटी-शिप वर्जन शामिल हो सकते हैं, जिससे वियतनाम को अपनी समुद्री सुरक्षा क्षमता बढ़ाने में मदद मिलेगी। भारत ने ब्रह्मोस मिसाइल को रूस के साथ मिलकर संयुक्त रूप से विकसित किया है।

रूस भारत का तो भरोसेमंद मित्र है ही, वियतनाम का भी एक बहुत पुरानी सहयोगी है। रिपोर्ट के अनुसार रूस ने वियतनाम को भारत के अत्याधुनिक स्वदेशी ब्रह्मोस मिसाइल बेचने का पूर्ण समर्थन कर दिया है और उसे इसमें कोई आपत्ति नहीं है। तो लाम को वियतनाम का सबसे ताकतवर नेता माना जाता है।

भारत और वियतनाम की रणनीतिक साझेदारी

यह देखना भी महत्वपूर्ण है कि राष्ट्रपति बनने के बाद वह चीन गए और उसके तुरंत बाद भारत आ रहे हैं। भारत और वियतनाम के संबंधों में तब और मजबूती आनी शुरू हुई, जब 2016 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी वियतनाम यात्रा पर पहुंचे। यहीं से दोनों में व्यापक रणनीतिक साझेदारी की शुरुआत हुई। तो लाम व्यापक रणनीतिक साझेदारी के एक दशक पूरे होने पर भारत आने वाले हैं। भारत और वियतनाम के बीच रक्षा और सुरक्षा सहयोग व्यापक रणनीतिक साझेदारी के मुख्य आधार है। यह साझेदारी 2009 के रक्षा सहयोग पर मेमोरेंडम ऑफ अंडरस्टैंडिंग और 2015 के रक्षा सहयोग के संयुक्त दृष्टिकोण पर आधारित है। जून 2022 में दोनों देश एक ज्वाइंट विजन स्टेटमेंट ऑन इंडिया–वियतनाम डिफेंस पार्टनरशिप टुवर्ड 2030 के लिए भी सहमत हुए थे और म्यूचुअल लॉजिस्टिक सपोर्ट पर एक एमओयू भी साइन किया था।

संक्षिप्त समाचार

शेरों की सल्तनत में ट्रेन से सफारी का मिलेगा रोमांच

● गुजरात के गिर में अब शुरू होगी सपनों की 'ट्रेन जर्नी'!

अहमदाबाद (एजेंसी)। सोचिए, आप एक लग्जरी ट्रेन में बैठे हैं। ट्रेन की छत और खिड़कियां कांच की हैं। आप अपनी सीट पर फेवरेट गुजराती खाना खा रहे हैं... और तभी कांच के ठीक उस पार 'जंगल का राजा' बब्बर शेर शाही अंदाज में गुजर जाए! जल्द ही गुजरात के गिर नेशनल पार्क में आपका यह

सपना सच होने वाला है। भावनगर रेलवे डिवीजन जंगल के बीच मौजूद पुराने मीटर गेज ट्रैक पर एक स्पेशल सफारी ट्रेन चलाने जा रहा है। इसमें 'विस्टाडोम' कोच होंगे, जिनकी 360-डिग्री घूमने वाली सीटों से जंगल का हर खूबसूरत नजारा साफ दिखेगा। यह अनोखी ट्रेन शेरों के घर से गुजरने वाले दो खास रूट–'जूनागढ़ से देलवाड़ा' और 'तालाला से कांसियानेश' पर चलेगी। इस पूरी सफारी का मेन सेंटर 'सासन गिर' होगा। डिविजनल रेलवे मैनेजर (डीआरएम) दिनेश वर्मा ने बताया कि प्लान पास होते ही यह सफारी शुरू कर दी जाएगी।

सुधार के नाम पर धर्म को खोखला नहीं कर सकते

● सुप्रीम कोर्ट ने कहा-हम इस देश की सभ्यता और धार्मिक इतिहास नहीं भूल सकते

नई दिल्ली (एजेंसी)। केरलम के सबरीमाला मंदिर सहित अन्य धार्मिक स्थलों में महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव से जुड़ी याचिकाओं पर सुप्रीम कोर्ट में बुधवार को सुनवाई हुई। कोर्ट ने एडवोकेट इंदिरा जयसिंह की दलीलों के जवाब में कहा कि सामाजिक सुधार के नाम पर धर्म को खोखला नहीं किया जा सकता। एडवोकेट जयसिंह ने सुनवाई के 10वें

दिन कहा कि सबरीमाला मंदिर में एंट्री का फैसला अब भी लागू है। इस पर स्टे नहीं है लेकिन मंदिर में प्रवेश नहीं मिल रहा है। जय सिंह ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट इसकी रिव्यू पिटिशन पर सुनवाई कर रहा है। हालांकि, कोर्ट कभी यह तय नहीं करता कि धर्म में क्या जरूरी है या और क्या नहीं। इसका फैसला तो धर्म ही करता है। इस पर जस्टिस बीवी नागरत्ना ने कहा कि हम इस भूमि के सभ्यता के विकास और धार्मिक इतिहास को नजरअंदाज नहीं कर सकते।

इतिहासविद् शंभुदयाल गुरु के दुर्लभ संदर्भ संग्रह से समृद्ध हुआ सप्रे संग्रहालय का इतिहास प्रभाग

भोपाल, 29 अप्रैल/ मध्यप्रदेश के बौद्धिक जगत में इतिहास के अधिकारी विद्वान के रूप में प्रतिष्ठित श्री शंभुदयाल गुरु का दुर्लभ संदर्भ संग्रह [illegible] सप्रे संग्रहालय का अंग बन गया है। [illegible]

5 जनवरी, 1929 को जन्मे श्री शंभुदयाल गुरु ने सागर विश्वविद्यालय से इतिहास और राजनीति विज्ञान विषयों में स्नातकोत्तर उपाधि अर्जित की। [illegible] सन 1990 तक वे इसके भी निदेशक रहे। श्री शंभुदयाल

खरीदी अव्यवस्था, एमएसपी फर्जीवाड़ा और किसान उत्पीड़न से घिरी मोहन सरकार जवाब दे: जीतू पटवारी

भोपाल। मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री जितेंद्र (जीतू) पटवारी ने कहा है कि प्रदेश में गेहूं खरीदी व्यवस्था पूरी तरह चरमरा चुकी है। मोहन सरकार पहले खरीदी की तारीख बढ़ाती रही और अब स्लॉट बुकिंग की तारीख बढ़ाकर किसानों को भ्रमित करने का प्रयास कर रही है। वास्तविकता यह है कि सरकार का पूरा खरीदी तंत्र विफल हो चुका है और किसान भारी परेशानी झेल रहे हैं।
उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी ने पहले ही चेताया था कि जिस धीमी गति से खरीदी चल रही है, उस हिसाब से सरकार को अपने ही घोषित 100 लाख मीट्रिक टन खरीदी लक्ष्य को पूरा करने में लगभग 140 दिन लगेंगे। प्रदेश में अनुमानित 245 लाख मीट्रिक टन उत्पादन के बावजूद सरकार ने 50 प्रतिशत से भी कम खरीदी का लक्ष्य रखा है, जो किसानों के साथ अन्याय है।
श्री पटवारी ने कहा कि किसान लगातार स्लॉट बुकिंग में दिक्कत झेल रहे हैं, पुनः सत्यापन के संदेश आ रहे हैं, सर्वर धीमा पड़ रहा है, वेबसाइट बंद हो रही है और छोटे किसानों की भी समय पर तुलाई नहीं हो पा रही है। सरकार की लापरवाही का खामियाजा अन्नदाता भुगत रहा है।
उन्होंने कहा कि इसी बीच समर्थन मूल्य पर गेहूं खरीदी के नाम पर बड़ा फर्जीवाड़ा भी सामने आया है। भिंड, मुरैना और राजगढ़ जिलों में ऐसे लोगों के नाम पर पंजीयन कर दिया गया, जिनके पास स्वयं जमीन तक नहीं है, जबकि असली किसानों की जमीन का उपयोग कर फर्जी किसान बनाए गए। यह किसानों के हक पर सीधा डाका है।
उन्होंने कहा कि सरकार किसानों से 2625 रुपये प्रति क्विंटल की दर से गेहूं खरीद रही है, जबकि बाजार भाव 2000 से 2200 रुपये प्रति क्विंटल है। इसी अंतर का लाभ उठाकर करोड़ों रुपये की हेराफेरी की गई। यह बिना प्रशासनिक संरक्षण और मिलीभगत के संभव नहीं हो सकता।

चुनाव में गजब की धांधली, 'खेला' होबे

● बीजेपी को वोट देने का ऑप्शन ईवीएम से हुआ गायब ● बीजेपी का हल्ला बोल, आयोग बोला-कराएंगे री वोटिंग

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के सेकंड फेज में बीजेपी ने बड़ा अरोप लगाया है वहीं ममता बनर्जी ने चुनाव आयोग पक्षपात के आरोप लगाए हैं। इसी बीच बीजेपी ने आरोप लगाया कि कई बूथों पर ईवीएम मशीन से

कमल के निशाना वाला बटन ही गायब कर दिया गया है। आरोप है कि ऑप्शन वाले बटन पर टेप लगा है, जिससे लोग बीजेपी को वोट न दे सकें। बीजेपी आईटी सेल के इंचार्ज अमित मालवीय ने कुछ वीडियो भी शेयर किए हैं, जिसमें ईवीएम में बीजेपी का बटन ही नजर नहीं आ रहा है। इसी बीच चुनाव आयोग का बयान आया है। आयोग ने कहा कि जहां भी इस तरह की शिकायतें आई हैं, वहां फिर से चुनाव कराए जाएंगे। अमित मालवीय ने कहा कि यह हैं ममता बनर्जी। यह वहीं ममता बनर्जी हैं, जिन्होंने जहांगीर खान के पक्ष में आवाज उठाई। जहांगीर, एक ऐसा अपराधी जो डायमंड हार्बर के फाल्टा से टीएमसी के टिकट पर चुनाव लड़ रहे हैं। वह उनके समर्थन में आवाज उठा रही हैं। आईटी सेल के अमित मालवीय ने कहा कि कई पोलिंग बूथों पर, बीजेपी को वोट देने का विकल्प टेप लगाकर ब्लॉक कर दिया गया है, जिससे वोटर अपना पसंदीदा उम्मीदवार चुनने से प्रभावी रूप से वंचित हो गए हैं। यही तथाकथित डायमंड हार्बर मॉडल है।

हम तो आपसे 25 साल पुराने हैं, हमने एक ही पर समाप्त कर दिया

मैहर (नप्र)। मध्य प्रदेश के नवगठित जिले मैहर की कलेक्टर आईएएस बिदिशा मुखर्जी इन दिनों अपने ऑन-फील्ड एक्शन और बेबाक अंदाज के कारण सुर्खियों में हैं।

शनिवार शाम जब वे सिविल अस्पताल का औचक निरीक्षण करने पहुंचीं, तो वहां का नजारा देख उनकी संवेदनशीलता और सख्ती का एक अलग ही रूप देखने को मिला। प्रसूति वार्ड में एक महिला द्वारा पांचवें बच्चे को जन्म देने की बात सुनकर वे दंग रह गईं और एक सुपर वुमेन की तरह समाज की दकियानूसी सोच पर प्रहार करती नजर आईं।

पांचवें बच्चे की बात सुनकर महिला को समझाया- निरीक्षण के दौरान जैसे ही मैहर कलेक्टर को पता चला कि एक प्रसूता ने अपनी पांचवीं संतान को जन्म दिया है, वे सीधे उसके बेड तक पहुंचीं। उन्होंने किसी अधिकारी की तरह नहीं, बल्कि एक अभिभावक की तरह महिला को समझाया। कलेक्टर ने सवाल उठाया कि आज के महंगाई भरे दौर में पांच बच्चों का पालन-पोषण, उनकी उच्च शिक्षा और बेहतर स्वास्थ्य सुनिश्चित करना कितना बड़ा चुनौतीपूर्ण कार्य है।

पीएम मोदी ने यूपी के सबसे लंबे एक्सप्रेस-वे का किया उद्घाटन

हरदोई (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को यूपी के हरदोई में प्रदेश के सबसे लंबे गंगा एक्सप्रेस-वे का उद्घाटन किया। जनसभा को संबोधित करते हुए पीएम ने ऐलान किया कि एक्सप्रेस-वे को हरिद्वार से भी जोड़ा जाएगा। पीएम ने सपा और कांग्रेस पर कहा- सपा विकास और नारी विरोधी है। बीते दिनों एक बार फिर देश ने इनका नारी विरोधी चेहरा देखा है। इन लोगों ने नारी शक्ति वंदन संशोधन के खिलाफ वोट किया। पीएम ने पश्चिम बंगाल में चल रही दूसरे चरण की वोटिंग का जिक्र किया। कहा- जो खबरें आ रही हैं, उनसे पता चलता है कि बंगाल में भारी मतदान हो रहा है। ऐसी वोटिंग दशकों में नहीं देखी। इससे पहले पीएम ने एक्सप्रेस-वे के किनारे पेड़ लगाया। सीएम योगी के साथ एक्सप्रेस-वे पर पैदल भी चले। 594 किलोमीटर लंबा यह एक्सप्रेस-वे मेरठ को प्रयागराज से जोड़ेगा। इससे

बंगाल में अबकी लोग भयमुक्त होकर वोट दे रहे हैं

बंगाल में पहले चरण की तरह ही जनता वोट देने के लिए बड़ी संख्या में घरों से निकल रही है। लंबी-लंबी कतारों की तस्वीरें सोशल मीडिया पर छाई हुई हैं। पिछले 6-7 दशक में जो नहीं हुआ, जिसकी कल्पना भी मुश्किल थी, लोग भयमुक्त होकर वोट दे रहे हैं। मुझे विश्वास है कि इन पांच राज्यों के चुनाव में भी भाजपा ऐतिहासिक जीत की हैट्रिक लगाने जा रही है एनडीए सरकार नारी शक्ति वंदन संशोधन लेकर आई थी। अगर यह संशोधन पास हो जाता तो 2029 के चुनाव से ही महिलाओं को लोकसभा और विधानसभा में आरक्षण मिलता, लेकिन सपा ने इसके खिलाफ वोट किया। सपा कभी भी परिवारवाद और जातिवाद से ऊपर नहीं उठ सकती।

युवक को निर्वस्त्र कर चेहरे पर यूरिन किया

अगवा कर बेल्ट और लात-घूसों से पीटा; बदमाशों ने कहा- हम तेरे बाप हैं

भोपाल (नप्र)। भोपाल के कमला नगर में वर्चस्व की लड़ाई में बदमाशों ने एक युवक को किडनैप किया। आरोपियों ने उसे निर्वस्त्र कर बेल्ट, लात-घूसों से पीटा। वह रहम की भीख मांगता रहा, लेकिन आरोपी पीटते रहे।

आरोपियों ने उसके मुंह पर पेशाब भी किया। दहशत फैलाने के लिए वीडियो भी इंस्टाग्राम पर अपलोड किया था। इस मामले में हनुमानगंज थाना पुलिस ने चाकूबाजी का केस दर्ज किया, लेकिन आरोपी अभी गिरफ्तार नहीं हुए हैं। मामले की शिकायत रविवार को कमला नगर थाने पहुंची थी, जहां शुरुआती जांच हुई। जांच में घटनास्थल हनुमानगंज थाना क्षेत्र का मिला, जिसके बाद शिकायत वहां भेजी गई। हनुमानगंज पुलिस ने मंगलवार देर रात मामला दर्ज किया। घटना शनिवार की बताई गई है।

रानी की जगह रजनी, पूनम की जगह पूजा

बाबू ने आंगनबाड़ी भर्ती में किया ऐसा खेल कि कलेक्टर ने ऑन स्पॉट लिया एक्शन, एफआईआर, निलंबित

गुना (नप्र)। जिला कलेक्ट्रेट की जनसुनवाई में मंगलवार को उस वक्त सन्नाटा पसर गया जब कलेक्टर किशोर कन्याल ने एक बाबू की फाइल में की गई लिखा-पढ़ी की जादूगरी पकड़ ली। यह मामला सिर्फ लापरवाही का नहीं, बल्कि पात्र महिलाओं के हक पर डाका डालने की एक सुनियोजित साजिश का था। आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और सहायिका भर्ती में मेरिट में टॉप करने वाली महिलाओं की जगह अपात्रों को घुसाने के लिए फाइलों में नाम बदले जा रहे थे। कलेक्टर ने मौके पर ही जांच के आदेश दिए और दोषी बाबू विजय कुमार मेहरा को तत्काल सस्पेंड कर एफआईआर दर्ज कराने को कहा।

रानी की जगह रजनी... ऐसे रचा गया सिंडिकेट–धोखाधड़ी का यह खेल बेहद शातिराना था। मधुसूदनगढ़ की रानी सेन का चयन मेरिट के आधार पर सहायिका पद के लिए हुआ था, लेकिन विभाग के बाबू विजय कुमार मेहरा ने नस्ती में उसका नाम बदलकर रजनी सेन कर दिया। इसी तरह राघौगढ़ में पूजा कुशवाह का नाम बदलकर पूनम कुशवाह कर अनुमोदन के लिए भेज दिया गया। मकसद साफ था, अक्षरों का मामूली हेरफेर कर अपात्रों को नियुक्ति पत्र थमाना और इसके बदले दलालों के जरिए बड़ी रकम डकारना।

दलाल मांग रहे थे पैसे, जनसुनवाई में खुली पोल–पीड़ित महिला रानी सेन ने बताया कि उसे दो महीने से गुमराह किया जा रहा था। दलाल उससे नियुक्ति पत्र के बदले पैसों की मांग कर रहे थे। जब वह तंग आकर जनसुनवाई में कलेक्टर के पास पहुंची, तब पता चला कि सरकारी फाइल में तो उसका अस्तित्व ही मिटाने की कोशिश की गई है। कलेक्टर कन्याल ने जब रिकॉर्ड खंगाला, तो बाबू की जालसाजी सामने आ गई।

सीपीसीटी में भी की थी धोखाधड़ी–निलंबित बाबू विजय कुमार मेहरा पहले से ही रडार पर थे। अनुकंपा नियुक्ति के नियम के तहत उन्हें 3 साल में सीपीसीटी (कंप्यूटर दक्षता परीक्षा) पास करनी थी, लेकिन 2019 से लेकर 2025 तक कई नोटिस मिलने के बाद भी उन्होंने लापरवाही बरती। भ्रष्टाचार और पदीय कर्तव्यों के उल्लंघन के आरोप में उन पर मप्र सिविल सेवा नियम 1966 के तहत कार्रवाई की गई है।

कलेक्टर की अपील : दलालों से रहें सावधान–कलेक्टर किशोर कन्याल ने न केवल दोषी को सजा दी, बल्कि मंच से ही पीड़िता रानी सेन को उसका नियुक्ति पत्र सौंपकर न्याय किया। उन्होंने साफ चेतावनी दी कि आज के दौर में सभी भर्तियां ऑनलाइन और पारदर्शी हैं। अगर कोई भी कर्मचारी या बाहरी व्यक्ति नौकरी के नाम पर पैसे मांगे, तो सीधे प्रशासन को बताएं।

हमारा जहाज जब्त करना समुद्री डकैती, सुरक्षा परिषद ऐक्शन ले

● अमेरिका के खिलाफ संयुक्त राष्ट्र पहुंचा ईरान, कर दी बड़ी मांग

तेहरान/वॉशिंगटन (एजेंसी)। ईरान ने अमेरिका के खिलाफ संयुक्त राष्ट्र में शिकायत की है। तेहरान टाइम्स की रिपोर्ट के मुताबिक चिट्ठी में ईरान ने अमेरिका पर कई गंभीर आरोप लगाए हैं। ईरान का कहना है कि अमेरिका ने उसके जहाजों को जब्त करके 'समुद्री डकैती' की है। संयुक्त राष्ट्र में ईरान के राजदूत अमीर सईद इरावानी ने कहा कि अमेरिका ने 'मैजेस्टिक' और 'टिफनी' नाम के जहाजों को कब्जे में लिया और लगभग 38 लाख बैरल ईरानी तेल भी जब्त कर लिया। उनके मुताबिक यह कदम गैरकानूनी है और यह अंतरराष्ट्रीय व्यापार में दखल देने जैसा है। ईरान का आरोप है कि अमेरिका की यह कार्रवाई संयुक्त राष्ट्र चार्टर, अंतरराष्ट्रीय कानून और समुद्र से जुड़े कानूनों का उल्लंघन करती है।

तापमान में मामूली गिरावट के आसार

इंदौर। भीषण गर्मी के बीच पिछले 24 घंटों में दिन और रात के तापमान में एक-एक डिग्री सेल्सियस की गिरावट आई है। इससे गर्मी से हल्की सी राहत है। फिर भी दोपहर 12 बजे से शाम 4 बजे तक तेज धूप ने लोगों को हलाकान कर दिया है। रविवार को तो भीषण गर्मी के साथ हीट वेव्स का दौर था। इस दौरान दिन का तापमान इस सीजन का सबसे ज्यादा 43.0 (+2) डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया था। रात को भी गर्मी से काफी बेचैनी थी और तापमान 25.2 (+2) डिग्री सेल्सियस रहा था। मौसम वैज्ञानिकों ने अनुमान जताया था कि अब तापमान में गिरावट आएगी। सोमवार को दिन का तापमान 1 डिग्री लुढ़ककर 42.0 (+1) डिग्री सेल्सियस रहा जो सामान्य से 1 डिग्री ज्यादा है। रात के तापमान में भी हल्की गिरावट आई और तापमान 29.9 (+2) डिग्री सेल्सियस रहा। मंगलवार के बाद बुधवार सुबह से धूप चढ़ने के साथ गर्मी का असर बढ़ते जा रहा है। मौसम वैज्ञानिकों ने अगले दो तीन दिनों में तापमान में और गिरावट के आसार जताए हैं और पारा 39 से 40 डिग्री के बीच रहने के संकेत हैं।

मालिकाना हक याचिका से तय नहीं

इंदौर। सोमवार को हाई कोर्ट में मुस्लिम पक्ष ने हिंदू पक्ष की दो जनहित याचिकाओं पर आपत्ति जताई। वरिष्ठ अधिवक्ता शोभा मेनन ने कहा कि याचिकाओं में सिर्फ पूजा अधिकार नहीं, मालिकाना हक की मांग की गई है। भोजशाला-कमाल मौला मस्जिद विवाद में हाई कोर्ट में सुनवाई चल रही है। ऐसे विवाद दीवानी अदालत में तय होते हैं, जनहित याचिका से नहीं। मुस्लिम पक्ष ने यह भी कहा कि याचिकाकर्ताओं को जनहित याचिका दाखिल करने का अधिकार साबित करना होगा। सुनवाई के दौरान अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल सुनील कुमार जैन ने बताया कि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने वैज्ञानिक सर्वे की वीडियोग्राफी वाली सील बंद हार्ड डिस्क कोर्ट में जमा कर दी है। यह रिकॉर्ड संबंधित पक्षों को भी उपलब्ध कराया गया है। मामले में मंगलवार को फिर सुनवाई होगी।

एमडी ड्रग्स तस्करी में युवक गिरफ्तार

इंदौर। क्राइम ब्रांच ने शहर में नशे के खिलाफ चल रहे अभियान के तहत बड़ी कार्रवाई करते हुए फॉर्च्यूनर कार में एमडी ड्रग्स की तस्करी कर रहे युवक को पकड़ लिया। टीम ने सुलभ कॉम्प्लेक्स के पास शिवालय रोड पर घेराबंदी कर वाहन रोका। तलाशी में 11.12 ग्राम एमडी ड्रग्स और डिजिटल तोल मशीन बरामद हुई। आरोपी की पहचान मुसाखेड़ी निवासी नंदकिशोर वोरा उर्फ वंश के रूप में हुई है, जो कॉस्मेटिक शॉप में काम करता है और अतिरिक्त कमाई के लिए नशे के कारोबार में जुड़ा था। डीसीपी क्राइम ब्रांच राजेश कुमार त्रिपाठी के मुताबिक, 1 जनवरी 2026 से अब तक एनडीपीएस एक्ट के तहत 25 प्रकरण दर्ज कर 39 तस्करों को गिरफ्तार किया जा चुका है। पुलिस अब आरोपी से पूछताछ कर सप्लायर और नेटवर्क की कड़ियां जोड़ने में जुटी है।

सड़क हादसे में ड्राइवर की मौत, पत्नी घायल

इंदौर। नावदा पंथ इलाके में सोमवार रात दर्दनाक सड़क हादसा हुआ। तेज रफ्तार बाइक की टक्कर में दंपति गंभीर रूप से घायल हो गए, जिन्हें तुरंत इलाज के लिए एमवाय अस्पताल ले जाया गया। उपचार के दौरान पति की मौत हो गई, जबकि पत्नी का इलाज जारी है। चंदन नगर पुलिस के अनुसार, ग्राम बारोली निवासी विकास राठौर अपनी पत्नी पूजा के साथ निजी काम से पीथमपुर गए थे। देर रात लौटते समय नावदा पंथ ब्रिज के पास सामने से आ रही तेज रफ्तार बाइक ने उनकी गाड़ी को टक्कर मार दी। हादसे में गंभीर रूप से घायल विकास को अस्पताल में बचाया नहीं जा सका। वे पेशे से स्कूल बस ड्राइवर थे और अपने पीछे पत्नी और दो बच्चों को छोड़ गए हैं। बाइक सवार युवक भी घायल हुआ, जिसे उसके परिजन निजी अस्पताल ले गए। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है और हादसे के कारणों का पता लगाया जा रहा है।

खजराना पुलिस के हत्थे चढ़े दो तस्कर

इंदौर। पुलिस के तमाम प्रयासों के बाद भी मादक पदार्थ की खरीद बिक्री कम नहीं हो रही है। खजराना पुलिस ने दो तस्करों को एक लाख की एमडी ड्रग्स के साथ पकड़ा। वे रिक्शा क्रमांक एमपी-09-एएन-6506 से मादक पदार्थ सप्लाय करने जाते थे। पुलिस ने रंगून गार्डन के पास स्कीम नम्बर 134 से आरोपी इरफान मोहम्मद उर्फ हामा निवासी खिजराबाद कॉलोनी तथा गोकुल चौरसिया निवासी न्यू गौरीनगर कालका माता मंदिर थाना हीरानगर से 10 ग्राम ड्रग्स बरामद की है। इसी प्रकार, क्राइम ब्रांच ने शिवालय रोड क्षेत्र में टोयोटा गाड़ी में संदिग्ध युवक को देखा। पूछताछ में उसने अपना नाम नंदकिशोर वोरा उर्फ वंश निवासी मूसाखेड़ी बताया। कार की तलाशी लेने पर उसमें 11.12 ग्राम एमडी ड्रग्स और गाड़ी के हेंडब्रेक के पास डिजिटल तौल मशीन बरामद की गई। पुलिस आरोपी से तस्करी को लेकर अन्य जानकारी जुटा रही है।

शराबी बेटे ने पिता को चाकू मारे

इंदौर। हीरानगर इलाके में चौंकाने वाली घटना सामने आई है, जहां बेटे ने तोड़फोड़ करने से रोकने पर पिता पर चाकू से हमला कर दिया। गंभीर रूप से घायल पिता का अस्पताल में इलाज जारी है, जबकि आरोपी बेटा फरार हो गया है। परिजनों के अनुसार, रविवार रात 12 बजे बेटा सागर शराब पीकर घर पहुंचा और तोड़फोड़ करने लगा। जब पिता अनिल ठाकुर ने उसे रोकने की कोशिश की तो उसने पहले चाकू के पिछले हिस्से से सिर पर वार किया और फिर पेट में चाकू घोंप दिया। वारदात के बाद वह मौके से भाग निकला। घटना के बाद आसपास के लोगों ने घायल अनिल को तुरंत निजी अस्पताल पहुंचाया। मामले में पीड़ित की बेटी भक्ति ने शिकायत दर्ज कराई है। जानकारी के मुताबिक, 23 अप्रैल को सागर को विवाद के मामले में पुलिस ने पकड़ा था। उसे कोर्ट में पेश किया गया, जहां से उसे सामान्य मुचलके पर रिहा कर दिया गया। सागर के खिलाफ मारपीट, अवैध हथियार और नशे के पांच केस दर्ज हैं।

जन्मदिन की पार्टी में चाकू मारा

इंदौर। तेजपुर गड़बड़ी में जन्मदिन की पार्टी में शामिल होने गए युवक को आरोपियों ने चाकू घोंप दिया। राजेन्द्र नगर पुलिस के अनुसार, घायल का नाम किशन उर्फ बंटी पिता मनोहर लाल असरानी निवासी अबीर-विहार कॉलोनी है। फरियादी ने बताया कि वह अपनी मां के घर के पास रहने वाले योगेश के घर गया था। वहां योगेश अपनी बेटी का जन्मदिन मना रहा था। उसी कार्यक्रम में आरोपी शंकर उर्फ राहुल, राहुल राठौर और सोनू भूरा मौजूद थे। जैसे ही आरोपियों ने मुझे देखा तो वे गालियां देने लगे। इसके बाद मारपीट की।

टक्कर से बाइक सवार की मौत- गांधीनगर थाना क्षेत्र में अज्ञात वाहन चालक ने बाइक सवार को टक्कर मार दी। इससे बाइक सवार की मौत हो गई। वहीं पीछे बैठा युवक घायल हो गया। मृतक की पहचान मोहन पिता गुलाब तंवर (36) निवासी ग्राम रिजलाय के रूप में हुई है। घटना रविवार रात की है, जब मोहन अपनी बाइक से साथी के साथ कहीं जा रहा था। इसी दौरान रास्ते में डंपर ने टक्कर मार दी थी।

सोनम की जमानत को लेकर पुलिस की कमजोर कार्रवाई पर सवाल उठे

गिरफ्तारी पर खूब लूटी थी वाह वाही, कागजी कार्रवाई में खामी

इंदौर। राजा रघुवंशी की हत्या की साजिश रचने वाली मुख्य आरोपी सोनम रघुवंशी को शिलांग कोर्ट से सशर्त जमानत मिल गई। इस घटना से शिलांग पुलिस की जमकर किरकिरी हो रही है। सोनम की गिरफ़्तारी के दौरान पुलिस ने जिस तरह कार्रवाई की, उस खामी की वजह से उसे जमानत मिल गई। इस जमानत के खिलाफ दूसरा पक्ष हाई कोर्ट जाने की तैयारी कर रहा है। बीते साल ट्रांसपोर्ट कारोबारी राजा रघुवंशी की हत्या का मामला खूब सुर्खियों में रहा। शिलांग में जिस जगह हत्याकांड को अंजाम दिया गया था, वहां सालभर बड़ी मात्रा में पर्यटक आते हैं। हत्या से पर्यटन को नुकसान हो रहा था। वहीं, मेघालय सरकार की छवि पर भी दाग लग रहा था। इसके चलते शिलांग पुलिस ने बेहद संवेदनशीलता दिखाते हुए न सिर्फ आरोपियों को गिरफ्तार किया, बल्कि हत्याकांड में आरोपियों को कड़ी सजा दिलाने कई अहम साक्ष्य भी बरामद किए थे। लेकिन, सोमवार 27 अप्रैल को जिस तरह सेशन कोर्ट ने आरोपी सोनम को सशर्त जमानत पर रिहा

होने के आदेश दिया, उससे पुलिस की कार्रवाई पर सवालिया अंगुली उठने लगी है।

हथियार बरामद किया

हत्याकांड में किरकिरी होने के बाद पुलिस ने घटनास्थल से हथियार बरामद किया था। आरोपी विशाल की खून सनी जैकेट जब्त की थी। जिस होटल में सोनम और राजा रुके थे, उसके फुटेज चेक किए थे। इंदौर से साक्ष्य मिटाने के मामले में प्रापर्टी ब्रोकर शिलोम, सिक्युरिटी गार्ड बलवीर और बिल्डर लोकेंद्र तोमर को गिरफ्तार किया था। जिस टैक्सी कार से सोनम गाजीपुर गई थी, उसके भी बयान लिए थे। पुलिस ने हत्याकांड से जुड़ी सभी कड़ी को जोड़ लिया था। इससे प्रथम दृष्टया यह माना जा रहा था कि आरोपियों की आसानी से जमानत नहीं हो सकेगी।

मात्र 11 माह हुए घटना को

हत्याकांड को मई माह 2025 में अंजाम दिया गया था। जून में आरोपियों को पकड़ा था। सितम्बर माह में पुलिस ने कोर्ट में चालान पेश किया था। तबसे अब तक करीब 11 माह में 8 से अधिक पेशी हो चुकी है। राजा के भाई विपिन, सोनम के भाई गोविंद सहित 25 लोगों, जिसमें शिलांग के होटल व्यवसायी, हथियार बेचने वाले दुकानदार के बयान कोर्ट में हो चुके हैं। पुलिस ने शिलोम से पिस्टल और बैग जब्त किया था। शिलोम को यह पिस्टल आरोपी राज कुशवाहा ने दी थी। जबकि, बैग में सोनम का सामान रखा था। शिलोम ने बैग और पिस्टल पलासिया स्थित नाले में फेंक दिया था।

आगे क्या संभावना

कोर्ट ने सोनम को जमानत देने के पीछे मूल आधार पुलिस की कार्यशैली को माना है। पुलिस ने गिरफ्तारी के दौरान कई नियमों का पालन नहीं किया, जिसका लाभ सोनम को मिल गया। वकीलों की मानें तो शेष रहे चार आरोपियों को भी जमानत का लाभ मिल सकता है। इसके पीछे मूल वजह, हत्याकांड का कोई विश्वसनीय साक्ष्य नहीं होना है। पुलिस ने केवल घटनाक्रम और मीडिया में प्रकाशित खबरों के आधार पर जांच पड़ताल की है।

सामान्य वर्ग के छात्रों को 'शिकायत फोरम' से वंचित करना अनुचित, हाई कोर्ट सख्त

भेदभाव चुनिंदा वर्गों तक सीमित क्यों, सभी के लिए समान अवसर जरूरी

इंदौर। मध्य प्रदेश हाई कोर्ट की इंदौर खंडपीठ ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के नियमों को लागू करने को लेकर राज्य सरकार द्वारा जारी सर्कुलर पर कड़ा रुख अपनाया। मुख्य न्यायाधीश संजीव सचदेवा की द्वैध पीठ ने सुनवाई के दौरान स्पष्ट कहा कि सामान्य वर्ग के छात्रों को शिकायत मंच से बाहर रखना न्यायसंगत कैसे माना जा सकता है। यह मामला अंबर शर्मा बनाम भारत संघ एवं अन्य के रूप में सामने आया है। याचिका में 2 फरवरी 2026 को जारी राज्य सरकार के उस सर्कुलर को चुनौती दी गई, जिसमें 2023 के विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के नियम लागू करने के निर्देश दिए गए थे। सर्कुलर के एक प्रावधान में अनुसूचित जाति, जनजाति, पिछड़ा वर्ग, महिला, दिव्यांग और अल्पसंख्यक वर्ग के विद्यार्थियों को कथित भेदभाव की शिकायत छात्र शिकायत निवारण समिति के समक्ष करने की अनुमति दी गई, जबकि सामान्य वर्ग के छात्रों को इसमें शामिल नहीं किया गया।

किसी भी वर्ग के साथ भेदभाव - याचिकाकर्ता की ओर से दलील दी गई कि

भेदभाव किसी भी वर्ग के साथ हो सकता है, इसे सीमित नहीं किया जा सकता। समानता का सिद्धांत सभी नागरिकों पर एक समान लागू होता है। यह भी प्रश्न उठाया गया कि क्या सरकार यह मानती है कि सामान्य वर्ग के छात्रों के साथ कभी भेदभाव संभव ही नहीं है। सुनवाई के बाद उच्च न्यायालय ने छात्र शिकायत निवारण समिति को निर्देश दिया कि सामान्य और अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की भेदभाव से जुड़ी शिकायतों को भी अन्य वर्गों की तरह ही सुना जाए। इस आदेश से सामान्य वर्ग के छात्रों को भी राहत मिली है।

कोर्ट ने गंभीर सवाल उठाए

मामले की सुनवाई के दौरान यह तथ्य भी सामने आया कि 29 जनवरी 2026 को सर्वोच्च न्यायालय ने मृत्युंजय तिवारी प्रकरण में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के 2026 के नियमों पर रोक लगा दी थी। इसके बावजूद मात्र तीन दिन बाद राज्य सरकार द्वारा अलग से सर्कुलर जारी किया गया, जिस पर न्यायालय ने गंभीर सवाल खड़े किए। याचिकाकर्ता की ओर से यह भी कहा गया कि केंद्र के नियमों में केवल अनुसूचित जाति, जनजाति और पिछड़ा वर्ग को शामिल किया गया था, जबकि राज्य सरकार ने अपने सर्कुलर में महिला, दिव्यांग और अल्पसंख्यक वर्ग को भी जोड़ते हुए सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों को पूरी तरह बाहर कर दिया, जो संविधान के सिद्धांतों के विपरीत है। अंबर शर्मा की ओर से अधिवक्ता हर्षवर्धन शर्मा ने पक्ष रखा। न्यायालय की इस टिप्पणी और निर्देश ने शिक्षा व्यवस्था में समानता और निष्पक्षता को लेकर एक महत्वपूर्ण संदेश दिया है।

खंडवा रोड पर दो जगह आग लगी, आतिशबाजी से मैरिज गार्डन जला

सुबह गोशाला में लगी आग, दो मवेशी भी आग से झुलसे

इंदौर। खंडवा रोड इलाके में देर रात से अलसुबह तक दो अलग-अलग जगहों पर आग लगने की घटनाएं सामने आईं। खंडवा रोड स्थित मैरिज गार्डन में बारात के दौरान आतिशबाजी से आग लगी, जबकि दूसरी घटना में गौशाला में भीषण आग भड़क गई। पहली घटना पिपल्यासव स्थित राधा कृष्ण गार्डन की है। यहां रात करीब 11:30 बजे बारात के दौरान की गई आतिशबाजी से बाहर लगी झाड़ियां और टेंट में आग लग गई। आग लगते ही मौके पर अफरा-तफरी मच गई, हालांकि मौजूद लोगों ने तुरंत प्रयास कर आग पर काबू पा लिया। इस घटना में कोई जनहानि नहीं हुई। दूसरी घटना अलसुबह करीब 4:24 बजे अयोध्यापुरी में शांति फार्म हाउस के पास स्थित एक गौशाला में हुई। सूचना मिलते ही दमकल की टीम मौके पर पहुंची और करीब 25 हजार लीटर पानी डालकर आग पर काबू पाया। आग बुझाने में लगभग 2 घंटे का समय लगा। दमकल कर्मियों के मुताबिक आग के दौरान गौशाला में कुछ मवेशी फंसे हुए थे, जिन्हें सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया। हालांकि इस दौरान दो मवेशी झुलस गए। आग लगने के कारणों का फिलहाल पता नहीं चल सका है।

नगर निगम के खोदे गए गड्ढे में गिरने से युवक का पैर कट गया

पुलिसकर्मी मौके पर पहुंचे तो बेरिकेड्स लगाकर लौटे

इंदौर। द्वारकापुरी इलाके में मंगलवार रात एक युवक बाइक सहित एक गड्ढे में जा गिरा। हादसे में युवक के पैर का पंजा आधे से ज्यादा कटकर लटक गया। उसका दूसरा पैर भी फ्रैक्चर है। जबकि, पुलिस ने भी अपनी जिम्मेदारी ठीक से नहीं निभाई। आसपास मौजूद लोगों ने उसे बाहर निकाला और उपचार के लिए निजी अस्पताल भेजा। घटना वीआईपी परस्पर रोड की है। यहां नगर निगम ने नर्मदा लाइन डालने के लिए गड्ढे खोदे हुए हैं। रात करीब 9 बजे राकेश पिता हरीश यादव (33 साल) बाइक सहित एक गड्ढे में जा गिरा। लोगों ने उसे देखा तो तुरंत बाहर निकालकर यूनिक अस्पताल भेजा, जहां उसका इलाज जारी है। वह कार पेंटर है और सिलिकॉन सिटी में काम पर जा रहा था। उसके 3 बच्चे हैं। रहवासियों के मुताबिक, पिछले कुछ दिनों से यहां पाइपलाइन डालने का काम चल रहा है। इसके लिए सड़क पर कई गड्ढे खोदे गए हैं, लेकिन किसी तरह की चेतावनी या सुरक्षा इंतजाम नहीं किए गए थे। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची। दो पुलिसकर्मी बाइक से आए और आसपास बेरिकेड्स लगाकर लौट गए।

पलंग से गिरे 4 माह के मासूम की मौत

इंदौर। आजाद नगर इलाके में मंगलवार सुबह दुखद हादसा सामने आया, जहां 4 महीने के मासूम बच्चे की गिरने से मौत हो गई। बताया जा रहा है कि बच्चा अपनी 6 साल की चचेरी बहन की गोद से फिसलकर गिर गया था। घटना सुबह करीब साढ़े 9 बजे भील कॉलोनी की है। परिवार के मुताबिक, मासूम रियांश पिता राजकुमार अपनी चचेरी बहन की गोद में था। बच्ची उसे लेकर 3 फीट ऊंचे बेड पर बैठी हुई थी। खेलते-खेलते अचानक बच्चा उसके हाथ से छूट गया और सीधे मुंह के बल गिर पड़ा। गिरते ही बच्चे की हालत गंभीर हो गई और उसकी सांसें धीमी पड़ने लगीं। परिवार में अफरा-तफरी मच गई। परिजन तुरंत बच्चे को लेकर एमवाय पहुंचे, लेकिन जांच के बाद डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। परिजनों ने बच्चे का पोस्टमार्टम कराने से इनकार कर दिया है। उनका कहना है कि यह एक हादसा था और वे आगे कोई कानूनी प्रक्रिया नहीं चाहते।

नक्शे के विपरीत बने 3 मंजिला मकान को नगर निगम ने तोड़ा

अवैध निर्माण पर कार्रवाई, पार्किंग में बनाए थे कमरे

इंदौर। नगर निगम ने मंगलवार को अवैध निर्माण के खिलाफ सख्त रुख अपनाते हुए साउथ टोड़ा इलाके में एक तीन मंजिला इमारत को जमींदोज कर दिया। यह निर्माण निर्धारित नक्शे और अनुमति के विपरीत किया जा रहा था, जिस पर पहले ही नोटिस जारी किया जा चुका था, लेकिन मालिक ने उसे नजरअंदाज कर दिया। जानकारी के अनुसार, करीब 3000 स्क्वेयर फीट क्षेत्र में यह निर्माण किया जा रहा था। जोन क्रमांक 11 के बिल्डिंग अधिकारी गीतेश तिवारी ने बताया कि मकान मालिक शफी शेख ने स्वीकृत प्लान का उल्लंघन करते हुए निर्माण कराया था। जांच में पाया गया कि ग्राउंड फ्लोर, जिसे पार्किंग के लिए छोड़ा जाना था, वहां अवैध रूप से कमरे बना दिए गए थे। इसके अलावा भवन के सामने के मार्जिन ओपन स्पेस (एमओएस) में भी नियमों का उल्लंघन किया गया।

नोटिस का असर नहीं

नगर निगम अधिकारियों के मुताबिक, मकान मालिक को पहले नोटिस देकर सुनवाई का अवसर दिया गया था और निर्माण हटाने के लिए 15 दिन का समय भी दिया गया था। बावजूद इसके, जब अवैध निर्माण नहीं हटाया गया, तो निगम ने सख्त कार्रवाई करते हुए इसे तोड़ने का फैसला लिया। कार्रवाई के दौरान निगम की टीम के साथ पुलिस तैनात रही। पूरे ऑपरेशन में तीन पोकलेन और दो जेसीबी मशीनों का उपयोग किया गया। हालांकि, कार्रवाई के दौरान किसी प्रकार का विरोध या विवाद सामने नहीं आया।

रिश्वतखोरी पर अब कड़ी सजा, लोकायुक्त नई धाराएं जोड़कर सख्त रवैया अपनाएगा

जो अफसर पकड़े गए, उन पर शिकंजा, 28 मामलों में पूरक चालान जल्द

इंदौर। रिश्वत लेते पकड़े गए अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए अब मुश्किलें और बढ़ने वाली हैं। हाई कोर्ट के एक अहम फैसले के बाद ऐसे मामलों में केवल चार वर्ष नहीं, बल्कि दस वर्ष तक की सजा का प्रावधान लागू हो सकता है।

न्यायालय ने स्पष्ट किया है कि रिश्वत लेना केवल अपराध ही नहीं, बल्कि अवैध रूप से संपत्ति अर्जित करना भी माना जाएगा। इस फैसले के बाद लोकायुक्त संगठन ने इंदौर संभाग के 28 मामलों को चिन्हित किया है, जिनमें अफसर और कर्मचारी रिश्वत लेते हुए पकड़े गए थे। इन मामलों में अब भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम की धारा 7 के साथ धारा 13 (1)(बी) भी जोड़ी जाएगी। इस धारा के तहत दोष सिद्ध होने पर दस वर्ष तक की सजा हो सकती है।

पूरक चालान पेश किए जा रहे

लोकायुक्त अधीक्षक पुलिस डॉ राजेश सहाय के अनुसार, न्यायालय के आदेश

कई अफसर इसमें फंसेंगे

न्यायालय के इस फैसले के बाद कई ऐसे आरोपी अब कड़ी सजा के दायरे में आ सकते हैं, जो रिश्वत लेते हुए पकड़े गए थे। इनमें आयकर विभाग के अधिकारी महादिओम तत भी शामिल हैं, जिन्हें एक लाख रुपये लेते समय पकड़ा गया था। प्रमोद तोमर ने कार्यालय में अपने बैग में एक लाख रुपये रखवाए थे, जबकि संतोष जोशी बीमारी के बावजूद रिश्वत लेने के लिए दौड़कर पहुंचे थे। अनिता सिंह को प्रधान आरक्षक बनने से पहले ही थाने में रिश्वत लेते पकड़ा गया था। गीता विजयवर्गीय ने पांच हजार रुपये में कमी होने पर शिकायतकर्ता से विवाद किया था। ईश्वर नाथ योगी, जो स्वयं पुलिसकर्मी है, भर्ती कराने के नाम पर एक लाख रुपये लेते हुए पकड़ा गया था।

के बाद इन प्रकरणों में पूरक चालान पेश किए जा रहे हैं। जिन मामलों में पहले ही चालान प्रस्तुत हो चुका है, उनमें भी न्यायालय से अनुमति लेकर संशोधन किया जाएगा।

इन मामलों में पंचायत, नगर निगम, पुलिस, स्वास्थ्य, राजस्व सहित कई विभागों के कर्मचारी शामिल हैं। यह निर्णय उस मामले में आया, जिसमें प्रदीप कुमार श्रीवास्तव को लोकायुक्त ने रिश्वत लेते हुए पकड़ा था। जांच के बाद उनके खिलाफ चालान पेश किया गया, लेकिन उन्होंने विशेष न्यायालय द्वारा तय आरोपों को चुनौती दी। उनका कहना था कि उनके खिलाफ केवल धारा 7 ही लागू होती है। इस पर न्यायालय ने कहा कि रिश्वत वैध आय का स्रोत नहीं है और इसे अवैध संपत्ति अर्जित करने की श्रेणी में रखा जाएगा, इसलिए धारा 13 (1)(बी) भी लागू करना उचित है।

ये आरोपी आएंगे दायरे में

इसके अलावा अजय कुमार व्यास, विनोद प्रजापति, प्रकाश शाह, सतीश जोशी, राकेश कुमार सिंहल, अंकित उपाध्याय, राजेंद्र तिवारी, प्रमोद नेमावत, दीपक मिश्रा, यशवंत जाटव, विजेंद्र धाकड़, दीपक पटेल, मोहन सिंह सिकरवार, गया प्रसाद वर्मा, गयासुद्दीन, रोहित बंडवाल, चंद्रमोहन गर्ग, अमर सिंह मंडलोई, संजय सांगत, जितेंद्र कोकाटे, राकेश पुरी और जसवंत सिंह यादव जैसे कई अन्य आरोपी भी अब इस सख्ती के दायरे में आएंगे। उच्च न्यायालय की द्वैध पीठ ने अपने फैसले में यह भी स्पष्ट किया कि रिश्वत लेना सीधे-सीधे अवैध संपत्ति अर्जित करना है। इसी आधार पर आरोपियों द्वारा दायर याचिकाओं को खारिज कर दिया गया। इस फैसले के बाद प्रदेश में भ्रष्टाचार के खिलाफ कार्रवाई और तेज होने के संकेत मिल रहे हैं।

संपादकीय

गुजरातः 'आप' को झटका

यूं भाजपा का अपने गढ़ गुजरात में चुनाव जीतना कोई बड़ी खबर नहीं है, लेकिन राज्य में अगले साल होने वाले विधानसभा चुनावों के मद्देनजर स्थानीय निकाय चुनावों में भाजपा की बंपर जीत इस बात को स्पष्ट संकेत है कि वहां भाजपा का कोई विकल्प नहीं है। विपक्षी कांग्रेस की हालत तो पतली है ही, हाल के वर्षों में प्रदेश में तीसरे विकल्प के रूप में उभरी आप (आम आदमी पार्टी) का भी इस चुनाव में लगभग सफाया हो जाना न सिर्फ चौंकाने वाला है, बल्कि इस बात का साफ इशारा है कि दिल्ली में पार्टी के बिखरने की आंच अब उन राज्यों तक भी पहुंच गई है, जहां आप को एक संभावना के रूप में देखा जा रहा था। गुजरात में हाल में हुए स्थानीय निकायों के चुनाव में भाजपा ने राज्य के सभी 15 नगर निगमों में अपनी जीत का परचम फहरा दिया है। यानी प्रदेश के शहरों में उसका जनसमर्थन अबाधित है। इनमें से भी मेहसाणा, मोरबी, नाडियाड और वापी ऐसे नगर निगम है, जहां पहली बार चुनाव हुए थे। गौरतलब है कि हाल में राज्य के 15 नगर निगम, 84 नगरपालिका, 34 जिला पंचायत और 260 तालुका पंचायत के लिए 26 अप्रैल को वोटिंग हुई थी। इसमें 4 करोड़ 18 लाख से ज्यादा मतदाताओं ने वोट डाले थे। नतीजों से साफ है कि भाजपा वहां मतदाताओं के दिल से नहीं उतरी है। पिछले चुनाव में बीजेपी ने 8470 में से 6236 सीटें जीती थीं। इस चुनाव में कुछ बड़े नाम भी खेत रहे हैं। जैसे कि मशहूर क्रिकेटर रवींद्र जडेजा की बहन नयनाबा कांग्रेस की टिकट पर राजकोट से हार गई हैं। सूरत नगर निगम की 120 सीटों में से भाजपा ने 115 सीटें जीती हैं। वहीं आप 4 सीटों पर सिमट गई। जबकि 2021 के स्थानीय निकाय चुनावों में आप ने 27 सीटें जीती थीं। इन चुनावों का एक और महत्वपूर्ण संकेत असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी एआईएमआईएम की घटती लोकप्रियता है। भुज नगर पालिका में उसके 3 उम्मीदवार जीते हैं। पिछले स्थानीय निकाय चुनाव में उसके 7 उम्मीदवार जीते थे। इस चुनाव में कुछ दिलचस्प नजारे भी देखने को मिले। मसलन चूड़ियां बेचने वाली संजीबेन कांग्रेसिया बहुचराजी नगरपालिका के वार्ड-4 से पार्षद बनीं तो भरूच के पालेज तालुका पंचायत सीट पर कांग्रेस उम्मीदवार को सिर्फ 1 वोट से जीत मिली। इसी तरह भेसन सीट पर बीजेपी के पूर्व विधायक भूपतभाई भयानी की हार हुई। उन्हें आम आदमी पार्टी के दिनेश रूपारेलिया ने 1700 वोटों से हराया। निश्चय ही इन नतीजों का राज्य में अगले साल होने वाले विधानसभा चुनावों की दृष्टि से विशेष महत्व है। गुजरात में भाजपा से तीन दशकों से सत्ता पर काबिज है। उसने इसे हिंदुत्व की प्रयोगशाला बनाया हुआ है। बीच में आए कुछ राजनीतिक उतार-चढ़ावों को अलग रखें तो प्रदेश में भाजपा की जड़ें बहुत गहरी जम चुकी हैं। दरअसल गुजरात हिंदुत्व और आर्थिक विकास का ऐसा मॉडल बन चुका है, जिसे भाजपा अन्य राज्यों में भी दोहराने की कोशिश करती आई है। इस चुनाव में सबसे बड़ा झटका आप को लगा है। क्योंकि दिल्ली और पंजाब के बाद गुजरात ऐसा राज्य रहा है, जहां आप तीसरी ताकत के रूप में उभरने की कोशिश कर रही थी। लेकिन हाल में पार्टी में जो अंतर्कलह मची है, गुजरात भी उससे अछूता नहीं रहा है। आप के बड़े नेता पार्टी छोड़कर भाजपा में जा रहे हैं। इससे आप का जनाधार सिकुड़ता जा रहा है। वह अपने रास्ते और उद्देश्य से भटक चुकी है। आप के सुप्रीमो भले ही बापू की समाधि पर कितने ही सत्याग्रह क्यों न कर लें, पार्टी को अब फिर से खड़ा करना आसान नहीं है।

नजरिया

नृपेन्द्र अभिषेक नृप

लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।

सड़कों को मौत नहीं, जीवन का रास्ता बनाएं

जवाबदेही की कमी भी इस समस्या को और गंभीर बनाती है। सड़क प्रबंधन में कई एजेंसियाँ शामिल होती हैं– राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण, राज्य सरकारें, ट्रैफिक पुलिस और स्थानीय प्रशासन। लेकिन इनके बीच समन्वय की कमी के कारण काम सही ढंग से नहीं हो पाता। जब कोई दुर्घटना होती है, तो जिम्मेदारी तय करना मुश्किल हो जाता है और अक्सर कोई ठोस कार्रवाई नहीं होती। इस बिखरी हुई व्यवस्था के कारण लापरवाही बनी रहती है और सुधार की गति धीमी पड़ जाती है। न्यायपालिका ने इस स्थिति को सुधारने के लिए कई निर्देश दिए हैं, जैसे अतिक्रमण हटाना, पार्किंग को नियंत्रित करना, आधुनिक निगरानी प्रणाली लगाना और विभिन्न एजेंसियों के बीच बेहतर तालमेल सुनिश्चित करना।

सड़कें जीवन को जोड़ने के लिए बनाई जाती हैं, उसे समाप्त करने के लिए नहीं। लेकिन भारत में आज हालात कुछ और ही कहानी कहते हैं। खासकर राजमार्गों और एक्सप्रेसवे पर बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं ने इन जीवनदायी रास्तों को मानो 'मौत के गलियारे' में बदल दिया है। यह चिंताजनक स्थिति केवल चालकों की लापरवाही का परिणाम नहीं है, बल्कि यह हमारी अव्यवस्थित योजना, कमजोर कानून-प्रवर्तन और प्रशासनिक जवाबदेही की कमी का सम्मिलित दुष्परिणाम है। हाल ही में न्यायपालिका द्वारा जताई गई चिंता और दिए गए निर्देश इस संकट की गंभीरता को स्पष्ट करते हैं, लेकिन जब तक व्यवस्था की गहराई में मौजूद खामियों को दूर नहीं किया जाएगा, तब तक ये प्रयास केवल अस्थायी राहत ही बनकर रह जाएंगे।

भारत में सड़क नेटवर्क का तेजी से विस्तार, विशेषकर राष्ट्रीय राजमार्गों और एक्सप्रेसवे का निर्माण, विकास और प्रगति का प्रतीक माना जाता है। बेहतर कनेक्टिविटी, कम यात्रा समय और व्यापारिक सुगमता ने अर्थव्यवस्था को गति दी है। लेकिन इस विकास की एक बड़ी कीमत भी चुकानी पड़ रही है। आंकड़े बताते हैं कि देश की कुल सड़कों में राष्ट्रीय राजमार्गों की हिस्सेदारी बहुत कम है, फिर भी सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मौतों का बड़ा हिस्सा इन्हीं पर होता है। यह स्थिति इस बात का संकेत है कि समस्या केवल यातायात की संख्या नहीं, बल्कि सड़क निर्माण की गुणवत्ता, डिजाइन और प्रबंधन से जुड़ी है। राजमार्गों पर दुर्घटनाओं का एक बड़ा कारण ट्रैफिक नियमों का पालन न करना है। तेज गति यानी ओवरस्पीडिंग आज भी सबसे बड़ी वजह बनी हुई है। जिन सड़कों को तेज और सुगम यात्रा के लिए बनाया जाता है,वहीं गति नियंत्रण के पर्याप्त साधन नहीं होते। इसके साथ ही लापरवाह ड्राइविंग, जैसे लेन अनुशासन की कमी, अचानक ओवरटेक करना और सुरक्षा नियमों की अनदेखी दुर्घटनाओं के खतरे को और बढ़ा देती है। जब नियमों का पालन सख्ती से नहीं होता, तो लोग उन्हें हल्के में लेने लगते हैं और यही लापरवाही जानलेवा साबित होती है।

एक बड़ी समस्या है राजमार्गों के किनारे अवैध पार्किंग और अतिक्रमण। अक्सर ट्रक और बसें सड़क के किनारे या कई बार मुख्य मार्ग पर ही खड़ी कर दी जाती हैं, खासकर रात के समय। तेज रफ्तार से चल रहे वाहनों के लिए यह अचानक सामने आने वाली बाधा घातक साबित होती है। इसके अलावा, सड़क किनारे ढाबे, दुकानें और अस्थायी बाजार भी अतिक्रमण कर लेते हैं, जिससे पैदल लोगों की आवाजाही बढ़ जाती है और यातायात बाधित होता है। ये सभी स्थितियाँ मिलकर सड़कों को असुरक्षित और अनिश्चित बना देती हैं। इन्फ्रास्ट्रक्चर की कमियाँ भी दुर्घटनाओं को बढ़ाने में बड़ी भूमिका निभाती हैं। कई जगहों पर सड़कें ठीक तरह से डिजाइन नहीं की गई होतीं, संकेतक (साइन बोर्ड) पर्याप्त नहीं होते, रोशनी की कमी रहती है और जरूरी जगहों पर सुरक्षा बैरियर नहीं लगाए जाते। कई बार राजमार्ग घनी आबादी वाले क्षेत्रों से गुजरते हैं, लेकिन वहां पैदल पारपथ, सर्विस लेन या गति नियंत्रित करने के उपाय नहीं होते। इससे यह स्पष्ट होता है कि सड़क निर्माण में सुरक्षा को प्राथमिकता नहीं दी जाती, बल्कि केवल गति और विस्तार पर जोर दिया जाता है।

जवाबदेही की कमी भी इस समस्या को और गंभीर बनाती है। सड़क प्रबंधन में कई एजेंसियाँ शामिल होती हैं- राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण, राज्य सरकारें, ट्रैफिक पुलिस और स्थानीय प्रशासन। लेकिन इनके बीच समन्वय की कमी के कारण काम सही ढंग से नहीं हो पाता। जब कोई दुर्घटना होती है, तो जिम्मेदारी तय करना मुश्किल हो जाता है और अक्सर कोई ठोस कार्रवाई नहीं होती। इस बिखरी हुई व्यवस्था के कारण लापरवाही बनी रहती है और सुधार की गति धीमी पड़ जाती है। न्यायपालिका ने इस स्थिति को सुधारने के लिए कई निर्देश दिए हैं, जैसे अतिक्रमण हटाना, पार्किंग को नियंत्रित करना, आधुनिक निगरानी प्रणाली लगाना और विभिन्न एजेंसियों के बीच बेहतर तालमेल सुनिश्चित करना। ये कदम निश्चित रूप से जरूरी हैं, लेकिन इनकी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि इन्हें कितनी गंभीरता से लागू किया जाता है। हमारे देश में अक्सर अच्छे नियम बनाए जाते हैं, लेकिन उनका पालन सही ढंग से नहीं होपाता। इसलिए असली चुनौती नीतियाँ बनाना नहीं, बल्कि उन्हें जमीन पर उतारना है।

तकनीक भी सड़क सुरक्षा को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। स्मार्ट ट्रैफिक सिस्टम, स्पीड कैमरा, नंबर प्लेट पहचान प्रणाली और रियल-टाइम मॉनिटरिंग जैसे उपाय नियमों के पालन को सुनिश्चित कर सकते हैं। डेटा के आधार पर दुर्घटना-प्रवण क्षेत्रों की पहचान कर वहां विशेष कदम उठाए जा सकते हैं। लेकिन तकनीक तभी प्रभावी होगी, जब उसके साथ मजबूत प्रशासनिक व्यवस्था और जवाबदेही भी जुड़ी हो। सड़क सुरक्षा में आम लोगों की भूमिका भी बेहद अहम है। अक्सर इसे केवल सरकार की जिम्मेदारी माना जाता है, लेकिन यह हर नागरिक का कर्तव्य भी है। वाहन चलाते समय सीट बेल्ट लगाना, मोबाइल फोन का उपयोग न करना, लेन का पालन करना और गति सीमा का सम्मान करना जैसे छोटे-छोटे कदम भी कई जिंदगियाँ बचा सकते हैं। जागरूकता अभियान और सख्त दंड व्यवस्था लोगों में जिम्मेदारी की भावना विकसित कर सकते हैं।

हालांकि यह भी सच है कि केवल व्यक्तिगत सावधानी से समस्या का समाधान नहीं हो सकता। यदि सड़कें ही खराब हों, संकेतक न हों या अचानक अवरोध सामने आ जाए, तो सावधान चालक भी दुर्घटना का शिकार हो सकता है। इसलिए सड़क सुरक्षा को एक साझा जिम्मेदारी के रूप में देखना होगा, जिसमें सरकार और नागरिक दोनों की भूमिका समान रूप से महत्वपूर्ण हो। एक और महत्वपूर्ण पहलू है आपातकालीन सेवाओं की व्यवस्था। कई मामलों में समय पर इलाज मिलने से जान बचाई जा सकती है, लेकिन अक्सर एंबुलेंस देर से पहुंचती है या आसपास उचित चिकित्सा सुविधा उपलब्ध नहीं होती। यदि राजमार्गों के किनारे आधुनिक ट्रॉमा सेंटर और बेहतर एंबुलेंस नेटवर्क विकसित किए जाएँ, तो मृत्यु दर को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

सड़क दुर्घटनाओं की आर्थिक और सामाजिक कीमत भी बहुत बड़ी होती है। एक दुर्घटना केवल एक व्यक्ति की जान नहीं लेती, बल्कि पूरे परिवार को संकट में डाल देती है। कई बार परिवार का कमाने वाला सदस्य खो जाता है, जिससे आर्थिक और मानसिक दोनों तरह का नुकसान होता है। इस दृष्टि से सड़क सुरक्षा केवल एक तकनीकी मुद्दा नहीं, बल्कि एक मानवीय समस्या है, जिस पर तुरंत ध्यान देने की आवश्यकता है। अब समय आ गया है कि हम सड़क निर्माण और प्रबंधन के अपने दृष्टिकोण को बदलें। हर स्तर पर सुरक्षा को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, चाहे वह योजना बनाना हो, निर्माण करना हो या संचालन करना। अंतरराष्ट्रीय मानकों को अपनाना, नियमित सुरक्षा जांच करना और जोखिम कम करने वाले उपायों को लागू करना बेहद जरूरी है। साथ ही नियमों का उल्लंघन करने वालों के लिए सख्त दंड और पारदर्शी जवाबदेही व्यवस्था भी सुनिश्चित करनी होगी।

सच कहें तो यहां एक प्रश्न उठता है कि भारत विश्वस्तरीय सड़कें बना सकता है या नहीं, बल्कि यह है कि क्या वह उन्हें अपने नागरिकों के लिए सुरक्षित बना सकता है। ऐसा विकास, जो मानव जीवन की कीमत पर हो, वास्तव में विकास नहीं कहा जा सकता। सड़कें अवसर, प्रगति और जुड़ाव का प्रतीक होनी चाहिए, न कि भय और मृत्यु का। वास्तव में राजमार्गों पर बढ़ती दुर्घटनाएँ हमारे विकास मॉडल की कमजोरियों को उजागर करती हैं। नीतियाँ और न्यायिक निर्देश दिशा दिखाते हैं, लेकिन उनकी सफलता हमारे सामूहिक प्रयासों पर निर्भर करती है। अब समय है कि सड़कें मौत के गलियारे नहीं, बल्कि सुरक्षित और सुगम यात्रा के मार्ग बनें। तभी हम सच्चे अर्थों में विकास को सार्थक बना पाएंगे और मानव जीवन की गरिमा को बनाए रख सकेंगे।

मौसम

जयदेव राठी

लेखक अधिवक्ता हैं।

क्या बढ़ती गर्मी से लड़ने को तैयार है भारत?

देश और दुनिया इस समय एक ऐसे दौर से गुजर रहे हैं जहां गर्मी अब केवल मौसम का हिस्सा नहीं रही, बल्कि यह एक गहराता हुआ संकट बन चुकी है। अप्रैल से ही तापमान का 40 से 43 डिग्री के आसपास पहुंच जाना, मई-जून में45 डिग्री के पार जाना और रातों में भी गर्मी का कम न होना–ये संकेत साफ बताते हैं कि जलवायु का संतुलन तेजी से बिगड़ रहा है। आम आदमी के लिए यह केवल असुविधा नहीं, बल्कि स्वास्थ्य, रोज़गार और जीवन के हर पहलू पर असर डालने वाली गंभीर चुनौती बन गई है। बढ़ती गर्मी के पीछे सबसे बड़ा कारण जलवायु परिवर्तन है। पिछले कुछ दशकोंमें औद्योगिक विकास, बढ़ते वाहनों और ऊर्जा की खपत ने वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा को बहुत बढ़ा दिया है। ये गैसें पृथ्वी के चारों ओर एक परत बना देती हैं, जो सूर्य की गर्मी को बाहर जाने से रोकती है। परिणामस्वरूप पृथ्वी का औसत तापमान लगातार बढ़ता जा रहा है। यही कारण है कि पहले जो गर्मी सामान्य मानी जाती थी, अब वहअसहनीय हो गई है।

इसके साथ ही तेजी से हो रहा शहरीकरण भी इस समस्या को बढ़ा रहा है। शहरों में कंक्रीट के भवन, अब सडकें भी सिमेंट से बनने लगी हैं और हरियाली की कमी मिलकर 'हीट आइलैंड प्रभाव' पैदा करते हैं। इसका मतलब है कि शहरों का तापमान आसपास के ग्रामीण इलाकों से ज्यादा हो जाता है। जहां पहले पेड़-पौधे और मिट्टी प्राकृतिक रूप से तापमान को नियंत्रित करते थे, वहीं अब कंक्रीट और लोहे की संरचनाएं गर्मी को सोखकर उसे और बढ़ा देती हैं। यही वजह है कि शहरों में रहने वाले लोग अधिक गर्मी का सामना कर रहे हैं। प्राकृतिक असंतुलन भी एक बड़ा कारण है। पहले मौसम चक्र अपेक्षाकृत संतुलित था–समय पर बारिश, ठंडी हवाएं और मौसमी बदलाव एक लय में चलते थे। लेकिन अब यह लय टूट चुकी है। पश्चिमी विक्षोभ कमजोर पड़ रहे हैं, मानसून अनियमित हो रहा है और कई बार लंबे समय तक बादल नहीं बनते। इससे जमीन सूखजाती है और जब मिट्टी में नमी कम होती है, तो वह अधिक गर्मी को अवशोषित करती है, जिससे तापमान और बढ़ जाता है।

बढ़ती गर्मी के प्रभाव अब हर क्षेत्र में साफ दिखाई देने लगे हैं। स्वास्थ्य के लिहाज से यह सबसे खतरनाक साबित हो रही है। हीट स्ट्रोक,डिहाइड्रेशन, चक्कर आना, थकान और हृदय से जुड़ी समस्याएं तेजी से बढ़ रही हैं। विशेष रूप से बुजुर्ग, बच्चे और मजदूर वर्ग इस गर्मी के सबसे बड़े शिकार बन रहे हैं। कई मामलों में अत्यधिक गर्मी जानलेवा भी साबित हो रही है।

कृषि क्षेत्र पर इसका असर और भी गंभीर है। तेज गर्मी और पानी की कमी के कारण फसलें समय से पहले सूख जाती हैं। गेहूं, चावल और अन्य प्रमुख फसलों की पैदावार पर इसका

सीधा असर पड़ रहा है। किसान पहले ही प्राकृतिक आपदाओंसे जूझ रहा है, और अब बढ़ती गर्मी उसकी मुश्किलों को और बढ़ा रही है। इससे न केवल किसानों की आय प्रभावित होती है, बल्कि देश की खाद्य सुरक्षा भी खतरे में पड़ जाती है।

जल संकट भी इस समस्या का एक बड़ा पहलू बन चुका है। गर्मी बढ़ने से नदियों, तालाबों और झीलों का जल स्तर घटने लगता है। भूजल तेजी से नीचे जारहा है, जिससे पीने के पानी की समस्या गंभीर होती जा रही है। कई शहरों और गांवों में पानी के लिए लंबी कतारें लगना अब आम बात हो गई है। यह स्थिति आने वाले समय में और भी विकट हो सकती है यदि समय रहते कदम नहीं उठाए गए। आर्थिक दृष्टि से भी गर्मी का प्रभाव कम नहीं है। अत्यधिक गर्मी के कारणकाम के घंटे घट जाते हैं, खासकर निर्माण कार्य, खेती और अन्य बाहरी कामोंमें लगे लोगों के लिए। इससे उत्पादन कम होता है और आय पर असर पड़ता है। उद्योगों में बिजली की मांग बढ़ने से ऊर्जा संकट भी पैदा होता है, जिससे लागत बढ़ती है और आर्थिक दबाव बढ़ता है। यह सवाल उठता है कि क्या इस बढ़ती गर्मी को रोका जा सकता है? वास्तविकतायह है कि यह एक वैश्विक समस्या है और इसे तुरंत रोकना संभव नहीं है। लेकिन इसके प्रभाव को कम करना और खुद को सुरक्षित रखना पूरी तरह हमारे हाथ में है। यही वह क्षेत्र है जहां व्यक्तिगत और सामूहिक प्रयास महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

व्यक्तिगत स्तर पर कुछ सावधानियां बहुत कारगर साबित हो सकती हैं। दिन के सबसे गर्म समय, यानी दोपहर 12 से 3 बजे के बीच बाहर निकलने से बचना चाहिए। यदि बाहर जाना जरूरी हो, तो सिर को ढंककर और हल्के, ढीले कपड़ेपहनकर ही निकलें। पानी, छाछ, नींबू पानी और अन्य तरल पदार्थों का सेवन अधिक करें ताकि शरीर में पानी की कमी न हो। शरीर को ठंडा रखने के लिए समय-समय पर विश्राम करना भी जरूरी है।घर के स्तर पर भी कुछ छोटे बदलाव बड़ा असर डाल सकते हैं। घरों में पौधे लगाना, छतों पर हरियाली बढ़ाना और प्राकृतिक वेंटिलेशन का उपयोग करना तापमान को कम करने में मदद करता है। दिन के समय खिड़कियों को बंद रखकर और रात में खोलकर ठंडी हवा का लाभ लिया जा सकता है। पारंपरिक तरीकों, जैसे मिट्टी के घड़े का पानी और छायादार स्थानों का उपयोग भी आज के समय में प्रासंगिक हो गया है।

समाज और सरकार की भूमिका इस समस्या से निपटने में सबसे महत्वपूर्ण है। शहरों में अधिक पेड़ लगाना, पार्क और ग्रीन जोन विकसित करना, और जल संरक्षण के उपायों को बढ़ावा देना जरूरी है। कई राज्यों में 'हीट एक्शन प्लान' लागू किए जा रहे हैं, जो लोगों को जागरूक करने और आपातकालीन सेवाओं को तैयार रखने में मदद करते हैं। इन योजनाओं को और प्रभावी बनाने की आवश्यकता है।

दीर्घकालिक समाधान की बात करें तो हमें अपने विकास के मॉडल पर पुनर्विचारकरना होगा। नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों, जैसे सौर और पवन ऊर्जा को बढ़ावा देना, प्रदूषण को कम करना और टिकाऊ शहरी विकास की दिशा में कदम उठाना अनिवार्य है। यदि हम आज इन उपायों को अपनाते हैं, तो भविष्य में आने वाली पीढ़ियों के लिए एक बेहतर और सुरक्षित पर्यावरण सुनिश्चित कर सकते हैं। बढ़ती गर्मी केवल एक मौसमी बदलाव नहीं, बल्कि एक चेतावनी है–प्रकृति की ओर से दी गई एक गंभीर चेतावनी। यदि हम इसे नजरअंदाज करते हैं, तो इसके परिणाम और भी भयावह हो सकते हैं। लेकिन यदि हम समय रहते जागरूक होकर सही कदम उठाते हैं, तो इस संकट को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। आखिरकार, यह समझना होगा कि हम प्रकृति से अलग नहीं हैं, बल्कि उसका ही हिस्सा हैं। जब प्रकृति असंतुलित होती है, तो उसका असर सीधे हमारे जीवन पर पड़ता है। इसलिए जरूरी है कि हम अपने व्यवहार, अपनी नीतियों और अपनी प्राथमिकताओं में बदलाव लाएं। तभी हम इस तपती धरती पर जीवन की ठंडक को बनाए रख सकते हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक संतुलित और सुरक्षित भविष्य सुनिश्चित कर सकते हैं।

प्याज हो साथ फिर ऐसी की क्या बात

कटाक्ष

अंशु प्रधान

लेखक व्यंग्यकार हैं।

एकबार अंधेर नगरी के महाराजा गर्मी के मौसम में नगर भ्रमण पर निकले। महाराज को देखते ही लोग चिल्लाने लगे, 'महाराज बड़ी गर्मी है, हम तो गर्मी से मरे जा रहे हैं। कृपा कर कोई व्यवस्था कीजिये ,नहीं तो कम से कम सरकार की ओर से कार्यालयों स्कूलों आदि में ऐसी ही लगवा दीजिए।' महाराज ने आश्चर्य से प्रजा को देखा और बोले, 'ऐसी ! आखिर ऐसी की ज़रूरत ही क्या है?' बड़ी हिम्मत करके भीड़ में से एक आदमी बोला, 'महाराज बहुत गर्मी है कार्यालयों में काम करना मुश्किल है। कृपा करें।' महाराज को अब थोड़ा गुस्सा आया,उन्होंने अपने कुर्ते की आस्तीनों को ऊपर चढ़ाया और हाथ को यूं झटका दिया मानों कि आस्तीन के सांपों को ही हो नीचे गिराया फिर वे थोड़ा सा मुस्कुराए और बोले ,'कहाँ है गर्मी ? मैं तो कार तक में ऐसी नहीं रखता और तुम झोपड़ी में ऐसी लगवाने की बात करते हो। शर्म आनी चाहिए तुम्हें। मैं तो बस एक प्याज की गांठ हर समय अपनी जेब मे रखता हूँ और मस्त रहता हूँ। जाओ तुम लोग भी एक प्याज हर समय अपनी जेब में रखो और आनंद मनाओ।'

अब तो लोगों के मुँह देखने लायक थे मगर कोई कुछ बोले इसके पहले ही महाराज फिर बोल पड़े, 'मंत्री ! पूरे नगर में मुनादी करवा दी जाए कि आज से सभी लोग जेब में प्याज लेकर घर से निकलें नगर के सारे ऐसी बंद कर दिए जाएं जो ऐसा न करेगा उसे फाँसी की सजा दी जाएगी।'

अब चूंकि राजा का आदेश था इसलिए नगर के सारे ऐसी बंद करवा दिए गए । नगर में प्याज की आवक बढ़ा दी गयी। जो प्याज तीस -चालीस रुपये बिकता था अचानक उसकी कीमतें आसमान छूने लगीं। कुछ लोग गर्मी से बेहाल होकर बीमार पड़ने लगे तो कुछ महंगाई से ,सारे नगर में त्राहि -त्राहि मच गई।

किसी को कुछ न सूझ रहा था कि राजा से कैसे निपटा जाए मध्य रात्रि में कुछ विद्वानों की सभा बुलायी गयी । वे सभी आपस में मंत्रणा करके फिर मंत्री के पास पहुंच गए और बोले,'मंत्री जी कृपा कर कुछ तो करिए । ऐसे तो सब मर जायेंगे । मंत्री ने लोगों को आश्वासन दिया कि वह महाराज से एक बार फिर बात करेगा, मामला टलता न देख मंत्री फिर महाराज के पास पहुंच गया और बोला,' राजन, नगर के सभी लोग बीमार पड़ रहे हैं। महाराज ने तुरंत ही पूछ लिया,'क्यों ! क्या वे जेब मे प्याज नहीं रख रहे हैं।' अगर वे बीमार पड़ रहे हैं तो उनसे कहो वे प्याज का शर्बत पियें, प्याज की सब्जी बनाये नहीं तो पकौड़े बनाएं, खाएं और खिलाएं। मेरे आदेश का तुरंत पालन किया जाए। 'महाराज भला क्यों मंत्री की बात को कान देते इसलिए उठापटक मचाके तुरंत ही वहाँ चले गए। मंत्री जी फिर मुँह ताकते रह गए। मंत्री जी उदास मुंह लेके फिर सभा में लौटे। सभा के लोगों ने उत्सुकता से पूछा, 'क्या हुआ ? महाराज ने क्या कहा?' मंत्री ने सारा हाल कह सुनाया तभी एक बूढ़े ने कहा मेरे पास एक युक्ति है अगर महाराज मान गए तो काम बन जाएगा। लोगों ने बूढ़े को यूँ देखा जैसे कि घोर अंधेरे में बहती तेज हवा में,जलती बुझती, हिलती- डुलती मोमबत्ती ! बूढ़ा बोला,'अगर मंत्री जी अपनी तरफ मिले रहें तो कौन देखने आएगा कि नगर में क्या हुआ क्या नहीं...।' बूढ़ा इतना कहकर चुप हो गया। तभी लोगों ने बूढ़े से उत्सुकता से पूछा, बताओ बताओ क्या युक्ति है। बुड्ढा बोला, 'मंत्री से कहो कि महाराज से कहे कि नगर में प्याज की बहुतायत होने से नगर का मौसम बदल गया है । अब महाराज ज़मीन पर पैर भी न रखें नहीं तो उन्हें सर्दी लग जायेगी। जहां तक हो सके राजमहल में ही रहें।जब भी महल से निकलें तो अपने चार्टेड हवाई जहाज से ही यात्रा करें और दूर दृष्टि का प्रयोग करें यही महाराज और नगर के लिए श्रेयस्कर है।'

मंत्री को भी बूढ़े की बात सही लगी वह बड़ी हिम्मत करके एकबार फिर राजा के पास पहुँच गया और बड़ी दयनीय सी सूरत बनाकर बोला,

'महाराज नगर में एकाएक ठण्डक बढ़ गयी है।'

महाराज ने आश्चर्य से पूछा, 'क्यों,ऐसा कैसे ? मंत्री बोला 'सरकार प्याज की वजह से।' महाराज फिर चकित हुए और पूछा,' प्याज की वजह से ? 'हां महाराज जब एक छोटे से प्याज से आपका पूरा बदन ठंडा रहता है ये जानकर लोगों ने घरों में,मकानों की छतों में, खेतों, कस्बों में हर जगह प्याज रखना शुरू कर दिया। इस वजह से एकाएक मौसम बदल गया। बादल फट गए और सर्दी बढ़ गयी । इसलिए आप महल में ही रहें जबतक कि प्याज नगर से कहीं दूर न फिकवा दिए जाएं। नहीं तो आपके अस्वस्थ होने का खतरा है।'

महाराज फिर गुस्सा हो गए बोले,'मंत्री ! क्या इस राज्य की प्रजा पूरी पागल है? मैंने तो प्याज की एक गांठ के बारे में बोला था। नगर में इतना प्याज बाहरी राज्यों से भी मँगवाने की क्या ज़रूरत थी। सुनो , ऐसा करो पता लगाओ किन लोगों ने अबैध तरीके से प्याज की हेरा- फेरी की है उन सभी को पकड़ लो और उन्हें फांसी पर लटकाया जाएगा ।'

महाराज का ये आदेश सुनते ही मंत्री हक्का- बक्का रह गया। मानों सिर मुड़ाते ही ओले पड़े हों। क्योंकि महाराज से इनाम पाने के चक्कर में मंत्री ने ही नगर में अंधाधुंध प्याज की खपत बढ़वा दी थी ।आनन- फानन में फिर सभा बैठी कि कोई उपाय तो निकले जिससे कि मंत्री की जान बचाई जाए। उस दिन से लेके आजतक बस सभाएं ही बैठ रही हैं और ढ़ाक के तीन पात के आधार पर सभी बहुमूल्य निष्कर्ष निकाले और स्थगित किये जा रहे हैं।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पंकज प्रिंटर्स एंड पैकेजिंग, 16, अल्फा इंडस्ट्रीयल पार्क, जाखिया, इंदौर, म.प्र.- 453555 से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

डॉ.महेन्द्र अग्रवाल

लेखक व्यंग्यकार हैं।

चौधरी ने खतम कर ली चौधराहट !

हमारे गांव में एक चौधरी जी थे,बिल्कुल विश्व बिरादरी के ठसकी चौधरी की तरह। महत्वाकांक्षी,नहीं महत्वोन्मादी, उच्छृंखता व उद्दंडता के पर्याय। किसी की न सुनने वाले ,बस सबको अपने मन की सुनाने वाले। आसपास के दस-बीस गांव में उनका बड़ा भारी रसूख़ था।अच्छेखासे पैसे वाले थे सो हवेली में नौकर-चाकर भी अपने-अपने काम पर लगे हुए थे।उन्हें कोई काम नहीं था ।सुबह उठना, दरबार लगाना, अपनी हांकना और मनचाही इधर उधर फेंकना। ऐसे ही दो चार शौक़ और थे जिनमें कुछ वर्णनीय हैं शेष अवर्णनीय। बड़े लोगों के कौन मुंह लगे? दूसरों के फटे में पांव देने की उनकी पुरानी आदत थी जो अब जग जाहिर हो चुकी थी।जब भी एक दो दिन में किसी के कपड़े फटे हुए या पांव डालने लायक नहीं दिखते तो खुद ही किसी कमज़ोर जान को पकड़कर उसके कपड़े फाड़ देते और अपनी टांग डालकर बैठ जाते ।फिर कहते -छोड़ दिया साले ! जा भाग के दिखा । कमज़ोर आदमी डर के मारे घिघ्घी बांधे वहीं खड़ा रहता। नकली वोट डालने के इच्छुक पकड़े गये फर्जी मतदाता की तरह। भागता भी कैसे? टांगे तो भागने को खुली हों? फिर वे उस पर शोले के गब्बर सिंह की तरह खुलकर हंसते, जमकर ठी-ठा करते, आसपास खड़े लोगों को देखकर-दिखाकर, मूंछों पर ताव देते।डर के मारे ग़रीब आदमी की मदद को कोई नहीं आता। सब यही सोचते कि कौन चौधरी जी से पंगा मोल ले ? सो उनकी चौधराहट की धाक अभी तक बनी हुई थी।

अब चौधरी जी तो विखंडित मानसिकता के मरीज थे सो रोज़ खुजली उठती ही थी ।जब मन होता बाल सुलभ मुस्कान के साथ बच्चों की तरह बिना सोचे समझे फिर नई शरारत को उतारू हो जाते। इस बार भी एक कमज़ोर से दिखने वाले को अचानक पकड़कर यही खेल दोहराने लगे।शायद किसी ने धार पर धर दिया था या चने के झाड़ पर चढ़ा दिया था। पर चौधरी जी को यह पता नहीं था कि यह मरियल सा दिखने वाला डेढ़ पसली का शख़्स जूडो कराटे व मार्शल आर्ट का चैंपियन है। चौधरी जी ने जैसे ही ठहाका लगाकर गांव वालों के सामने अपनी वीरता का प्रदर्शन करना चाहा, सामने वाले ने भी मुट्ठी बांधकर सीधे चौधरी की पसली में दे मारी।एक बार तो चौधरी साहब को लगा कि फेफड़े फट गए।पर किसी के सामने रो भी नहीं सकते।दर्द के मारे उचके तो उचक भी ना पाए क्योंकि पांव उसके पेंट की मोहरी में फंसा था।

अब तो चौधरी जी बार-बार उचकें पर निकल न पाएं और जब भी उचकें तभी वह उनकी पसली में दाएं-बाएं किसी भी तरफ से जमकर ठोक दे । एक बार तो चौधरी जी इतना घूम गए कि उसकी चोट सीधे उनके पुट्ठों पर पड़ी ।और कहीं पड़ती तो पता नहीं क्या होता? सारे गांव ने देखा कि चौधरी जी औंधे मुंह गिरते-गिरते बचे।अगर वाक़ई गिर जाते तो दो चार दांत अवश्य टूटते,हो सकता है पूरा जबड़ा भी हिलने लगता और उनका मुंह भी उनके अपने खून से भर जाता ।अब चौधरी जी बड़े परेशान ! उन्होंने लाख जतन किए पर छूट न पाए । कंबल समझकर नदी में लूटने कूदे पर वही रीछ निकला। वो छोड़ना भी चाहें तो रीछ न छोड़े । अब झक मारकर उन्होंने किनारे खड़े गांव वालों की ओर कातर दृष्टि से देखा।गांव वाले भी समझ गए कि चौधरी जी गलत उलझ गए इसलिए बीच बचाव करने की गुहार लगा रहे हैं । गांव के दो-तीन सयानों ने एक दूसरे को इशारा किया कि चौधरी जी अपने गांव के हैं सो अपनी भी इज्जत जुड़ी है । सबने मिलकर जैसे तैसे बात बनाई और दोनों को अलग-अलग किया ।लेकिन उस दिन जो हुआ तब से चौधरी ने शर्मिंदगी के मारे मुंह न उठाया,चौधराहट तो उसी दिन खत्म हो गई थी।अब वो दिन है कि चौधरी किसी ने हवेली के बाहर न देखा।

नृसिंह जयंती पर विशेष

योगेश कुमार गोयल

लेखक पत्रकार हैं।

अधर्म के अंत और अटूट विश्वास का शंखनाद है नृसिंह अवतार

पौराणिक कथा के अनुसार, हिरण्यकशिपु ने कठोर तपस्या करके ब्रह्मा से ऐसा वरदान प्राप्त किया, जिसने उसे लगभग अजेय बना दिया। वह न दिन में मारा जा सकता था, न रात में; न घर के भीतर, न बाहर; न अस्त्र से, न शस्त्र से; न मनुष्य से, न पशु से। यह वरदान उसके लिए केवल सुरक्षा कवच नहीं बल्कि अहंकार का विष बन गया। उसने स्वयं को ईश्वर घोषित कर दिया और समस्त प्रजा से अपनी ही पूजा करवाने लगा लेकिन इसी अंधकार के बीच उसके पुत्र प्रह्लाद ने सत्य और भक्ति का दीप जलाए रखा।

भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में कुछ पर्व केवल तिथियों के उत्सव नहीं बल्कि जीवन-दर्शन के ऐसे प्रकाशस्तंभ हैं, जो युगों-युगों तक मानवता को दिशा देते रहते हैं। नृसिंह जयंती ऐसा ही एक दिव्य पर्व है, जो यह उद्घोष करता है कि जब-जब अधर्म अपनी सीमाए लांघता है और अहंकार सत्य को चुनौती देता है, तब ईश्वर स्वयं धर्म की रक्षा के लिए अवतरित होते हैं। वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को मनाया जाने वाला यह पावन दिवस भगवान विष्णु के चौथे अवतार (नृसिंह) के प्राकट्य का प्रतीक है। इस वर्ष नृसिंह जयंती अथवा नृसिंह प्रकटोत्सव 30 अप्रैल को मनाई जा रही है। नृसिंह अवतार की सबसे अद्भुत विशेषता यह है कि यह ईश्वर के 'उग्र' और 'करुण' दोनों ही स्वरूपों का एक साथ दर्शन कराता है। आधा मनुष्य और आधा सिंह रूप में प्रकट होकर उन्होंने यह सिद्ध किया कि दिव्यता किसी सीमित परिभाषा में बंधी नहीं होती। यह अवतार केवल दैत्यराज हिरण्यकशिपु के अंत का कारण नहीं बना बल्कि इससे यह संदेश भी मिला कि जब अन्याय अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच जाता है, तब न्याय किसी अप्रत्याशित रूप में प्रकट होकर संतुलन स्थापित करता है।

पौराणिक कथा के अनुसार, हिरण्यकशिपु ने कठोर तपस्या करके ब्रह्मा से ऐसा वरदान प्राप्त किया, जिसने उसे लगभग अजेय बना दिया। वह न दिन में मारा जा सकता था, न रात में; न घर के भीतर, न बाहर; न अस्त्र से, न शस्त्र से; न मनुष्य से, न पशु से। यह वरदान उसके लिए केवल सुरक्षा कवच नहीं बल्कि अहंकार का विष बन गया। उसने स्वयं को ईश्वर घोषित कर दिया और समस्त प्रजा से अपनी ही पूजा करवाने लगा लेकिन इसी अंधकार के बीच उसके पुत्र प्रह्लाद ने सत्य और भक्ति का दीप जलाए रखा। यहां से इस कथा का सबसे गहरा आध्यात्मिक आयाम सामने आता है, एक ओर अहंकार से अंधा हुआ पिता और दूसरी ओर अटूट विश्वास से प्रकाशित पुत्र। प्रह्लाद की भक्ति केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं थी बल्कि वह सत्य के प्रति पूर्ण समर्पण का प्रतीक थी। उसे विष दिया गया, अग्नि में बैठाया गया, ऊंचाई से गिराया गया किंतु हर बार ईश्वर की अदृश्य कृपा ने उसकी रक्षा की। प्रह्लाद का विश्वास था, 'नारायण सर्वत्र हैं' और यही विश्वास अंततः साकार हो उठा। जब अत्याचार अपनी चरम सीमा पर पहुंच गया, तब वह ऐतिहासिक क्षण आया, जब ईश्वर ने एक ऐसी लीला रची, जो आज भी अद्वितीय मानी जाती है। एक जड़ खंभे से गर्जना के साथ प्रकट होकर भगवान विष्णु ने 'नृसिंह' रूप धारण किया। यह प्राकट्य केवल चमत्कार नहीं था बल्कि यह घोषणा थी कि ईश्वर जड़ और चेतन दोनों में समान रूप से विद्यमान हैं। उन्होंने संध्या समय, सभा भवन की देहरी पर, अपनी जंघा पर बैठाकर और अपने नखों से हिरण्यकशिपु का वध किया। इस प्रकार उन्होंने ब्रह्मा के वरदान की हर शर्त का उल्लंघन किए बिना ही उसका समाधान प्रस्तुत किया, यह दर्शाते हुए कि ईश्वरीय

बुद्धि मानव चातुर्य से कहीं अधिक व्यापक और सूक्ष्म होती है। नृसिंह अवतार का यह प्रसंग हमें यह संदेश भी देता है कि धर्म केवल बाहरी व्यवस्था नहीं बल्कि आंतरिक संतुलन है। जब मनुष्य अपने अहंकार में डूबकर स्वयं को सर्वोच्च मान लेता है, तब उसका पतन निश्चित हो जाता है। वहीं, जब कोई व्यक्ति प्रह्लाद की तरह सत्य, धैर्य और विश्वास का मार्ग अपनाता है, तब वह स्वयं ईश्वरीय संरक्षण का पात्र बन जाता है। इस अवतार का एक और महत्वपूर्ण संदेश है 'उग्रता में करुणा'। नृसिंह का रूप भले ही भयानक प्रतीत होता हो लेकिन वह केवल अधर्म के लिए उग्र है, भक्तों के लिए वही रूप अत्यंत कोमल और स्नेहमय बन जाता है। यह हमें यह सिखाता है कि शक्ति का उपयोग केवल न्याय और संरक्षण के लिए होना चाहिए, न कि अहंकार और दमन के लिए। वास्तविक सामर्थ्य वही है, जिसमें करुणा और न्याय का संतुलन हो। भारत के दक्षिण में स्थित 'अहोबिलम' इस अवतार से जुड़ा प्रमुख तीर्थ स्थल माना जाता है, जहां नल्लामाला की पहाड़ियों के बीच आज भी इस दिव्य घटना की गूंज महसूस की जा सकती है। यहां के प्राचीन मंदिर, गुफाएं और आध्यात्मिक वातावरण इस कथा को जीवंत बना देते हैं। श्रद्धालु यहां केवल दर्शन करने नहीं बल्कि उस दिव्य ऊर्जा का अनुभव करने आते हैं, जिसने कभी अधर्म का अंत किया था। नृसिंह जयंती का महत्व केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं है बल्कि यह आत्मचिंतन का भी अवसर है। यह हमें अपने भीतर के 'हिरण्यकशिपु' (अहंकार, क्रोध और लोभ) को पहचानने और उसे समाप्त करने का संदेश देता है। साथ ही, यह हमें प्रह्लाद की तरह अटूट विश्वास, धैर्य और सत्यनिष्ठा को अपनाने की प्रेरणा देता है। भगवद्गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं, 'परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृता', अर्थात् जब-जब धर्म की हानि होती है, तब मैं अवतरित होता हूं। नृसिंह अवतार इस सत्य का सजीव उदाहरण है। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं बल्कि हर युग में घटित होने वाली आध्यात्मिक प्रक्रिया है, जहां सत्य अंततः असत्य पर विजय प्राप्त करता है।

आज के समय में, जब समाज असत्य, अन्याय, हिंसा, नैतिक पतन जैसी अनेक प्रकार की चुनौतियों से जूझ रहा है, तब नृसिंह जयंती का संदेश और भी अधिक प्रासंगिक हो जाता है। यह हमें यह विश्वास दिलाता है कि चाहे परिस्थितियां कितनी भी कठिन क्यों न हों, यदि हमारा मार्ग सत्य का है और हमारा विश्वास अडिग है तो ईश्वर की कृपा अवश्य प्राप्त होती है। नृसिंह जयंती एक चेतना है धर्म की रक्षा की, सत्य की स्थापना की और अहंकार के विनाश की। यह हमें संदेश देती है कि ईश्वर केवल मंदिरों या ग्रंथों में ही नहीं बल्कि हर उस हृदय में निवास करते हैं, जहां सच्ची भक्ति, निष्कपट विश्वास और सत्य के प्रति अटूट निष्ठा होती है। इस पावन अवसर पर हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम अपने जीवन में प्रह्लाद जैसी आस्था और नृसिंह जैसी निर्भीकता को अपनाएं ताकि हम भी अपने भीतर और समाज में धर्म, न्याय और सत्य की स्थापना कर सकें।

दृष्टिकोण

अनिल त्रिवेदी

लेखक अधिवक्ता हैं।

आभासी दुनिया और वास्तविक दुनिया!

आभासी दुनिया जड़ और अचेतन वस्तुओं पर कोई असर नहीं करती हैं पर चेतन मन और जीवन के मूल स्वरूप को पूरी तरह से वास्तविक जीवन से परे ढकेलते हुए एक आभासी दुनिया जो वास्तव में मौजूद ही नहीं है का अत्यधिक आदी बनाने में सतत सक्रिय हैं। प्राकृतिक जीवन से जुड़ी मूल चेतना को आभासी गतिशीलता में बदलकर वास्तविक चेतना या प्राकृतिक जीवन को आभासी जड़ता में बदल डालती है। इस में सबसे ज्यादा उल्लेखनीय बात यह हैकि प्राकृतिक या वास्तविक दुनिया का मनुष्य अपने आप आभासी दुनिया में इतना अधिक आत्ममुग्ध हो जाता है कि उसके अंदर आभासी और वास्तविक का भेद करने की क्षमता ही लुप्त होने लगती है। पर यह सबकुछ होते हुए भी प्राकृतिक या वास्तविक दुनिया का मनुष्य अपने आप आभासी दुनिया में इतना अधिक आत्ममुग्ध हो जाता है कि उसके अंदर आभासी और वास्तविक का भेद करने की क्षमता ही लुप्त होने लगती है। पर यह सबकुछ होते हुए भी प्राकृतिक या वास्तविक दुनिया में मौजूद मनुष्येतर प्राणियों के मन मस्तिष्क और जीवनक्रम में आभासी दुनिया का शायद अब तक कोई असर नहीं हुआ है ऐसा अनुमान किया जा सकता है।

आभासी दुनिया न तो प्राकृतिक है साथ ही साथ वास्तविक भी नहीं है।पर वास्तविक या प्राकृतिक दुनिया के मनुष्यों पर आभासी दुनिया का प्रभाव बेतहाशा बढ़ता ही जा रहा है।देखने, सुनने, समझने के साथ साथ मनुष्यों के मन मस्तिष्क पर आभासी दुनिया का प्रभाव दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है।वास्तविक दुनिया में रहते हुए भी हम जीवन की मूल प्रकृति या वास्तविकता से लगातार धीरे धीरे ही सही पर थोड़े थोड़े दूर होते जा रहेहै और आभासी गतिविधियों को निरन्तर जाने अनजाने अपनाने ही नहीं,प्राण प्रण से मानने भी लगे हैं। आभासी दुनिया ने हमारे देखने सुनने और प्रतिक्रिया करने के तौर तरीकों को बहुत ही गहरे से बदल दिया है। हम में से कई लोगों की समझ तो यह भी बनने लगी है की आभासी दुनिया के बिना जीवन जीना ही अब संभव ही नहीं रहा है। इसमें कोई शक नहीं है कि आधुनिक दुनिया आभासी दुनिया की दीवानी होती जा रही है।जिस तेजी से आभासी दुनिया ने हमारी आंखों और कानों को बैठे बैठे ही व्यस्त ही नहीं अतिव्यस्त से लेकर अस्त-व्यस्त कर दिया है की हम हर दिन वास्तविक जीवन की निरन्तर चलने वाली प्राकृतिक गतिविधियों और आपाधापी से हर क्षण दूर होते जा रहे हैं।

वास्तविकता से परे जीवन को ले जाने में वैसे देखा जाए तो प्रकृति को कोई दिक्कत नहीं है और प्रकृति अपने अंश मनुष्य को आभासी दुनिया में धंसने या विलीन हो जाने से रोकती भी नहीं है। प्रकृति को मनुष्य के वास्तविक जीवन से छलांग लगा कर आभासी दुनिया में रच बस जाने में कोई भी दिक्कत या परेशानी नहीं महसूस हो सकती, जो कुछ भी परेशानी या द्वंद्व उठ खड़ा होता है वह प्राकृतिक मनुष्य के मन और जीवन में होता है। आभासी दुनिया पूरी तरह से आभासी है उसमें जीवन की रोजमर्रा की मशक्कत या सुख दुख भी नहीं आते जाते। आभासी दुनिया एक दम स्थितप्रज्ञ की तरह ही है। पर फिर भी वास्तविक दुनिया के मनुष्य को चौबीसों घंटों,बारहों महीनों भौंचक, अधीर और अस्थिर मन मस्तिष्क का बना चुकी हैं।

आभासी दुनिया जन्म और मृत्यु से परे तो है ही साथ ही साथ युद्ध और शांति से भी कोसों दूर है। आभासी दुनिया जड़ और अचेतन वस्तुओं पर कोई असर नहीं करती हैं पर चेतन मन और जीवन के मूल स्वरूप को पूरी तरह से वास्तविक जीवन से परे ढकेलते हुए एक आभासी दुनिया जो वास्तव में मौजूद ही नहीं है का अत्यधिक आदी बनाने में सतत सक्रिय हैं। प्राकृतिक जीवन से जुड़ी मूल चेतना को आभासी गतिशीलता में बदलकर वास्तविक चेतना या प्राकृतिक जीवन को आभासी जड़ता में बदल डालती है। इस में सबसे ज्यादा उल्लेखनीय बात यह हैकि प्राकृतिक या वास्तविक दुनिया का मनुष्य अपने आप आभासी दुनिया मेंइतना अधिक आत्ममुग्ध हो जाता है कि उसके अंदर आभासी और वास्तविक का भेद करने की क्षमता ही लुप्त होने लगती है। पर यह सबकुछ होते हुए भी प्राकृतिक या वास्तविक दुनिया में मौजूद मनुष्येतर प्राणियों के मन मस्तिष्क और जीवनक्रम में आभासी दुनिया का शायद अब तक कोई असर नहीं हुआ है ऐसा अनुमान किया जा सकता है। इस तरह एक बात तो यह तय है कि मनुष्यअपनी प्राकृतिक शक्तियों का मनमाना यांत्रिक विस्तार आभासी दुनिया में लिप्त रहकर अपने जीवन को जीने की आभासी पर राह चल पड़ा है। मनुष्य के अलावा बाकी सारे जीव अपने जीवन के प्राकृतिक रूप स्वरूप में बने हुए हैं। मनुष्य को अपने जीवन में जो ज्ञान या प्रत्यक्षीकरण का विस्तार प्राकृतिक रूप से मिला था वह आभासी दुनिया के आदी मनुष्य के लिए अब एक छोटे-से परदे में सिमट गया है। आभासी दुनिया के मनुष्य के लिए परदा ही जीवन है और जीवन ही परदा है। अंतहीन या शून्य अंतरिक्ष से लेकर महासागर की गहराई सब कुछ छोटे से परदे में समा गई है। आज आभासी दुनिया का समूचा सफर हाथ की दो चार अंगुलियों की गतिविधियों में सिमित हो गया है। इसी से आभासी दुनिया ने समूचे मनुष्य समाज को अपनी चंगुल में समेट लिया है। वास्तविक दुनिया में धूमने, जानने, समझने और देखने, लिखने, बोलने और सुनने के लिए जो नाना इंतजाम,धन, साधनों की जरूरत होती थी उसे कहीं भी बैठे-बैठे या लेटे लेटे या चलते फिरते भी मनुष्य स्क्रीन पर अपनी अंगुली के स्पर्श से ही सब कुछ सब कही करते रहने का साधन पा गया है। दुनिया भर में कहीं भी कुछ भी करना,देखना, भेजना या मंगाना हों तो यह आभासी दुनिया के मनुष्य के मन की कल्पना नहीं रहीं, आभासी दुनिया का साकार सत्य बन गया है। यही वह बिन्दु है कि निरक्षर से लेकर प्रकांड विद्वान और अरबपति से लेकर कंगाल, किसी भी देश के राष्ट्रपति से लेकर आम जनता सब कोई दुनिया भर के किसी भी कोने में रहते हुए इस आभासी दुनिया को अपनी अंगुलियों की गतिविधियों से अपने जीवन में साकार कर सकता है।भले ही प्राकृतिक रूप से मनुष्य को कुछ भी हासिल नहीं हो पा रहा हो पर आभासी दुनिया सब कुछ करते रहने का वास्तविक अनुभव देने के बजाय करते रहने का आभास तो भरपूर दे ही रही है। आभासी दुनिया में सत्य से साक्षात्कार भले ही नहीं हो पा रहा है पर स्वप्न के सत्य होने का आभासी अनुभव हम सबको बिना किसी भेद भाव के तो हो ही रहा है । आज के काल का यह दृश्य आज की आभासी दुनिया का वास्तविक सत्य है!

राजनीति

(राजीव खंडेलवाल)

(लेखक, कर सलाहकार एवं पूर्व अध्यक्ष, बैतूल सुधार न्यास)

आप- क्या भाजपा की 'बी' टीम? या 'सियासत का बदलता रंग'?

राजसभा में आम आदमी पार्टी (आप) के दो-तिहाई से ज्यादा 7 सदस्यों द्वारा संसदीय दल (राज्य सभा) का विभाजन कर भाजपा में शामिल होना कई सवाल खड़े करता है। इस घटनाक्रम ने अनायास ही फिल्म हम आप के हैं कौन? की याद दिला दी-पर यहाँ सवाल रिश्तों का नहीं, बल्कि राजनीतिक पहचान का है।

नाम बड़े और दर्शन छोटे खोटे

आम आदमी के नाम पर कुछ खास करने राजनीति में उतरी पार्टी क्या अब कुछ खास की होकर सत्ता की चमक-दमक में अपने मूल स्वरूप से दूर हो गई है?

कभी 'तुम' के अपनत्व से 'आप' के सम्मान तक की यात्रा करने वाली पार्टी अब कहीं ऊँची दुकान, फीका पकवान साबित तो नहीं हो रही? ''आप'' ''औपचारिक'' होकर भी थी, लेकिन निसंदेह 'सम्मानीय' शब्द था। परन्तु जिस तरह भ्रष्टाचार के मुद्दे को लेकर इंडिया अगेंस्ट करप्शन के बैनर तले जन आंदोलन खड़ा कर विशिष्ट ''पहचान'' (''नीति नहीं?'') लेकर स्थापित हुई ''आप'' पार्टी भ्रष्टाचार में कंठ तक डूब कर 'आप' रूपी ''औपचारिकता'' को भी इस कदर बदनाम कर दिया कि औपचारिक रूप से ''आप'' से मिलने में लोग दूरी बनाने लगे। वर्तमान तथ्य व सत्य यही है।

''आम'' के मौसम में यह तो होना ही था राजनीति में भी प्रकृति के नियम लागू होते हैं। यदि आम समय पर तोड़कर पकाने के लिए सुरक्षित न रखा जाए, तो उसका गिरना तय है। इसी संदर्भ में राघव चड्ढा जैसे नेताओं का पार्टी छोड़ना इस बात का संकेत देता है कि भीतर ही भीतर कुछ खिचड़ी पक रही थी।

कभी भ्रष्टाचार के खिलाफ झाड़ू लेकर निकली पार्टी आज खुद ही अपनी ही झाड़ू से भ्रष्टाचार की धूल झाड़ती नजर आ रही है। सवाल यह है-क्या यह सफाई है या अंदरूनी बिखराव? चूंकि देश में गहराई तक जड़े जमा चुका ''भ्रष्टाचार'' जो ''शिष्टाचार'' का आवरण पहन चुका है, को तो वे समाप्त कर नहीं सकते थे। वह इसलिए कि भ्रष्टाचार पर ''झाड़ू'' लगाने के लिए ''झाड़ू'' को उर्जा देने वाली शक्ति, ''जन लोकपाल'' का वास्तविक रूप व अर्थ में वैसा गठन ही नहीं हुआ? जिसकी मांग की गई थी। बल्कि जन हट कर सिर्फ लोकपाल बन गया।

सत्ता का चरित्र बदलना असंभव

पुरानी कहावत है-सत्ता आदमी को नहीं बदलती, आदमी सत्ता के रंग में रंग जाता है। अरविंद केजरीवाल ने अन्ना आंदोलन के दौरान जिस व्यवस्था पर तीखे सवाल उठाए, वही सवाल आज उनकी अपनी सरकार पर उठ रहे हैं। याद कीजिए! जन लोकपाल को लेकर दिल्ली के जंतर मंतर में किए गए अन्ना आंदोलन में अरविंद केजरीवाल समय पूर्व भारतीय राजस्व सेवा त्याग कर नौकरशाह से नेता बने (राजनेता नहीं?) दहाड़ कर मंच से चिल्लाते थे, देश की संसद चोर है, जिसमें लगभग 162 से ज्यादा सांसद दागी होकर उन पर आपराधिक प्रकरण चल रहे हैं। तत्समय उन्होंने चुनौती देते हुए कहा था कि वे सब संसद से इस्तीफा दे, मुकदमा लड़े, निर्दोष होकर चुनाव जीतकर फिर वापिस संसद में आएं। ''असली लोकतंत्र तो सड़क पर है, संसद में नहीं।

प्रकृति का नियम

कहा जाता है, जब सामने वाले पर दो उंगलियां उठाई जाती है, तो सत्ता ही स्वतः ही तीन उंगलियां अपनी ओर उठ जाती हैं। प्रकृति ने अपना रूप दिखाया। दूसरों पर उंगली उठाने वाले अरविंद केजरीवाल स्वयं पर व उनके अधिकांश मंत्रियों पर भ्रष्टाचार से लेकर विभिन्न अपराधिक

आरोप लगे। तब केजरीवाल ने स्वयं के जंतर मंतर के उद्घोष सिद्धांत के अनुसार एक भी आरोपी मंत्री को पद से नहीं हटाया और कहा यह सिर्फ प्रशासनिक ''तंत्रों'' सत्ता का दुरुपयोग कर भाजपा ने झूठे आरोपों में फंसाया है। यही कहना तो तत्समय उन दागी सांसदों का भी था। स्पष्ट है,जब अपने ही नेताओं पर आरोप लगे, तो नौ सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली जैसी स्थिति बनती दिखी। प्रश्न यह नहीं कि आरोप सही हैं या गलत-बल्कि यह कि सिद्धांत और व्यवहार में इतना अंतर क्यों?

आप विचारधारा या अवसरवाद

विचारधारा वाद या सिद्धांत लिए अन्य राजनीतिक दलों के समान आप की स्वयं की कोई विचारधारा नहीं है। आम आदमी पार्टी की उत्पत्ति अन्ना आंदोलन से अन्ना की अनिच्छा के रहते हुये हुई। यह आंदोलन स्वयं अन्ना का न होकर बल्कि भाजपा व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा प्रायोजित अन्ना को केन्द्र में रखकर किया गया था, जिसके सूत्रधार पर्दे के पीछे गोविंदाचार्य (संघ प्रचारक)थे। यूपीए सरकार को कथित रूप से अस्थिर करने के लिए यह आंदोलन चलाया गया था, जिसमें केजरीवाल मात्र मोहरे थे। लेकिन बाद में अन्ना आंदोलन की सफलता के चलते अरविंद केजरीवाल की तीव्र राजनीतिक इच्छा जाग्रत हो गई। इसी आप ने न केवल कांग्रेस को बल्कि भाजपा के शिखर पर व केंद्र में मोदी के रहते हुए दिल्ली के 7 सांसदों के रहने के बावजूद दिल्ली विधानसभा में तीन बार कड़ी मात दी। फलतः समय के साथ अलग-अलग राजनीतिक व्याख्याएँ होती रही हैं।

कभी आप को भाजपा की बी टीम कहा गया, तो कभी कांग्रेस के खिलाफ सबसे मजबूत विपक्ष ।यानी जिसकी लाठी, उसकी भैंस- राजनीतिक नैरेटिव परिस्थितियों के अनुसार बदलते रहे।

दिल्ली और पंजाब में शानदार जीत के बाद आप ने साबित किया कि वह आसमान से गिरी नहीं, जमीन से उगी पार्टी है। लेकिन हालिया घटनाएँ यह संकेत देती हैं कि पार्टी दो नावों की सवारी करने की कोशिश में संतुलन खो रही है।

राघव चड्ढा- प्रोफेशनल (सी.ए) से राजनीति के शिखर तक

राघव चड्ढा ने पार्टी छोड़ते समय कहा कि पार्टी अपने मूल सिद्धांतों से भटक गई है। बड़े दुखी मन से 'आप' से दूर जा रहा हूं। वास्तव में वे आप पार्टी या आप (आम जनता) से दूर जा रहे है? मन दुखी क्यों है? यह स्पष्ट नहीं। संस्थापक सदस्य होने के कारण पार्टी छोड़ने का दुख है अथवा अफसोस पार्टी के मूल सिद्धांत से भटक जाने पर उस भाजपा में जाने का दुख है? जिसे वे पानी पी-पी पीकर कोसते थे। राघव ने खुशी का इजहार नहीं किया? लेकिन सवाल उठता है

क्या घर का भेदी लंका ढाए वाली स्थिति है, या यह डूबते जहाज से कूदने जैसा निर्णय? अगर पार्टी गलत थी, तो इतने वर्षों तक साथ क्यों रहे? और यदि सही थी, तो अब अचानक क्या बदल गया?राजनीति में अक्सर साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे वाली रणनीति अपनाई जाती है-लेकिन जनता अब इन बारीकियों को समझने लगी है।

निष्कर्ष - दूध का दूध, पानी का पानी

राजनीति में जो व्यक्ति पार्टी छोड़ता है, वह उसे अपना सैद्धातिक रवैया दर्शाते हुए स्वयं को भटका हुआ न ठहरकर पार्टी को ही भटके हुए रास्ते पर चलने का आरोप आसानी से लगा देता है। क्या उसमें इतना साहस नहीं होना चाहिए कि भारतीय लोकतंत्र में जब बहू-पार्टियों का अस्तित्व है, तब वे कभी भी किसी पार्टी को कभी भी ज्वाइन कर सकते हैं। क्योंकि सब पार्टियों का मूल तो एक ही सिद्धांत देश हित का होना चाहिए, जो है। यद्यपि देश हित के तरीके अलग-अलग हो सकते है।

जरूरत इस बात की है कि राजनीतिक दल कथनी और करनी में अंतर कम करें।

अंततः जनता ही तय करती है—

कौन आम है और कौन खास,

कौन सच्चा है और कौन सियासी मुखौटा।

क्योंकि लोकतंत्र में देर हो सकती है, अंधेर नहीं और जनता सब देखती है, ऊँट किस करवट बैठता है यह भी।

स्वर्गीय खंडेलवाल स्मृति विधायक ट्राफी 3 नाइट टेनिस बाल प्रतियोगिता के शुभारंभ पर जमकर आतिशबाजी जलाई

सोहागपुर। स्थानीय रेल्वे ग्राउंड पर मंगलवार रात को स्वर्गीय मनोज खंडेलवाल की स्मृति में आयोजित विधायक ट्राफी 3 प्रीमियर लीग नाइट टेनिस बाल क्रिकेट प्रतियोगिता के शुभारंभ के अवसर पर रेल्वे ग्राउंड पर जमकर आतिशबाजी जलाई गई। इस अवसर पर नगर की प्रथम नागरिक,नगर निरीक्षक राहुल रायकवार सहित

जनप्रतिनिधियों के अलावा भाजपा के वरिष्ठ नेता, पदाधिकारी, कार्यकर्ता एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। इस गरिमामय स्वर्गीय मनोज खंडेलवाल स्मृति विधायक ट्राफी 3 प्रीमियर लीग नाइट प्रतियोगिता पर स्वर्गीय मनोज खंडेलवाल के सुपुत्र यश खंडेलवाल, पत्रकार संघ अध्यक्ष पवनसिंह चौहान एवं आयोजक रामप्रसाद वार्ड पार्षद आशीष विश्वकर्मा मालवीय विशेष रूप से उपस्थित थे। आयोजक पार्षद आशीष विश्वकर्मा मालवीय ने बताया कि मंगलवार को शुभारंभ के अवसर पर तीन क्रिकेट प्रतियोगिता रेल्वे ग्राउंड पर खेली गई। इस प्रतियोगिता का पहला मैच शिवांश क्लब एवं 72 फाइटर के बीच हुआ। इस मैच में 72 फाइटर्स ने 10 ओवर में 59 रन बनाए । इसके बाद शिवांश क्लब ने 8 ओवर में मैच जीत लिया। मेन ऑफ द मैच रोहित बंदीछोड़ को पुरस्कार प्रदान किया गया। दूसरा मुकाबला रामगंज टाइगर एवं 72 फाइटर्स के मध्य खेला गया। जिसमें में 72 फाइटर्स ने 10 ओवर में 86 रन बनाए। वहीं रामगंज टाइगर 72 रन बनाकर आउट हो गई। 72 फाइटर्स ने 14 रन से मैच जीत लिया। कपिल पटेल को मेन ऑफ द मैच के सम्मान से सम्मानित किया गया। प्रतियोगिता का तीसरा मैच में रामगंज टाइगर ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 96 रन बनाए। वहीं शिवांश क्लब 80 रन पर ऑल आउट हो गई। तीसरे मैच में मेन ऑफ द मैच साजवान चूचू को सम्मानित किया गया। इस प्रतियोगिता में एम्पायरिंग शिवम दुबे,ऋषभ रघुवंशी, नीरज कापरे, अभिषेक, हैदर,जतिन साहू ने की। स्कोरिंग प्रवेश चौहान,परिणय मालवीय, सिद्धार्थ मौर्य ,विशाल मालवीय ,मानस दीवान, अरबाज खान ने की। प्रतियोगिता के आंखों देखा हाल पत्रकार संघ अध्यक्ष पवनसिंह चौहान एवं अंकित श्रोती ने सुनाया। आज बुधवार को भी शाम 7 बजे से प्रतियोगिता के 3 मैच खेले जाएंगे ।मैच का लाइव प्रसारण आर एस गैलरी यू ट्यूब चैनल पर किया जा रहा है।

नशा मुक्ति जागरूकता के संबंध में जिला स्तरीय बैठक, शैक्षणिक संस्थाओं के समीप तंबाकू उत्पादों की बिक्री न हो : कलेक्टर सोमेश मिश्रा

सोहागपुर। कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा की अध्यक्षता में जिला स्तरीय एन-कॉर्ड समिति की बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में पुलिस अधीक्षक श्री साई कृष्ण एस. थोटा, जिला पंचायत

सीईओ श्री हिमांशु जैन, अपर कलेक्टर श्री बृजेंद्र रावत, संयुक्त कलेक्टर एवं सिटी मजिस्ट्रेट श्री देवेंद्र प्रताप सिंह, डिप्टी कलेक्टर श्रीमती सरोज परिहार, श्रीमती नीता कोरी सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित थे। बैठक में जिले में मादक पदार्थों को तस्करी, नशे की रोकथाम के लिए जन जागरूकता कार्यक्रम, जिले में नशा मुक्ति एवं पुनर्वास केंद्रों के पर्यवेक्षण के संबंध में आवश्यक चर्चा की गई।एन-कॉर्ड समिति की बैठक के दौरान कलेक्टर ने जिले में नशा मुक्ति अभियान को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए संबंधित अधिकारियों को कई महत्वपूर्ण निर्देश दिए।

जन परिषद के उपाध्यक्ष एवं वरिष्ठ एडवोकेट अन्नी भैया ने कहा

बैतूल हमारे लिए तीर्थ समान है

बैतूल। सामाजिक संस्था जन परिषद के उपाध्यक्ष एवं वरिष्ठ एडवोकेट अंकलेश्वर दुबे (अन्नी भैया) ने मुलताई में अपने संक्षिप्त प्रवास के दौरान कहा कि जन परिषद से जुड़े। बैतूल के बाहर के हजारों सदस्यों के लिए बैतूल, सामाजिक तीर्थ के समान है। क्योंकि बैतूल की माटी ने जिस जन परिषद को उसके शैशव काल में संरक्षित एवं पल्लवित किया, वही जन परिषद आज 37 वर्षों बाद एक विशाल वट वृक्ष का रूप ले चुकी है। पूरे देश में उसके 300 चैप्टर हैं । सात चैप्टर्स अन्य देशों में है । उन्होंने कहा कि वे बैतूल के नागरिकों को इस बेमिसाल सामाजिक उपलब्धि के लिए कृतज्ञता पूर्ण बधाई देते हैं। जन परिषद के मुलताई चैप्टर के अध्यक्ष नवीन ओंकार के अनुसार जन परिषद राष्ट्रीय स्तर की सामाजिक संस्था है, जो कि गत 37 वर्षों से सामाजिक एवं रचनात्मक कार्यों में सक्रिय होने के साथ साथ, कई ऐतिहासिक एवं अभूतपूर्व संदर्भ ग्रन्थों का प्रकाशन कर चुकी है। संस्था पर्यावरण पर बारह अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस आयोजित कर चुकी है। संस्था के इस समय पूरे देश में 300 से अधिक एवं विदेशों में 7 चैप्टर बन चुके हैं। संस्था प्रतिवर्ष उन व्यक्तियों को अलंकृत करती है, जो कि रचनात्मक एवं सामाजिक सुधार के कार्यों को मूर्तरूप दे रहे हैं। संस्था का मुख्य आधार मानवीय, सामाजिक एवं राष्ट्रीय दृष्टिकोण है।

समर्थन मूल्य पर चना खरीदी व्यवस्था चरमराई

सर्वर फेल, अव्यवस्थाएं हावी-किसानों को दो-दो दिन भटकना पड़ रहा, ट्रकों में भरा चना अटका

बैतूल/मुलताई। किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य समय पर दिलाने और खरीदी प्रक्रिया को सरल बनाने के उद्देश्य से शासन द्वारा समर्थन मूल्य पर चना खरीदी शुरू की गई है। लेकिन जमीनी हकीकत इसके विपरीत नजर आ रही है। अव्यवस्थित खरीदी केंद्र, तकनीकी खामियां और मूलभूत सुविधाओं की कमी ने इस पूरी व्यवस्था को किसानों के लिए बड़ी परेशानी बना दिया है। किसानों का कहना है कि पोर्टल पर लगातार सर्वर डाउन रहने के कारण स्लॉट बुकिंग नहीं हो पा रही है। इसके चलते किसान अपनी उपज बेचने के लिए दो-दो दिनों तक मंडी में भटकने को मजबूर हैं। इतना ही नहीं, सर्वर की समस्या के कारण बिलिंग प्रक्रिया भी पूरी तरह बाधित हो रही है, जिससे खरीदा गया चना परिवहन के लिए आगे नहीं बढ़ पा रहा है।

- **समिति ने अब तक खरीदा 3066 क्विंटल चना** – कृषि उपज मंडी परिसर में समर्थन मूल्य पर चना खरीदी का कार्य बहुउद्देशीय सेवा सहकारी समिति मर्यादित परमंडल द्वारा किया जा रहा है। संस्था प्रबंधक देवीदास नरवरे के अनुसार, 8 अप्रैल से शुरू हुई खरीदी में अब तक 3066 क्विंटल चना खरीदा जा चुका है। समिति अपने संसाधनों के माध्यम से सुबह से रात तक अधिक से अधिक किसानों की उपज खरीदने का प्रयास कर रही है। किसानों ने मांग की है कि भीड़ और अव्यवस्था को देखते हुए नजदीकी उपज गोदामों को भी खरीदी केंद्र बनाया जाए, ताकि उन्हें राहत मिल सके और खरीदी प्रक्रिया सुचारू रूप से चल सके।

एक ही स्थान पर गेहूं-चना खरीदी, जगह कम

कृषि उपज मंडी परिसर में एक ही स्थान पर गेहूं और चना दोनों की खरीदी की जा रही है । किसानों के अनुसार यह स्थल एक फसल की खरीदी के लिए भी पर्याप्त नहीं है, जिससे अव्यवस्था और भी बढ़ रही है । मंडी में किसानों के लिए पीने के पानी जैसी बुनियादी सुविधा तक उपलब्ध नहीं है, जिससे उनकी परेशानी दोगुनी हो रही है । परिवहन भी प्रभावित, ट्रक खड़े-खड़े हो रहे खराब-सर्वर और बिलिंग की समस्या का असर परिवहन व्यवस्था पर भी साफ दिखाई दे रहा है । ट्रक मालिकों को भारी नुकसान उठाना पड़ रहा है । ट्रक मालिक संजू रघुवंशी के अनुसार, उनके 10 चक्का ट्रक (क्रमांक रूक्क 09 स्न 3948) में करीब 250 क्विंटल चना पिछले दो दिनों से लोड है, लेकिन बिलिंग न होने के कारण ट्रक वहीं खड़ा है । इससे उन्हें आर्थिक नुकसान के साथ अन्य समस्याओं का भी सामना करना पड़ रहा है ।

इनका कहना है

सर्वर, स्लॉट बुकिंग, बिलिंग और स्थान की समस्याएं हमारे स्तर की नहीं हैं। इसके बावजूद हम लगातार प्रयास कर रहे हैं कि अधिक से अधिक किसानों की उपज समय पर खरीदी जा सके।

देवीदास नरवरे, संस्था प्रबंधक, बहुउद्देशीय सेवा सहकारी समिति मर्यादित परमंडल, मुलताई

आरएसके कार्यालय में रक्तदान शिविर आज

बैतूल। समाज सेवा और मानवता के उद्देश्य से आज 30 अप्रैल को लिंक रोड स्थित आरएसके कार्यालय में रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा। यह शिविर लोगों को रक्तदान के माध्यम से जरूरतमंदों की मदद करने का अवसर प्रदान करेगा। आयोजकों ने सभी नागरिकों से अपील की है कि वे अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर रक्तदान करें और इस पुनीत कार्य में अपना योगदान दें। बताया गया है कि रक्तदान का एक छोटा प्रयास भी किसी जरूरतमंद के लिए नई जिंदगी की उम्मीद बन सकता है। आयोजकों ने लोगों से इस नेक पहल को सफल बनाने और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाने का आह्वान किया है।

पीएम स्वनिधि योजना में प्रदेश में तीसरे स्थान पर बैतूल जिला

लक्ष्य के 85 प्रतिशत वेंडरों को किया ऋण का वितरण

बैतूल। पीएम स्वनिधि योजना में बैतूल जिला प्रदेश में तीसरे स्थान पर है। यह योजना 1 जून 2020 से शुरू की गई थी। इस योजना के तहत बैतूल जिले में अब तक 31503 लोगों (स्ट्रीट वेंडर) को ऋण वितरित किया गया है, जो कि लक्ष्य का 85 प्रतिशत है। दरअसल कोरोना काल के बाद सड़क किनारे अस्थाई दुकान लगाकर अपनी आजीविका चलाने वाले रेहड़ी-पटरी वालों को उनका काम दोबारा शुरू करने के लिए 1 जून 2020 से पीएम स्वनिधि योजना शुरू की गई थी। इस योजना का उद्देश्य शहरी रेहडी-पटरी विक्रेताओं को बिना गारंटी के कार्यशील राशि उपलब्ध कराना है, ताकि ज्यादा से ज्यादा स्ट्रीट वेंडर्स आसानी से अपना व्यवसाय शुरू कर सके, इसके लिए ऋण की प्रक्रिया बेहद आसान रखी गई है और इस योजना के तहत ऋण लेने के लिए बहुत ज्यादा दस्तावेजों या गारंटी की जरुरत नहीं पड़ती है। कोरोना काल के बाद आर्थिक तंगी से जूझ रहे स्ट्रीट वेंडर्स के लिए यह योजना सौगात भी साबित हुई। इस योजना में स्ट्रीट वेंडरों को आसानी से राशि मिल गई और इसके चलते वे अपना काम-धंधा दोबारा शुरू कर सके।

उत्कृष्ट स्कूल के उच्च माध्यमिक शिक्षक संदीप परसाई ने की अपने सूने घर में आत्महत्या !

सुसाइड नोट में सामने आई शासकीय कार्य के चौतरफा दबाव की बात

गंज थाना पुलिस मामले की जांच पड़ताल में जुटी

बैतूल। शहर के कोठीबाजार क्षेत्र में बस स्टैंड के पास स्थित उत्कृष्ट स्कूल में लंबे समय से अंग्रेजी विषय के शिक्षक के पद पर पदस्थ मिलनसार एवं सरल स्वभाव के धनी 51 वर्षीय संदीप परसाई ने बुधवार की सुबह को अपने विकासनगर कालापाठा स्थित मकान में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। इस दौरान उनके घर पर कोई नहीं था। सूचना मिलने पर गंज थाना पुलिस जांच करने में जुट गई है।

सबसे पहले भतीजी ने चाचा को फंदे पर लटका देखा, तो फिर घटना आई सामने – शहर के कालापाठा क्षेत्र में उच्च माध्यमिक शिक्षक संदीप परसाई अपने बड़े भाई के साथ मकान की ऊपरी मंजिल में रहते थे। बुधवार की दोपहर करीब 12 बजे उनकी भतीजी घर के ऊपरी मंजिल में ऊपर गई तो उसे चाचा फांसी के फंदे पर लटके हुए दिखाई दिए। इस पर उसने नीचे के फ्लोर में रह रहे परिजनों को इसकी जानकारी दी।

पत्नी और बच्चे थे बाहर और लगा लिया मौत को गले-

इस घटना के समय उनका ग्यारहवीं क्लास में अध्ययनरत होनहार बेटा भव्य आर.डी. पब्लिक स्कूल में कोचिंग अटेंड करने गया हुआ था । वहीं उनकी पत्नी दो दिन पहले अपनी छोटी बेटी जो छटवीं कक्षा में अध्ययनरत है, को लेकर शादी अटेंड करने के लिए अपने मायके उज्जैन गई हुई थी । घटना के समय घर में कोई नहीं था । तभी संदीप ने आत्महत्या करने जैसा कदम उठा लिया । उनका शव घर की छत में पंखा लगाने के हुक से बंधे कपड़े से लटका हुआ था ।

पुलिस को मिला सुसाइड नोट, लिखा- काम का है चौतरफा दबाव, अवसाद में हूं

बैतूलगंज थाना प्रभारी नीरज पाल ने बताया कि मृतक संदीप के पास से सुसाइड नोट मिला है । जिसमें उन्होंने लिखा है कि पिछले डेढ-दो माह से भारी अवसाद में हूं, शासकीय कार्य के चौतरफा दबाव से बहुत परेशान चल रहा हूं । उल्लेखनीय है कि वर्तमान में जनगणना का काम चरणबद्ध तरीके शुरू हो चुका है । यह कार्य शिक्षकों को संयुक्त रूप से करना है ।

संदीप के इस कदम से सभी हतप्रभ...

मिलनसार एवं सहयोगी स्वभाव के शिक्षक संदीप परसाई के परिवार के लगभग सभी सदस्य सरकारी पदों पर रह चुके हैं और कुछ वर्तमान में सरकारी कर्मचारी है। मृतक श्री परसाई अपने तीन भाइयों में सबसे छोटा थे । उनके बड़े भाई लोक शिक्षण संचालनालय भोपाल से उपसंचालक के पद से सेवानिवृत्त हुए हैं, वहीं दूसरा बड़ा भाई वर्तमान में वन विभाग मुलताई में कार्यरत है, उनके स्वर्गवासी पिता भी वन विभाग में कार्यरत रहे हैं। श्री परसाई काफी मिलनसार, सरल और सहयोगी स्वभाव के थे। उनके इस कदम से सभी लोग हतप्रभ हैं।

गुरुवार को होगा पीएम और अंत्येष्टि...

शिक्षक संदीप परसाई के आत्महत्या करने की सूचना मिलने से पूरे बैतूल के शिक्षा जगत में शोक की लहर फैल गई। उनके घर पर लोगों के जुटने का सिलसिला शुरू हो गया। देर शाम तक परिवार के सदस्यों के बाहर से नहीं पहुंचने के कारण फिलहाल उनका जिला अस्पताल में पीएम नहीं हो सका है। अब उनका पीएम गुरुवार की सुबह होगा। उनके परिजनों से मिली जानकारी के अनुसार उनकी अंत्येष्टि गुरुवार 30 अप्रैल को प्रातः 11 बजे कोठीबाजार मोक्षधाम में की जाएगी।

मुलताई मंडी की बड़ी कार्रवाई, अवैध परिवहन पर 16 चक्का ट्रक जब्त

- *354 क्विंटल सोयाबीन के साथ पकड़ा गया ट्रक, 5 गुना मंडी टैक्स के रूप में 1.19 लाख से अधिक जुर्माना वसूला*

बैतूल। कृषि उपज मंडी समिति मुलताई ने अवैध कृषि उपज परिवहन के खिलाफ सख्त कार्रवाई करते हुए एक 16 चक्का ट्रक को जब्त कर लिया है। मंडी अमले ने इस कार्रवाई में मंडी टैक्स का पांच गुना यानी 1,19,970 की जुर्माना राशि वसूल की है। जानकारी के अनुसार, ट्रक क्रमांक एमपी 12 जेडएफ 9440 को नागपुर रोड स्थित चिचंडा के पास मंडी टीम द्वारा नियमित चेकिंग के दौरान रोका गया। जांच में ट्रक में करीब 354 क्विंटल सोयाबीन भरा हुआ पाया गया। मंडी कर्मचारियों ने जांच के दौरान चालक से मंडी टैक्स से संबंधित आवश्यक दस्तावेज प्रस्तुत करने को कहा, लेकिन चालक कोई भी वैध दस्तावेज या टैक्स जमा करने का प्रमाण नहीं दे सका। दस्तावेजों के अभाव में मंडी अमले ने तत्काल कार्रवाई करते हुए ट्रक को जब्त कर लिया। प्राथमिक जांच में सामने आया है कि उक्त ट्रक मध्यप्रदेश के खंडवा से सोयाबीन भरकर महाराष्ट्र के रास्ते छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव ले जाया जा रहा था। आशंका जताई जा रही है कि मंडी टैक्स से बचने के उद्देश्य से परिवहनकर्ता ने वैकल्पिक मार्ग अपनाया और बिना वैध दस्तावेजों के माल परिवहन किया जा रहा था, जिससे शासन को राजस्व हानि हो सकती थी।

जांच के बाद नियमानुसार वसूली – कृषि उपज मंडी सचिव शीला खातरकार ने बताया कि मंडी अमला लगातार टैक्स चोरी रोकने के लिए सक्रिय है। इसी अभियान के तहत इस ट्रक को जब्त कर विस्तृत जांच की गई और नियमानुसार ट्रक मालिक एवं परिवहनकर्ता पर कार्रवाई करते हुए पांच गुना मंडी टैक्स वसूला गया। जुर्माना राशि जमा कराने के बाद विधिवत रसीद भी जारी की गई।

टैक्स चोरी पर सख्ती जारी रहेगी – मंडी प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि अवैध परिवहन और टैक्स चोरी के खिलाफ आगे भी इसी तरह सख्त कार्रवाई जारी रहेगी। किसानों और व्यापारियों से अपील की गई है कि वे नियमों का पालन करते हुए ही कृषि उपज का परिवहन करें, ताकि किसी भी प्रकार की कार्रवाई से बचा जा सके।

वन अधिकार अधिनियम के लंबित प्रकरणों का करें त्वरित निराकरण : कलेक्टर

कलेक्टर ने जनजातीय कार्य विभाग की समीक्षा कर योजनाओं की प्रगति की ली जानकारी

बैतूल। कलेक्टर डॉ. सौरभ संजय सोनवणे ने कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में जनजातीय कार्य विभाग की विस्तृत समीक्षा बैठक आयोजित कर विभागीय योजनाओं की प्रगति की जानकारी ली। इस दौरान उन्होंने पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति एवं आवास सहायता योजना के तहत एमपी टॉस पोर्टल पर शत-प्रतिशत वेरिफिकेशन एवं स्वीकृति सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि कोई भी पात्र छात्र योजना के लाभ से वंचित न रहे, इसके लिए शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों के प्राचार्य जिम्मेदारी के साथ कार्य करें। कलेक्टर डॉ सोनवणे ने छात्रावास एवं आश्रमों की व्यवस्थाओं पर विशेष ध्यान देने के निर्देश देते हुए कहा कि अधीक्षक नियमित रूप से उपस्थित रहें। छात्रावासों में साफ-सफाई, भोजन मेनू एवं भोजन की गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखा जाए। साथ ही विद्यार्थियों के स्वास्थ्य परीक्षण की समीक्षा के लिए सभी छात्रों की आभा आईडी तैयार करने के निर्देश भी दिए गए। इसके अलावा अंतरजातीय विवाह प्रोत्साहन योजना के ऑनलाइन आवेदन एमपी टॉस पोर्टल पर किए जाने के लिए व्यापक प्रचार-प्रसार करने को कहा गया। वन अधिकार अधिनियम के अंतर्गत लंबित प्रकरणों की समीक्षा करते हुए कलेक्टर ने भैंसदेही एवं भीमपुर जनपद के मामलों के त्वरित निराकरण के लिए संबंधित अनुविभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया। साथ ही इन प्रकरणों को आगामी टीएल बैठक में शामिल करने के निर्देश दिए गए।एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालयों की समीक्षा के लिए आगामी माह में अलग से बैठक आयोजित करने के निर्देश भी दिए गए। विभागीय निर्माण कार्यों के निरीक्षण के दौरान उपयंत्रियों को स्थल पर उपस्थित रहकर जियो-टैग फोटो प्रस्तुत करने के निर्देश दिए गए। बैठक में बोर्ड परीक्षा परिणामों पर भी चर्चा की गई। कलेक्टर ने 40 प्रतिशत से कम तथा 100 प्रतिशत परिणाम वाले विद्यालयों के प्राचार्यों से उनके प्रयासों की जानकारी प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। बैठक में सहायक आयुक्त जनजातीय कार्य विवेक पांडे सहित अन्य शिक्षा और जनजातीय कार्य विभाग के अधिकारी मौजूद रहें।

कार्यालय नगर पालिका परिषद बैतूल (म.प्र.)

क्रमांक/स्वा.शा./ई./1643 बैतूल दिनांक 24/04/2026

//ई-टेन्डर आमंत्रण सूचना//
(द्वितीय निविदा आमंत्रण सूचना)

निम्नलिखित कार्य हेतु केन्द्रीकृत प्रणाली में पंजीकृत ठेकेदारों से ऑन लाईन निविदायें आमंत्रित की जाती है। निविदा का विस्तृत विवरण वेबसाइट https://mptenders.gov.in/nicgep/app पर देखा जा सकता है।

क्र.	ऑन लाईन निविदा क्र.	कार्य / सामग्री का विवरण	कार्य की समयावधि एवं लागत	निविदा प्रपत्र का मूल्य एवं EMD	निविदा की अंतिम तिथि
1	2026_UAD_502754_1	HYDRA CRANE SERVICE ON RENT INCLUDING DIESAL AND DRIVER OPERATOR COMPLETE IN WORKING CONDITION IN MUNICIPAL AREA AT MUNICIPAL OFFICE BETUL	1- 2026-27 2- 1000000/-	1- 2000/- 2- 10000/-	11/05/2026

नोट :- निविदा से संबंधित किसी भी प्रकार के संशोधन का प्रकाशन ऑनलाईन https://mptenders.gov.in/nicgep/app की वेबसाईड पर ही किया जावेगा, पृथक से समाचार पत्र में प्रकाशन नही किया जावेगा।

(नवनीत पाण्डेय), सीएमओ, नगरपालिका परिषद बैतूल

कलेक्टर ने लंबित आवेदनों की गहन समीक्षा की

समय-सीमा बैठक में पेयजल व्यवस्थाओं, लंबित प्रकरणों की निराकरण स्थिति सहित विभागीय कार्यों का जायजा लिया

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने आज समय-सीमा बैठक में लंबित आवेदनों की गहन समीक्षा की। उन्होंने विदिशा जिले के विभिन्न विभागों द्वारा क्रियान्वित कार्यों की जानकारी प्राप्त कर लंबित प्रकरणों का समयावधि में निराकरण करने के निर्देश दिए एवं शासकीय योजनाओं के क्रियान्वयन सहित जिले में संचालित शासन के महत्वपूर्ण अभियानों की क्रियान्वयन स्थिति का जायजा लिया है। कलेक्टर श्री गुप्ता ने टीएल बैठक में विदिशा जिले के ग्रामीण व नगरी निकाय क्षेत्रों में पेयजल आपूर्ति बाधित ना हो पर विशेष ध्यान देने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग तथा नगरीय निकायों के अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि ग्रामीण क्षेत्रों और नगरीय निकाय के वार्डों में किसी भी प्रकार से पानी के लिए नागरिकों को परेशान ना होना पड़े इसके लिए विशेष कार्य करें। इस दौरान जल जीवन मिशन अंतर्गत नल जल योजनाओं के हस्तांतरण की स्थिति का भी जायजा लिया गया साथ ही जिले में हैंडपंपों की चालू, बंद स्थिति का जायजा लेते हुए खराब हैण्डपंपों के सुधार कार्य हेतु निर्देशित किया गया है। उन्होंने निर्देश दिए हैं कि विदिशा जिले के जिन अनुसूचित जाति, जनजाति बाहुल्य क्षेत्रों में हैंड पंप की आवश्यकता है उन क्षेत्रों में आवश्यकताओं को ध्यानगत रखते हुए संबंधित क्षेत्र के एसडीएम अपर कलेक्टर कार्यालय एवं ईपीडब्ल्यूडी को हैंडपंप के प्रस्ताव भेजने की कार्यवाही करें। कलेक्टर श्री गुप्ता ने बैठक में पीएम राहत योजना अंतर्गत लंबित प्रकरणों की समीक्षा की। साथ ही सीमांकन और बंटवारा के लंबित प्रकरणों की गहन समीक्षा दौरान उन्होंने संबंधित क्षेत्र के तहसीलदारों को निर्देशित किया है कि सीमांकन के प्रकरणों में आवेदक को यहां-वहां भटकना न पड़े उनकी समस्याओं का निराकरण समय-सीमा में करें और सीमांकन की कॉपी दोनों पक्षों को उपलब्ध कराएं। उन्होंने महिला एवं बाल विकास विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि जिले में कोई भी बच्चा कुपोषित ना रहे। कुपोषित बच्चे चिन्हित हुए हैं तो उन्हें एनआरसी वार्ड में भर्ती कराया जाकर उनकी उचित देखभाल कर उन्हें कुपोषण से बाहर निकालने के लिए कार्य किया जाए। बैठक में कुपोषित बच्चों की जानकारी प्रदर्शित की गई जिस पर कलेक्टर ने विभाग के अधिकारियों को इस क्षेत्र में और अधिक मेहनत करने के निर्देश दिए हैं। इसके अलावा उन्होंने जिले के जिन क्षेत्रों में आंगनबाड़ी केंद्र समय पर नहीं खुल रहीं या बंद रहती हैं उन पर सख्त कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं।

जल गंगा संवर्धन अभियान

कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने बैठक में प्रदेश व्यापी जल गंगा संवर्धन अभियान तहत जिले में क्रियान्वित कार्यों की स्थिति का जायजा लिया। उन्होंने कहा कि यह एक महत्वपूर्ण अभियान है जिसके माध्यम से हम हमारे जल स्रोतों प्राचीन कुंओ, बावड़ियों को संवारने का कार्य कर रहे हैं। अभियान तहत क्रियान्वित कार्यों को प्राथमिकता देते हुए हमें निर्धारित लक्ष्यों की शत प्रतिशत पूर्ति करना है। इस दौरान बैठक में प्रेजेंटेशन के माध्यम से बताया गया कि जिले में जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत 2031 खेत तालाबों में से 1247 कार्य पूर्ण हुए हैं, जबकि शेष कार्य प्रगतिरत हैं। इसी प्रकार 1729 डग बेल रिचार्ज में से 1472 कार्य पूर्ण हुए हैं, जबकि शेष कार्य प्रगतिरत हैं के अलावा अमृत सरोवर, अन्य जल संरक्षण के कार्य, जल संचय में जन भागीदारी पोर्टल, सार्वजनिक प्याऊ, बावड़ी व नदियों के घाटों की साफ-सफाई सहित इत्यादि कार्यों की समीक्षा बैठक में की गई। इस दौरान बैठक में अपर कलेक्टर श्री अनिल कुमार डामोर, संयुक्त कलेक्टर द्वय श्रीमती दीपाश्री गुप्ता, सुश्री निकिता तिवारी, विदिशा एसडीएम श्री क्षितिज शर्मा सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद रहे, जबकि खंड स्तरीय अधिकारी वीसी के माध्यम से जुड़े रहे।

विदिशा में आगजनी रोकथाम को लेकर नगर पालिका की पहल

टिम्बर व फर्नीचर व्यापारियों को दिए सख्त सुरक्षा निर्देश

विदिशा (निप्र)। विदिशा नगर में लगातार बढ़ती आगजनी की घटनाओं को गंभीरता से लेते हुए नगर पालिका द्वारा फर्नीचर एवं टिम्बर व्यापारियों के साथ एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। इस बैठक का मुख्य उद्देश्य व्यापारियों को अग्नि सुरक्षा के प्रति जागरूक करना और संभावित हादसों को रोकने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश देना रहा।

बैठक के दौरान अधिकारियों ने व्यापारियों को स्पष्ट रूप से समझाइश दी कि वे अपनी दुकानों और गोदामों में ज्वलनशील पदार्थों का अत्यधिक भंडारण न करें। साथ ही प्रत्येक प्रतिष्ठान में अग्निशमन के आवश्यक उपकरण अनिवार्य रूप से रखने के निर्देश दिए गए। अधिकारियों ने विशेष रूप से 'फायर बॉल' जैसे आधुनिक और त्वरित अग्निशमन उपकरण रखने की सलाह दी, ताकि आपात स्थिति में तुरंत आग पर नियंत्रण पाया जा सके और बड़े नुकसान से बचा जा सके। इसके अतिरिक्त विद्युत सुरक्षा को लेकर भी गंभीरता बरतने के निर्देश दिए गए।

व्यापारियों से कहा गया कि वे अपनी दुकानों में वायरिंग, स्विच बोर्ड और अन्य इलेक्ट्रिकल उपकरणों की नियमित जांच कराएं, जिससे शॉर्ट सर्किट जैसी घटनाओं से बचाव हो सके। बैठक में नगर पालिका सीएमओ दुर्गेश सिंह, डिस्ट्रिक्ट कमांडेंट मयंक जैन एवं इलेक्ट्रिकल इंजीनियर मौसम जैन सहित अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे। सभी अधिकारियों ने एक स्वर में कहा कि आगजनी की घटनाओं पर नियंत्रण के लिए प्रशासन और व्यापारियों के बीच सामूहिक सहयोग अत्यंत आवश्यक है। अंत में नगर पालिका द्वारा सभी व्यापारियों से अपील की गई कि वे दिए गए निर्देशों का पालन करें और नगर में सुरक्षित एवं संरक्षित वातावरण बनाए रखने में सक्रिय भूमिका निभाएं।

संक्षिप्त समाचार

रायसेन में लगभग 300 होमगार्ड्स द्वारा की गई स्वगणना

रायसेन (निप्र)। रायसेन में नगर पालिका परिषद द्वारा डिस्ट्रिक्ट कमांडेंट कार्यालय में जनगणना-2027 जागरूकता एवं स्वगणना शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें एसडीएम श्री मनीष शर्मा, डिस्ट्रिक्ट कमांडेंट श्री उमेश कुमार तिवारी के निर्देशन में लगभग 300 होमगार्ड कर्मचारियों द्वारा ऑनलाईन स्वगणना फार्म भरे गए। एसडीएम श्री शर्मा ने बताया कि सेल्फ इम्यूनिशन एप के माध्यम से नागरिक स्वयं के परिवार की जनगणना एवं परिवार की जानकारी स्वयं दर्ज कर सकते हैं। यह भारत शासन का महत्वपूर्ण अभियान है, जिसमें सभी नागरिकों, को अपना सहयोग प्रदान करना है। उन्होंने कहा कि नागरिक मोबाईल के माध्यम से स्वगणना करने के साथ ही परिचितों को भी इसके लिए जागरूक करें।

जिले में 02 मई को होगा लाड़ली लक्ष्मी उत्सव का आयोजन

रायसेन (निप्र)। मुख्यमंत्री लाड़ली लक्ष्मी योजना के तहत प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी 02 मई 2026 को लाड़ली लक्ष्मी उत्सव का आयोजन किया जा रहा है। महिला बाल विकास विभाग के जिला कार्यक्रम अधिकारी श्री बृजेश जैन ने बताया कि इस आयोजन का उद्देश्य बालिका सशक्तिकरण और मुख्यमंत्री लाड़ली लक्ष्मी योजना के लक्ष्यों को प्राप्त करना है। यह आयोजन उत्सव के रूप में जिला, नगरीय निकायों एवं ग्राम पंचायत स्तर पर आयोजित होंगे। जिसमें लाड़ली बालिका एवं उनके अभिभावक, लाड़ली क्लब की अध्यक्ष एवं सदस्य लाड़ली बालिकाओं के साथ स्थानीय जनप्रतिनिधिगण तथा गणमान्य नागरिक भी सम्मिलित होंगे। जिले की महिला बाल विकास विभाग की सभी परियोजना अधिकारी को 02 मई को लाड़ली लक्ष्मी उत्सव का प्रभावी और गरिमामय आयोजन किए जाने के संबंध में दिशा-निर्देश दिए गए हैं।

रायसेन में दो सत्रों में 06 परीक्षा केन्द्रों पर संपन्न हुई राज्य सेवा एवं राज्य वन सेवा प्रारंभिक परीक्षा

रायसेन (निप्र)। मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग इन्दौर द्वारा आयोजित राज्य सेवा एवं वन सेवा प्रारंभिक परीक्षा-2026 जिला मुख्यालय रायसेन पर निर्धारित 6 परीक्षा केंद्रों पर दो सत्रों में संपन्न हुई। कलेक्टर श्री अरुण कुमार विश्वकर्मा तथा पुलिस पुलिस अधीक्षक श्री आशुतोष गुप्ता द्वारा परीक्षा केंद्रों का निरीक्षण किया गया। इस दौरान रायसेन एसडीएम श्री मनीष शर्मा भी साथ रहे। राज्य सेवा एवं राज्य वन सेवा प्रारंभिक परीक्षा की प्रथम पाली में 1309 परीक्षार्थी उपस्थित रहे तथा 377 अनुपस्थित रहे। द्वितीय पाली में 1296 परीक्षार्थी उपस्थित रहे तथा 390 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे।

स्वगणना अभियान का निरीक्षण किया गया एवं नागरिकों को ऑनलाइन प्रक्रिया समझाई

रायसेन (निप्र)। कलेक्टर श्री अरुण कुमार विश्वकर्मा के मार्गदर्शन में सभी अनुभाग में अनुभागीय अधिकारियों द्वारा स्वगणना कार्य का निरीक्षण किया गया। चौपाल के माध्यम से उन्होंने नागरिकों से सीधा संवाद कर नागरिकों से अपील की है कि वे स्व-गणना में बढ़-चढ़कर भाग लें और अपने परिवार की पूरी जानकारी समय पर ऑनलाइन दर्ज करें। साथ ही उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि चौपाल के माध्यम से जागरूकता अभियान को और तेज किया जाए, ताकि हर व्यक्ति तक इसकी जानकारी पहुंच सके और जनगणना कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण हो सके। जनगणना-2027 के प्रथम चरण के अंतर्गत मकान सूचीकरण एवं मकानों की गणना का कार्य एक मई 2026 से 30 मई 2026 तक किया जाएगा। इसके पूर्व 16 अप्रैल 2026 से 30 अप्रैल 2026 तक स्व-गणना हेतु पोर्टल पर विशेष सुविधा उपलब्ध कराई गई है। इस अवधि में नागरिक अपनी स्व-गणना समय रहते पूर्ण कर सकते हैं, जिससे आगामी प्रक्रिया और अधिक सुगम हो सके। इससे नागरिकों को घर, कार्यालय अथवा किसी भी स्थान से मोबाइल या कंप्यूटर के माध्यम से सुरक्षित रूप से जानकारी दर्ज करने की सुविधा मिलती है। यह न केवल समय की बचत करता है, बल्कि डेटा संग्रहण को अधिक सटीक एवं प्रभावी भी बनाता है।

कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने गैरतगंज और सिलवानी क्षेत्र में उपार्जन केन्द्रों का किया निरीक्षण

रायसेन (निप्र)। जिले में बनाए गए विभिन्न उपार्जन केन्द्रों पर मप्र शासन के निर्देशानुसार समर्थन मूल्य पर गेहूँ उपार्जन का कार्य किया जा रहा है। उपार्जन कार्य सुचारू रूप से सम्पन्न हो, इसके लिए कलेक्टर श्री अरूण कुमार विश्वकर्मा द्वारा स्वयं जिले में सतत् रूप से विभिन्न उपार्जन केन्द्रों का आकस्मिक निरीक्षण कर उपार्जन कार्य और केन्द्रों पर किसानों की सुविधा हेतु की गई व्यवस्थाओं का जायजा लिया जा रहा है। इसी क्रम में मंगलवार को कलेक्टर श्री विश्वकर्मा द्वारा गैरतगंज क्षेत्र में उपार्जन केन्द्र श्रीनाथ वेयरहाउस, सिलवानी तहसील में ग्राम पाठा में उपार्जन केन्द्र राज राजेश्वरी वेयरहाउस, जमुनिया में उपार्जन केंद्र पारसनाथ वेयरहाउस सहित विभिन्न उपार्जन केन्द्रों का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर श्री विश्वकर्मा द्वारा उपार्जन कार्य, उपज की गुणवत्ता, तुलाई कार्य सहित केन्द्र पर किसानों के लिए की गईं व्यवस्थाओं का अवलोकन किया गया। साथ ही उपस्थित अधिकारियों तथा केन्द्र प्रभारी से अभी तक उपार्जित उपज की मात्रा, बारदाने की उपलब्धता, किसानों को राशि भुगतान आदि की जानकारी लेते हुए निर्देश दिए कि शासन की उपार्जन नीति के अनुरूप उपार्जन कार्य किया जाए तथा किसानों को राशि भुगतान की कार्यवाही भी शीघ्रता से की जाए।

ग्रामीण में 1 मई से शुरू होगा मकान सूचीकरण, 13 सेक्टरों में बंटा कार्य

नर्मदापुरम (निप्र)। आगामी जनगणना 2027 के पहले चरण की तैयारियां जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में तेज हो गई हैं। 1 मई 2026 से मकान सूचीकरण का काम शुरू होगा, जिसके तहत सभी मकानों का डेटा मोबाइल ऐप के जरिए दर्ज किया जाएगा। स्थानीय निकायों ने मकानों पर नंबर अंकित करने का काम पहले ही पूरा कर लिया है।

इसी क्रम में नर्मदापुरम तहसील के सुपरवाइजर रामकुमार गौर ने अपने प्रभार क्षेत्र का दौरा कर रणनीति तय की। श्री गौर ने बताया कि नर्मदापुरम तहसील के ग्रामीण क्षेत्र को 13 सेक्टरों में बांटा गया है। यहां 13 सुपरवाइजर और 49 प्रगणकों की टीम काम करेगी। गौर को सेक्टर-02 की जिम्मेदारी दी गई है। इस सेक्टर में रंढाल, पर्दिह और बड़ोदिया कला ग्राम पंचायतें आती हैं। सेक्टर-02 में कुल 6 ब्लॉक बनाए गए हैं जिनमें लगभग 960 मकानों की गणना होगी। भ्रमण का मकसद जमीनी स्थिति समझकर काम को बेहतर तरीके से प्लान करना था। इस दौरान अर्जुन सिंह यादव पलासडोह, निकिता चौहान व शिवकिशोर चौरे बड़ोदिया कला, भेरू प्रसाद पालीवाल पर्दिह, सुमित तिवारी, ललित यादव और सचिव मयूर बामनकर रंढाल मौजूद रहे।

बैतूल शहर का कलेक्टर डॉ सोनवणे ने किया सघन भ्रमण

प्रमुख चौकों के सौंदर्यीकरण और चौड़ीकरण के प्रस्ताव तैयार करने के दिए निर्देश

बैतूल (निप्र)। कलेक्टर डॉ सौरभ संजय सोनवणे ने मंगलवार सुबह बैतूल नगर का सघन भ्रमण कर विभिन्न चौक-चौराहों एवं प्रगतिरत कार्यों का निरीक्षण करते हुए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर डॉ सोनवणे ने कॉलेज चौक, शिवाजी चौक, लल्ली चौक और न्यू बैतूल स्कूल चौक का जायजा लिया। उन्होंने कॉलेज चौक के चौड़ीकरण कार्य करने तथा यह सुनिश्चित करने को कहा कि स्कूल एवं कॉलेज के विद्यार्थियों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए निर्माण कार्य के दौरान यातायात नियमों का कड़ाई से पालन हो, ताकि किसी भी प्रकार की दुर्घटना की संभावना न रहे।

शहर के प्रमुख चौकों का बदलेगा स्वरूप

कलेक्टर डॉ सोनवणे ने शिवाजी चौक एवं लल्ली चौक के सौंदर्यीकरण के लिए बड़े शहरों की तर्ज पर प्रस्ताव तैयार करने के निर्देश नगरपालिका को दिए। साथ ही लल्ली चौक स्थित रोटरी को व्यवस्थित करने के निर्देश भी दिए। इसके बाद उन्होंने न्यू बैतूल स्कूल के पास प्रस्तावित गीता भवन के लिए चिन्हित स्थल का भी अवलोकन किया और वहां पार्किंग की व्यवस्थित प्लानिंग के निर्देश दिए। स्वच्छता सर्वेक्षण की तैयारियों के अंतर्गत उन्होंने ट्रेंचिंग ग्राउंड का निरीक्षण कर इसकी शीघ्र शिफ्टिंग एवं एक्शन प्लान तैयार करने के निर्देश मुख्य नगरपालिका अधिकारी को दिए।

जामठी में फायर स्टेशन और आईएसबीटी की तैयारी, कलेक्टर ने किया स्थल निरीक्षण

कलेक्टर डॉ सोनवणे ने ग्राम जामठी में प्रस्तावित फायर स्टेशन एवं आईएसबीटी स्थल का भी निरीक्षण किया और आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। साथ ही एचएमटी फैक्ट्री पहुंचकर आगामी कार्ययोजना के संबंध में उद्योग विभाग से विस्तृत जानकारी ली। निरीक्षण के दौरान एसडीएम डॉ अभिजीत सिंह, मुख्य नगरपालिका अधिकारी श्री नवनीत पांडे एवं उद्योग विभाग के श्री धीरज मंडलेकर सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

जनसुनवाई में आमजन की समस्याओं का हुआ निराकरण

रायसेन (निप्र)। कलेक्टर श्री अरूण कुमार विश्वकर्मा के निर्देशानुसार प्रति मंगलवार की भांति कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित जनसुनवाई में जिला पंचायत सीईओ श्री कमल सोलंकी तथा अपर कलेक्टर श्री मनोज उपाध्याय द्वारा आमजन की समस्याओं की सुनवाई कर उनका निराकरण किया गया। कुछ प्रकरणों में संबंधित अधिकारियों को शीघ्र आवश्यक कार्यवाही कर निराकरण हेतु निर्देशित किया गया। साथ ही अन्य तहसीलों से आए आवेदकों की समस्याओं के निराकरण हेतु वीसी के माध्यम से निर्देशित किया गया। कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में डिप्टी कलेक्टर तथा जिला अधिकारी उपस्थित रहे। अनुभागों से एसडीएम, जनपद सीईओ, सीएमओ सहित अन्य अधिकारी वीडियो कॉफ्रेंस के माध्यम से जनसुनवाई में उपस्थित रहे।

नरवाई न जलाएं, वैकल्पिक प्रबंधन अपनाएं : प्रगतिशील किसान बने प्रेरणास्रोत

सीहोर (निप्र)। नरवाई जलाने की परंपरा को समाप्त कर पर्यावरण संरक्षण एवं मृदा उर्वरता बढ़ाने की दिशा में प्रदेश के प्रगतिशील किसान अब प्रेरणादायी उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं। इसी क्रम में सीहोर जिले की जावर तहसील के ग्राम कुंडिया धांधा के प्रगतिशील किसान श्री भारत सिंह द्वारा नरवाई प्रबंधन के क्षेत्र में किया गया नवाचार अन्य किसानों के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो रहा है। उन्होंने अपनी लगभग 65 एकड़ कृषि भूमि में बिना नरवाई जलाए आधुनिक तकनीकों एवं कृषि यंत्रों के माध्यम से सफलतापूर्वक फसल अवशेष प्रबंधन कर यह साबित किया है कि कम लागत में भी अधिक क्षेत्र में प्रभावी ढंग से खेती की जा सकती है। किसान श्री भारत सिंह द्वारा अपनाई गई तकनीक में विशेष प्रकार के कृषि यंत्र का उपयोग किया जाता है, जिसके माध्यम से खेत में खड़ी नरवाई को जड़ से काटकर उसे मिट्टी में मिला दिया जाता है। इसके पश्चात कल्टीवेटर या अन्य यंत्रों से भूमि को तैयार किया जाता है, जिससे फसल अवशेष प्राकृतिक रूप से सड़कर खाद का कार्य करते हैं। इससे भूमि की उर्वरता में वृद्धि होती है तथा अगली फसल के लिए बेहतर उत्पादन की संभावना बढ़ जाती है। कलेक्टर श्री बालागुरू के. द्वारा भी इस नवाचार की सराहना करते हुए किसानों से अपील की गई है कि वे नरवाई जलाने जैसी हानिकारक प्रथा से बचें।

नरवाई जलाने से जहां वायु प्रदूषण बढ़ता है, वहीं मिट्टी के सूक्ष्म जीव नष्ट हो जाते हैं और भूमि की उर्वरता में कमी आती है। इसके विपरीत, वैज्ञानिक पद्धतियों से नरवाई प्रबंधन करने पर पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ किसानों को आर्थिक लाभ भी प्राप्त होता है। इस नवाचार के लिए तहसीलदार श्री ओमप्रकाश चोरमा द्वारा किसान श्री भारत सिंह को पुष्पगुच्छ, भेंट कर सम्मानित किया गया।

नर्मदापुरम केंद्रीय जेल में मानसिक स्वास्थ्य शिविर आयोजित

30 बंदियों की हुई स्क्रीनिंग

नर्मदापुरम (निप्र)। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन भोपाल एवं जेल मुख्यालय म.प्र. भोपाल के आदेश के अनुपालन में केंद्रीय जेल नर्मदापुरम के खण्ड-अ में एक दिवसीय मानसिक स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर जिला चिकित्सालय नर्मदापुरम के मन कक्ष द्वारा लगाया गया। प्रतिमाह आयोजित होने वाले इस शिविर के क्रम में मंगलवार को जिला चिकित्सालय मन कक्ष से क्लीनिकल साइकोलॉजिस्ट सुश्री नाजिया सिद्दीकी एवं नर्सिंग ऑफिसर श्री कांति यदुवंशी ने जेल में परिरूद्ध बंदियों का स्वास्थ्य परीक्षण किया। शिविर में 20 पुरुष बंदी और 10 महिला बंदी सहित कुल 30 बंदियों की मानसिक स्वास्थ्य स्क्रीनिंग की गई और उन्हें आवश्यक परामर्श दिया गया। इस अवसर पर जेल अधीक्षक श्री संतोष सोलंकी, उप अधीक्षक श्री प्रहलाद सिंह बरकड़े, अष्टकोण अधिकारी श्री हितेश बंडिया, मैट्रन श्रीमति इंदुराज साहू सहित अन्य जेल स्टाफ उपस्थित रहे।

पीएमएवाई-यू 2.0 के जरिए झुग्गीवासियों के पुनर्वास पर संसदीय समिति की बैठक में सांसद माया नारोलिया ने दी महत्वपूर्ण राय

नई दिल्ली: आवास और शहरी कार्य संबंधी स्थायी समिति की बैठक संपन्न, सभी के लिए आवास के विजन पर हुई गहन समीक्षा

नर्मदापुरम (निप्र)। नई दिल्ली शहरी गरीबों और झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले परिवारों के जीवन स्तर में गुणात्मक सुधार लाने के उद्देश्य से आज नई दिल्ली स्थित संसदीय शोध विस्तार (एनेक्सी) में एक महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन किया गया। कक्ष संख्या 515 में आयोजित 'आवासन और शहरी कार्य संबंधी स्थायी समिति' की इस उच्चस्तरीय बैठक में मध्यप्रदेश से राज्यसभा सांसद माया नारोलिया ने सक्रिय रूप से भाग लिया। बैठक की अध्यक्षता समिति के अध्यक्ष श्री मगुंटा श्रीनिवासुलु रेड्डी ने की। इस दौरान 'झुग्गी-झोपड़ी पुनर्विकास और पुनर्वास पहल' की प्रगति की विस्तृत समीक्षा की गई चर्चा का मुख्य केंद्र बिंदु प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'सभी के लिए आवास' के संकल्प को धरातल पर उतारना रहा। सांसद श्रीमती माया नारोलिया ने बैठक में अपने विचार साझा करते हुए पीएमएवाई-यू 2.0 (PMAY- 2.0) योजना के प्रभावी क्रियान्वयन पर बल दिया। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार की यह योजना शहरी निर्धनों के लिए न केवल छत सुनिश्चित करेगी, बल्कि उनके जीवन में सम्मान और सुरक्षा का नया संचार भी करेगी। बैठक में अधिकारियों के साथ योजना की बारीकियों और लाभार्थियों तक त्वरित लाभ पहुँचाने की कार्ययोजना पर गंभीर मंथन हुआ। सांसद श्रीमती नारोलिया ने मध्यप्रदेश के शहरी क्षेत्रों में चल रही आवास योजनाओं और झुग्गी पुनर्विकास की स्थिति पर भी चर्चा की, ताकि राज्य के पात्र परिवारों को इस नई पहल का अधिकतम लाभ मिल सके। बैठक में समिति के अन्य सदस्य और संबंधित मंत्रालयों के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित रहे. जिन्होंने शहरी बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए अपने सुझाव प्रस्तुत किए।

बिजली बिल से परेशान निकायों को राहत देने प्लान

220 मेगावाट का एमपी अर्बन कैप्टिव सोलर प्लांट लगाएंगे, 184 नगर निकायों को इससे जोड़ेंगे

भोपाल (नप्र)। प्रदेश में नगरीय निकायों को मिलने वाली भारी भरकम बिजली बिल से बचाव के लिए अब नगरीय विकास और आवास विभाग 220 मेगावाट का एमपी अर्बन कैप्टिव सोलर प्लांट लगाने की तैयारी में है। इसके लिए सभी दस संभागों के 184 नगर निगम, नगर पालिका और नगर परिषदों का चयन किया गया है। योजना में निकायों की हिस्सेदारी के लिए एक स्पेशल परपज वीकल बनाया जाएगा। जिसमें निकायों की हिस्सेदारी विद्युत नियामक आयोग द्वारा तय शर्तों के आधार पर घोषित की जाएगी।

नगरीय आवास और विकास विभाग द्वारा संबंधित नगर निगमों के आयुक्त और नगरपालिका, नगर परिषद के मुख्य कार्यपालन अधिकारियों को लिखे पत्र में कहा गया है कि प्रदेश में शहरवासियों को पानी, बिजली, जल मल निकासी, स्वच्छता और सड़क की सुविधा देने के लिए खपत होने वाली बिजली के बिल नगरीय निकायों पर भारी पड़ रहे हैं।

निकायों की आमदनी का 30 से 40 प्रतिशत फंड इन कामों में बिजली बिल में खर्च हो जाता है। आने वाले दिनों में इसमें और वृद्धि होना तय है। इसे देखते हुए निकायों की आर्थिक स्थिति बेहतर बनाने और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए सरकार प्रयास कर रही है। बिजली बिलों में कमी आने से आम जन को बेहतर सेवा मिल सकेगी।

अर्बन डेवलपमेंट कम्पनी लगाएगी सोलर प्लांट- निकायों को भेजे पत्र में कहा गया है कि केंद्र और राज्य सरकार सोलर और विंड एनर्जी के अधिकाधिक उपयोग के लिए निर्देश देते रहे हैं, ताकि बिल कम होने से निकाय आत्मनिर्भर बन सकें। इसी तारतम्य में सभी निकायों के वर्तमान और प्रस्तावित

योजनाओं के हाई टेंशन लाइन कनेक्शनों के स्वीकृत और प्रस्तावित लोड को देखते हुए 220 मेगावाट का एमपी अर्बन कैप्टिव सोलर प्लांट स्थापित करने का फैसला राज्य सरकार ने लिया है।

इस सोलर प्लांट का क्रियान्वयन राज्य शासन के उपक्रम एमपी अर्बन डेवलपमेंट कम्पनी द्वारा किया जाएगा। इस प्लांट में प्रोजेक्ट इक्विटी में उपयोगकर्ता की कम से कम 26 प्रतिशत भागीदारी रखने और सोलर एनर्जी प्लांट का स्वयं 51 प्रतिशत से अधिक हर साल उपयोग किया जाना अनिवार्य किया गया है।

1320 करोड़ है प्रस्तावित प्लांट की लागत- प्रस्तावित परियोजना की अनुमानित लागत 1320 करोड़ रुपए है। इसलिए परियोजना में सहभागी नगरीय निकायों की संयुक्त इक्विटी 119 करोड़ रुपए होती है जो कि नगरीय निकायों को दिए जाने वाले अनुदान राशि से उपलब्ध कराई जाएगी। निकाय के हिस्से की बाकी राशि के लिए सामूहिक म्युनिसिपल बांड बुलाया जाना भी प्रस्तावित है।

इसमें यह जानकारी भी दी गई है कि योजना में निकायों की हिस्सेदारी के लिए एक स्पेशल परपज वीकल बनाया जाएगा जिसमें निकायों की हिस्सेदारी विद्युत नियामक आयोग द्वारा तय शर्तों के आधार पर घोषित की जाएगी। इसके लिए अर्बन डेवलपमेंट कम्पनी को अधिकृत किया गया है।

इन संभागों के ये निकाय होंगे शामिल

भोपाल संभाग में जिन निकायों का चुनाव इसके लिए किया गया है उसमें नगर निगम भोपाल के अलावा बैरसिया, बुदनी, इछावर, आष्टा, बाड़ी, बरेली, बेगमगंज, ब्यावरा, बोदा, जीरापुर, खिलचीपुर, खुजनेर, कुरावर, गैरतगंज, लटेरी, गंजबासौदा, नरसिंहगढ़, ओबेदुल्लागंज, पचोर, रायसेन, राजगढ़, सारंगपुर, सीहोर, शमशाबाद, सिलवानी, सुठालिया, विदिशा नगरपालिका और नगर परिषद शामिल हैं।

चंबल संभाग में जिन निकायों को चुना गया है उनमें बामोर, गोहद, गोरमी, लहार, मेहगांव, मिहोना, विजयपुर शामिल हैं।

ग्वालियर संभाग के निकायों में ग्वालियर, आलमपुर, अशोकनगर, भांडेर, भितरवार, चांचौड़ा बीनागंज, चंदेरी, डबरा, दतिया, गुना, इंदरगढ़, कोलारस, नरवर, राघोगढ़, सेंवढ़ा, शिवपुरी शामिल हैं।

इंदौर संभाग के निकायों में इंदौर, अलीराजपुर, बड़वानी, अंजड़, बड़वाह, बेटमा, भीकनगांव, बुरहानपुर, छनेरा, डही, धामनोद धार, धार, धरमपुरी, झाबुआ, जोबट, खंडवा, खरगोन, खेतिया, कुक्षी, मनावर, मांडव, मंडलेश्वर, नेपानगर, मंडलेश्वर, ओंकारेश्वर, पलसूद, पीथमपुर, राजपुर बड़वानी, राणापुर, सांवेर, सेंधवा, शाहपुर बुरहानपुर नगरीय निकायों के नाम हैं।

जबलपुर संभाग के नगरीय निकायों में जबलपुर, बैहर, बालाघाट, बरघाट, बरही, छिंदवाड़ा, चौरई, डिंडोरी, डोंगर परासिया, गाडरवारा, गोटेगांव, कटनी, मंडला, नरसिंहपुर, पांढुर्णा, पाटन, साईखेड़ा, सौंसर, सिवनी, शाहपुर भिटोनी, सिहोरा, बारासिवनी निकाय शामिल हैं।

नर्मदापुरम संभाग के निकायों में आमला, बैतूल, हरदा, इटारसी, खिरकिया, मुलताई, नर्मदापुरम, सारणी, सोहागपुर के नाम हैं।

रीवा संभाग के नगरीय निकायों में चित्रकूट, मैहर, मऊगंज, नागौद, रीवा, सतना, सीधी, सिंगरौली, उचेहरा, सिरमौर के नाम हैं।

राजगढ़ में पटरियों तक पहुंची खेत में लगी आग

खतरा देख लोको पायलट ने 4 किलोमीटर उल्टी दौड़ा दी ट्रेन

राजगढ़ (नप्र)। पटरियों पर दौड़ती एक पैसेंजर ट्रेन और उसके सामने धधकती आग। मंजर ऐसा कि पलक झपकते ही ट्रेन आग के गोले में तब्दील हो सकती थी। लेकिन तभी लोको पायलट ने वह किया जिसकी कल्पना किसी ने नहीं की थी। उसने बिना वक्त गंवाए ट्रेन में रिवर्स गियर डाला और करीब 4 किलोमीटर तक गाड़ी को पीछे ले गया। यह फिल्मी सीन नहीं, बल्कि मध्य प्रदेश के राजगढ़ जिले का मामला है, जिसमें सैकड़ों यात्रियों की जान पर बन आई थी।

आसमान में छा गया काला धुआं- सोमवार दोपहर करीब 12:45 बजे, मक्सी-रुठियाई सेक्शन पर बीना-नागदा पैसेंजर अपनी रफ्तार में थी। तभी ब्यावरा-राजगढ़ और पचोर स्टेशनों के बीच अचानक खेतों में लगी अवैध पराली की आग ने विकराल रूप ले लिया। तेज हवाओं ने आग की लपटों को सीधे रेलवे ट्रैक की ओर धकेल दिया। लोको पायलट ने देखा कि सामने ट्रैक पूरी तरह लपटों की चपेट में आ चुका है।

लोको पायलट ने लगा दिया रिवर्स गियर- आमतौर पर ट्रेनें पटरी पर आगे बढ़ती हैं, लेकिन यहां मौत सामने खड़ी थी। लोको पायलट ने तुरंत समझदारी का परिचय देते हुए ट्रेन को पीछे की ओर चलाना शुरू किया। करीब 4 किलोमीटर तक ट्रेन उल्टी दिशा में दौड़ती रही, जब तक कि यात्री सुरक्षित दायरे से बाहर नहीं निकल गए। इस दौरान पीछे आ रही साबरमती एक्सप्रेस (गुना-अहमदाबाद) को भी तुरंत ब्यावरा स्टेशन पर रोक दिया गया। नवल अग्रवाल, पीआरओ, भोपाल रेल मंडल ने कहा कि लोको पायलट ने आग को ट्रैक की ओर बढ़ते देख ट्रेन को पीछे ले जाने का बिल्कुल सही फैसला लिया। उनकी इस सूझबूझ ने सैकड़ों यात्रियों को गंभीर खतरे से बाहर निकाला। उन्हें इस वीरता के लिए पुरस्कृत किया जाएगा।

4 बजे तक ठप रहा रेल यातायात- आग इतनी भीषण थी कि ब्यावरा, पचोर, नरसिंहगढ़ और खिलचीपुर से दमकल की गाड़ियां बुलानी पड़ीं। दोपहर 4 बजे तक रेल यातायात पूरी तरह ठप रहा। चिलचिलाती धूप और ऊपर से पास में धधकती आग की वजह से ट्रेन के डिब्बे भट्टी की तरह तप रहे थे। यात्री 3 घंटे तक पसीने से तरबतर होकर अंदर ही फंसे रहे, लेकिन सबकी जान सलामत थी।

बाइक सवार की मौत के बाद कार्रवाई पर सवाल

भोपाल के परवलिया सड़क पुलिस पर आरोप; फार्मट्रैक की जगह दूसरा ट्रैक्टर जब्त करने के आरोप

भोपाल (नप्र)। भोपाल की परवलिया सड़क पुलिस पर गंभीर आरोप लगे हैं। दरअसल, 27 मार्च को ट्रैक्टर की टक्कर से बाइक सवार की मौत हो गई थी। इसके बाद की गई कार्रवाई संदेह के घेरे में है। दुर्घटना जिस ट्रैक्टर से हुई थी, उसकी जगह दूसरे ट्रैक्टर को जब्त कर उसके मालिक को सौंप दिया गया। इसकी शिकायत एसपी ग्रामीण रामशरण प्रजापति तक पहुंची है। शिकायत की जांच कराई जा रही है। जानकारी के मुताबिक, 26 मार्च को सुबह साढ़े नौ बजे ग्राम रतनपुरा निवासी मनोज विश्वकर्मा की बाइक को फार्मट्रैक कंपनी के नीले रंग के ट्रैक्टर-ट्रॉली ने पीछे से टक्कर मार दी थी। ट्रैक्टर की टक्कर लगने से बाइक सवार मनोज सड़क पर गिर गया और ट्रैक्टर का पहिया उसके ऊपर से निकल गया। दुर्घटना के बाद फार्मट्रैक ट्रैक्टर भी सड़क से नीचे पलट गया। सूचना पर पहुंची पुलिस के साथ ही कई राहगीरों ने घटनास्थल का वीडियो बनाया, जिसमें नीले रंग का फार्मट्रैक कंपनी का ट्रैक्टर सड़क से नीचे पलटा हुआ और ट्रैक्टर में लगी ट्रॉली सड़क पर खड़ी साफ दिखाई दे रही है। यह भी दिख रहा है कि ट्रैक्टर पर कोई रजिस्ट्रेशन नंबर नहीं डला है। इस मामले में पुलिस ने मर्ग कायम किया था, जिसकी जांच प्रधान आरक्षक गिरीश राठौर ने की। एक दिन बाद, 27 मार्च की शाम को पुलिस थाना परवलिया सड़क में अपराध क्रमांक 60/26 पर एफआईआर दर्ज की गई।

प्रदेश में आज 15 जिलों में लू चलेगी, 44.8 डिग्री के साथ खजुराहो सबसे गर्म

गर्मी से बचने 20 कूलर के साथ निकाली बारात

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश का टूरिस्ट स्पॉट खजुराहो सबसे 'हॉट' बना हुआ है। तापमान 44.8 डिग्री सेल्सियस रहा। भोपाल में पारा 43.6 डिग्री पहुंच गया, जो 10 साल में दूसरा और सीजन का सबसे गर्म दिन रहा।

साइक्लोनिक सर्कुलेशन (चक्रवात) के एक्टिव होने से उत्तरी हिस्से यानी, ग्वालियर, चंबल-सागर संभाग में पारे में मामूली गिरावट दर्ज की गई है। ग्वालियर, श्योपुर, मुरैना, भिंड, दतिया, निवाड़ी, छतरपुर, पन्ना, सतना, रीवा, विदिशा, सागर, रायसेन, मंडला और छिंदवाड़ा में लू का अलर्ट है।

मौसम केंद्र भोपाल के अनुसार, ग्वालियर, मुरैना, भिंड, दतिया, निवाड़ी, टीकमगढ़, पन्ना, सतना, रीवा में दिन में लू चलेगी और शाम के बाद मौसम बदलेगा। यहां गरज-चमक के साथ बारिश हो सकती है। मऊगंज, सीधी, सिंगरौली, बालाघाट, सिवनी और बैतूल में भी बारिश होने की संभावना है।

देवास में कूलर लगाकर निकाली बारात- मंगलवार को देवास शहर में गर्मी से बारातियों को बचाने का अनोखा नजारा देखने को मिला। शहर के सुरेश पोहमवाला के सुपुत्र अंकित गुप्ता का बाना अनोखे अंदाज में निकाला गया। तेज धूप और गर्मी से बचाने के लिए छोटी ट्रालियों पर बारातियों के चारों ओर करीब 20 कूलर लगाए गए थे। इससे बारातियों को गर्मी से राहत मिली।

दिन में जरूरी होने पर ही निकले लोग- प्रदेश में लू के अलर्ट के बीच मौसम विभाग ने लोगों को चेताया है कि दोपहर 12 से 3 बजे के बीच जरूरी काम होने पर ही घरों से बाहर निकले। इसी समय लू का असर सबसे ज्यादा रहता है। भोपाल में गर्मी का असर बरकरार रहेगा।

खजुराहो, सीधी-श्योपुर में पारा 44 डिग्री पार

इससे पहले खजुराहो समेत कई शहरों में तापमान 44 डिग्री के पार ही रहा। टूरिस्ट स्पॉट खजुराहो में तापमान सबसे ज्यादा 44.8 डिग्री रहा। हालांकि, सोमवार की तुलना में 1.2 डिग्री की गिरावट हुई है। सीधी में 44.6 डिग्री, श्योपुर में पारा 44 डिग्री रहा। इसी तरह रायसेन में 43.8 डिग्री, उमरिया में 43.5 डिग्री, खंडवा में 43.4 डिग्री, मुरैना में 43.3 डिग्री, मंडला में 43.2 डिग्री, रतलाम-दमोह में 43 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। प्रदेश के 5 बड़े शहरों की बात करें तो भोपाल में 43.6 डिग्री, इंदौर में 42.2 डिग्री, ग्वालियर-उज्जैन में 41 डिग्री और जबलपुर में पारा 42.7 डिग्री सेल्सियस रहा।

अतिथि शिक्षकों का प्रदर्शन, सरकार पर वादाखिलाफी का आरोप

भोपाल (नप्र)। अतिथि शिक्षक संयुक्त मोर्चा के बैनर तले प्रदेशभर से आए हजारों अतिथि शिक्षकों ने बुधवार को भोपाल में सरकार की वादाखिलाफी के विरोध में प्रदर्शन किया। आंदोलन के दौरान शिक्षकों ने एकजुट होकर अपनी लंबित मांगों को पूरा करने की मांग उठाई और चेतावनी दी कि जल्द समाधान नहीं हुआ तो आंदोलन को और तेज किया जाएगा। प्रदेश अध्यक्ष सुनील सिंह परिहार ने कहा कि विधानसभा चुनाव से पहले राज्य सरकार ने अतिथि शिक्षकों के लिए गुरुजियों की तर्ज पर नीति लागू करने, सीधी भर्ती में बोनस अंक देने और वार्षिक अनुबंध के माध्यम से भविष्य सुरक्षित करने का वादा किया था, लेकिन अब तक इन पर कोई अमल नहीं हुआ है। इससे शिक्षकों में भारी आक्रोश है। उन्होंने यह भी कहा कि केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया और पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने भी अतिथि शिक्षकों को न्याय दिलाने का भरोसा दिया था, लेकिन अब तक कोई ठोस निर्णय नहीं लिया गया।

संगठन का सरकार पर वादाखिलाफी का आरोप- वरिष्ठ पदाधिकारी रामचंद्र नागर और प्रदेश अध्यक्ष के.सी. पवार ने आरोप लगाया कि सरकार वार्षिक अनुबंध के अपने वादे से पीछे हट रही है। इसके चलते 30 अप्रैल के बाद करीब सवा लाख अतिथि शिक्षकों के बेरोजगार होने का खतरा है। उन्होंने मांग की कि सीधी भर्ती, प्रमोशन और ट्रांसफर से प्रभावित अनुभवी अतिथि शिक्षकों को रिक्त पदों पर प्राथमिकता से समायोजित किया जाए।

भोपाल नगर निगम का महंगा शोर, 16 लाख फूंके

अब 900 नए स्पीकर खरीदने की तैयारी; जनता बोली- बस भी करो

भोपाल (नप्र)। राजधानी भोपाल को साफ-सुथरा बनाने का जिम्मा उठाने वाली नगर निगम अब शहर को शोर की राजधानी बनाने पर तुली है। अभी एक साल भी नहीं बीता जब निगम ने कचरा गाड़ियों पर लाउडस्पीकर लगाने के लिए 16 लाख रुपये बहा दिए थे, लेकिन अब स्वच्छता भारत मिशन के नाम पर करीब 900 नए ऑडियो सिस्टम खरीदने की तैयारी है। निगम का तर्क है कि इससे जागरूकता बढ़ेगी, लेकिन भोपाल की जनता पूछ रही है, क्या शोर मचाने से ही शहर साफ होगा?

खरीद की लंबी फेहरिस्त- निगम ने जो लिस्ट तैयार की है, वह किसी डीजे ऑपरेटर की दुकान जैसी लगती है।

इसमें शामिल हैं:

● 350 हूटर मशीनें ● 350 बड़े लाउडस्पीकर ● 50 छोटे स्पीकर ● साथ ही माइक्रोफोन, पेन ड्राइव और भारी-भरकम वायरिंग।

हूटर्स ने छीना सुकून

निगम के इस फैसले पर शहर के रिहायशी इलाकों में गुस्सा है। सिंधी कॉलोनी के निवासी राजेश कहते हैं, हमें दिन के बेवक्त बजने वाले इन हूटर्स की जरूरत नहीं है। शोर भी एक तरह का प्रदूषण है।

प्रधानमंत्री ने किया काशी विश्वनाथ मंदिर में विक्रमादित्य वैदिक घड़ी का अवलोकन

विक्रमादित्य वैदिक घड़ी को बताया आधुनिक तकनीक और प्राचीन ज्ञान का अद्भुत संगम

भोपाल (नप्र)। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वाराणसी में श्री काशी विश्वनाथ मंदिर परिसर में स्थापित विश्व की अनूठी 'विक्रमादित्य वैदिक घड़ी' का सूक्ष्म अवलोकन किया। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने घड़ी के डिजिटल फलक पर प्रदर्शित हो रहे भारतीय पंचांग, मुहूर्त और ग्रह-नक्षत्रों की गणना की सराहना करते हुए इसे आधुनिक तकनीक और प्राचीन ज्ञान का अद्भुत संगम बताया।

प्रधानमंत्री श्री मोदी द्वारा वर्ष 2024 में कालगणना के केन्द्र महाकाल की नगरी उज्जैन में विक्रमादित्य वैदिक घड़ी की स्थापना की गई थी। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की गौरवशाली अतीत को सहेजते हुए उसे वर्तमान में जीवंत बनाए रखने की मंशानुरूप वैदिक घड़ी को देश के सभी ज्योतिर्लिंगों में स्थापित किया जा रहा है। सर्वप्रथम बाबा विश्वनाथ को विक्रमादित्य वैदिक घड़ी अर्पित की गई थी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने वैशाख कृष्ण पक्ष प्रतिपदा (3 अप्रैल 2026) को यह घड़ी उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ को भेंट की थी, जिसे 4 अप्रैल को मंदिर प्रांगण में स्थापित किया गया था।

विक्रमादित्य वैदिक घड़ी को वैदिक काल गणना के समस्त घटकों को समवेत कर बनाया गया है। यह घड़ी सूर्योदय से परिचालित है, जिस स्थान पर जो सूर्योदय का समय होता है उस स्थान की काल गणना तदनुसार दिखाई देती है। स्टेंडर्ड टाइम भी उसी से जुड़ा रहता है। इस घड़ी में वैदिक समय, लोकेशन, भारतीय स्टेंडर्ड टाइम, भारतीय पंचांग, विक्रम सम्वत् मास, ग्रह स्थिति, भद्रा स्थिति, चंद्र स्थिति आदि की जानकारी समाहित है।

जानिए क्या है 'विक्रमादित्य वैदिक घड़ी'

भारत का समय- पृथ्वी का समय- संस्कृति विभाग अंतर्गत महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ, उज्जैन द्वारा भारतीय कालगणना पर आधारित विश्व की प्रथम विक्रमादित्य वैदिक घड़ी स्थापित की गई है। यह घड़ी भारत की प्राचीन कालगणना परंपरा को आधुनिक डिजिटल तकनीक के माध्यम से पुनर्स्थापित करने का एक अभिनव प्रयास है।प्रधानमंत्री श्री मोदी द्वारा विक्रमादित्य वैदिक घड़ी का लोकार्पण फाल्गुन 2080, कृष्ण पक्ष, पंचमी, वरुण मुहूर्त (13वाँ मुहूर्त) में किया गया। (दिनांक 29 फ़रवरी 2024)

वैदिक समय प्रणाली

यह घड़ी एक सूर्योदय से अगले सूर्योदय के मध्य समय की गणना करती है। दो सूर्योदयों के बीच एक पूर्ण दिवस को 30 मुहूर्तों में विभाजित किया जाता है।
सूर्योदय से सूर्यास्त - 15 मुहूर्त
सूर्यास्त से अगले सूर्योदय - 15 मुहूर्त
इस प्रकार एक पूर्ण वैदिक दिवस 30 मुहूर्त का होता है।

मुहूर्त, कला एवं काष्ठा

प्रत्येक मुहूर्त सामान्यतः लगभग 48 मिनट के बराबर होता है, किंतु इसकी अवधि घड़ी की भौगोलिक स्थिति, सूर्योदय-सूर्यास्त समय तथा सूर्य के कोण के अनुसार परिवर्तित होती है।

मुहूर्त

● मुहूर्त - 30 कला ● 1 कला - 96 सेकंड
● 1 कला - 30 काष्ठा ● 1 काष्ठा - 3.2 सेकंड
अर्थात् 30 मुहूर्तः 30 कला - 30 काष्ठा

समय निर्धारण का आधार

यह घड़ी सूर्य के कोण तथा पर्यवेक्षक की स्थान-विशिष्ट भौगोलिक स्थिति को सम्मिलित कर समय का निर्धारण करती है। सूर्योदय के समय के अनुसार ही स्थान का वैदिक समय प्रदर्शित किया जाता है।